हवा के घोड़े

सआदत हसन 'मन्टो'

नव साहित्य प्रकाशन नई दिल्ली-१

प्रथमावृत्ति

जुलाई, १९५६

दो रुपया चार आना

नव-साहित्य-प्रकाशन, ६२७६ मुलतानी ढांडा, नई दिल्ली-१ द्वारा
प्रकाशित तथा सूरज मल, ८३६३ सब्जी मण्डी, दिल्ली द्वारा कम्पोज होकर
श्री लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, सब्जी मण्डी, दिल्ली में मुद्रित ।

बहुत नहीं : थोड़ा

प्यार और जीवन !

जीवन और प्यार !

ये दोनों रथ के पहिये के समान मानवी ढांचे के साथ पुरातन से ही चले आ रहे हैं। दोनों की चाल-ढाल, क्रम सब एक सा है। किसकी महत्ता अधिक है ? यह कोई न समझ सका है और न समझ सकेगा। दुनिया के हर कोने में प्यार- प्यार की पुकार हो रही है; पर आज तक कोई भी इस प्यार का लक्षण निर्धारित नहीं कर सका। सुना जाता है, कि यौवन के सागर में प्यार ही पतवार बनकर जीवन की नौका को पार लगाता है, कैसे और क्यों ? यह एक पहेली है और पहेली ही बनी रहेगी। मानव-मानवी का पारस्परिक आकर्षण ही इस प्यार के महल की नींव रही है और सदा ही यह समाज के थपेड़ों का सामना करता हुआ खड़ा रहेगा। इन महलों में बैठकर कितने ही पोथे रचे

गये, कितनी ही कहानियाँ सुनाई गई ? सर्वसाधारण ने सुना, गाया और देखा !

उन्माद और प्यार !

इन दोनों के बिना जीवन निराशा से परिपूर्ण है। ऐसे युवक जो सदैव अपने यौवन काल में प्यार के भूखे ही रहे हैं; उन्हें अभागे के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है ?

यहाँ तक तो सभी का विश्वास है, कि प्यार होना चाहिए अवश्य ही; लेकिन प्रश्न उठता है, कि वह किससे होना चाहिए ? कैसा होना चाहिए ? किस प्रकार आरम्भ होना चाहिए ? और उसका स्वरूप क्या है ?

लेखक ने इस पुस्तक में इन्ही गूढ़ प्रश्नों की अप्रत्यक्ष रूप में विवेचना की है। उनका नायक सैय्यद ऐसा ही एक अभागा बीस वर्ष का नवयुवक है, जिसका हृदय अभी तक प्यार से सूना है; लेकिन पड़ौसी मित्रों की प्रेम कहानियाँ उससे छिपी न थी, उसका प्रत्येक साथी किसी न किसी लड़की के प्यार का शिकार हुआ था और आश्चर्य यह है, कि इनका प्यार हो गया—पहली नजर मिलते ही—एकदम; किन्तु सैय्यद इन सबको झूठा समझता है। उसके दृष्टिकोण में एक नज़र का प्यार घुने हुए चने के बराबर है, शायद उसमें स्थायित्व न हो; परन्तु चारा भी क्या है ? जब वे ऐसी कहानियाँ पढ़ेंगे, चित्र देखेंगे, तो क्यों न इन देखी हुई बातों को अपने जीवन में उतारेंगे; किन्तु सैय्यद ऐसी झूठी रूमानी दुनिया में नहीं जाना चाहता, वह तो अपने भावों की दुनिया के अनुसार ही लड़की से प्यार करेगा, भले ही असफल हो जाए। कितना वास्तविक चित्रण है और है तीखा व्यंग उन थोथे प्यारों पर, जो चलते-फिरते सड़कों पर हो जाते हैं, जो इस रूमानी दुनिया के फरेब में आकर जीवन को दूभर बना लेते।

हैं—केवल भावनाओं के अधीन हो कर, वह भी झूठी भावनाओं के !

जब सैय्यद अपने मोहल्ले की लड़कियों का विश्लेषण करता है, तो उसे स्पष्ट दीख पड़ता है, कि उसने इस समाज की बुराइयों को उभार-कर सामने रखा है। सग़रा और नग़मा प्रतिनिधि उन लड़कियों के; जिनके माता-पिता, धर्म के ठेकेदार उन्हें इंसान से प्यार करना नहीं सिखाते। पुष्पा से वह प्यार इसलिए नहीं कर सकता, कि उसके दो अपराध हो जायेंगे। पहला प्यार और वह भी एक मुसलमान का हिन्दू लड़की से। भले ही लड़कियों को ऐसे पुरुषों को सौंपनी पड़े, जहाँ उनका जीवन नरक हो; परन्तु जाति बन्धन अटूट ही रहेगा। जब तक यह जाति और धर्म के बन्धन हमारे समाज में रहेंगे, यह पवित्रता के प्रशंसक समाज में होने वाले कुकर्मो को रोक नहीं सकते और न ही सैय्यद फत्तो के प्यार जैसे उलझाव में फंसना चाहता है, प्यार के वह इस त्रिभुज का एक शीर्ष नहीं बनना चाहता, जो आज हरेक कहानी, फिल्म द्वारा प्रेरित सड़कों और मकानों में मिलता है।

न ही सैय्यद प्यार में असफल होकर अपने जनाजे को निकालना चाहता है। वह इस तेज रंग वाली तस्वीर को पसंद नहीं करता; जिनके रंग तो भड़कीले हैं; किन्तु हैं शीघ्र ही हल्के पड़ने वाले। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है, या तो उसका दिमाग खराब है या वह नज़ाम ही खराब है, जिसमें वह सांस ले रहा है। नित्य प्रति होने वाले व्यभिचारों को यदि रोकना है, तो समाज को बदलना होगा यदि आप चाहते हैं, कि चार सौदागर भाइयों की बारी-बारी से सेवा करने वाली अपनी जरूरत से मजबूर राजो इस समाज में न हो, तो इस समाज के ढांचे में आमूल चूल परिवर्तन करना होगा। आज का समाज ऐसी औरतों को अपनाने और प्यार करने की आज्ञा कैसे दे सकता है, इस समाज में तो उनके प्रति हमदर्दी का तात्पर्य कुछ और ही निकालते हैं।

इस समाज में जीवन बनावटी है, प्यार बनावटी है, आँसू दो प्रकार के होते हैं और अट्टहास भी दो प्रकार के। सैय्यद राजो से प्यार तो करता है; किन्तु डरता है समाज से। प्यार निम्न वर्ग की राजो से कैसे हो सकता है? लेकिन हृदय से उसका प्यार कैसे निकाले? वह किसी भी ढंग से उसे भूल जाना चाहता था? इसलिए घर छोड़ा। उसके प्यार के ही कारण वह अब्बास जैसे साथी की सलाह पर भी फरिया से शारीरिक प्यार नहीं करना चाहता। वह तो समझता है, प्यार हर इंसान के अन्दर नई उमंगें लेकर पैदा होता है।

'मुहब्बत यार की इंसाँ बना देती है इंसाँ को'

परन्तु यह समाज सैय्यद को 'दुखी जीवन' ही दे सकेगा। वह तो अब्बास के शब्दों में आजीवन धन जोड़ता रहेगा और प्यार से जीवन में प्रकाश नहीं होगा। उस प्रकाश को जीवन में लाने के लिए आवश्यकता है—समाज के ढांचे में परिवर्तन की! क्रान्ति की!!

प्रस्तुत पुस्तक प्यार के आचार्य स्वर्गीय श्री सआदत हसन मन्टो के एक मात्र उपन्यास 'बग़ैर अनवान के' का अनुवाद है; परन्तु इस अनुवाद को 'बिना शीर्षक' न रख, 'हवा के घोड़े' नाम दे दिया गया है, जो इस विचार से उपयुक्त है, कि पूरा उपन्यास सैय्यद की दिमाग़ी उलझन से ही भरा पड़ा है, अपने मस्तिष्क के विचारों को ही वह पाठकों के सामने रख रहा है। आशा है कि पाठकगण इसका स्वागत करेंगे।

१ जुलाई १९५६ शरण

१

***

वैसे तो सैय्यद पर ज़ुकाम का हमला होता ही रहता था। कई बार मोहम्मद गौरी की तरह दुम दबा कर भागने पर भी एक दिन *अनोखे ढंग से हमला किया, तो उसने सोचा—मुझे प्यार क्यों नहीं* होता ? सैय्यद के जितने भी मित्र थे, सब के सब प्यार कर चुके थे। इनमें से कुछ तो अभी तक फँसे हुए थे; परन्तु जिस ढंग से वह प्यार को अपने पास देखना चाहता था, ठीक उसके विपरीत, उसको दूर, बहुत दूर पाता; किन्तु उसको अभी तक किसी से प्यार नहीं हुआ था। जब भी सूनेपन में बैठकर सोचता कि वास्तव में उसका हृदय प्यार से खाली है, तो उसे लज्जा का अनुभव होता और हृदय विदीर्ण हो उठता।

जीवन के बीस वर्ष, जिनमें अधिकतर बचपन की धुँधली रेखाएँ छिपी हुई थीं। कभी-कभी उसके सामने मृतक शरीर के समान ऐंठ

आती। वह सोचता—मेरा जीवन ही निष्प्राण है। प्यार के बिना मनुष्य का जीवन कैसे सफल हो सकता है ?

सैय्यद को विश्वास था कि उसका हृदय सरस और इस योग्य है, कि प्यार उसमें निवास करे; परन्तु वह सुन्दर यौवन किस काम का, जिसमें रहने वाला कोई भी न हो; किन्तु उसका हृदय प्यार करने के योग्य है। इसी कारण उसको बहुत दुःख होता कि उसकी धड़कनें व्यर्थ में क्षीण होती जा रही हैं।

उसने लोगों से सुना था कि जीवन में प्यार का अवसर एक बार अवश्य आता है। उसे भी इस बात का कुछ-कुछ ज्ञान था कि मौत की तरह प्यार एक बार अवश्य आयेगा; परन्तु कब...?

काश ! उसकी जीवन-पत्री अपनी ही जेब मे होती और झट से वह उत्तर देख लेता; किन्तु उस पुस्तक में तो बीती हुई घटनाओं का ही वर्णन दिया जाता है। जब प्यार आएगा, तो स्वयं ही नये पन्ने जुड़ जायेंगे। वह नये पन्नों के लिए कितना बेचैन था।

संसार की प्रत्येक वस्तु को प्राप्त करना उसके लिए कोई कठिन कार्य नही था। जहाँ भी घूमना चाहे, वह घूम सकता, जब चाहे खा सकता, जब चाहे रेडियो पर गाने सुन सकता और शराब भी पी सकता था, जिसके पीने से उसके माथे पर कलंक लग सकता था। जब चाहे उस्तरे से गाल भी जख्मी कर सकता था; परन्तु फिर भी असफल रहा था, प्यार में।

एक बार उसने बाजार में एक युवती को देखा। उसकी छातियां देखकर उसे ऐसा अनुभव हुआ कि दो बड़े-बड़े सलजम उसके जम्फ़र में छुपे हुए हैं। सलजम उसे बहुत अच्छे लगते थे। शीतकाल में मकान की छत पर जब उसकी माँ लाल-लाल सलजम काटकर सुखाने के लिए हार पिरोया करती, तो वह कितने ही कच्चे सलजम खा जाया

करता था। उस युवती को देखकर उसकी जिह्वा पर वैसा ही अनुभव हुआ, जैसा आनन्द सलजम का गुद्दा चबाते समय होता है; परन्तु उसके हृदय में उससे प्रेम करने का विचार उत्पन्न न हो सका। वह उस की गति को ध्यान-पूर्वक देखता रहा, जिस में टेढ़ा-पन था। वैसा ही टेढ़ा-पन जैसा बरसात में खटिया के चारों पायों में कान पड़ जाने के कारण हो जाता है। वह उसके प्यार में स्वयं को न बाँध सका।

बार-बार निराश होने पर भी उसे आशा थी और वह इसी कारण अपनी गली के नुक्कड़ वाली दरियों की दुकान पर जा बैठता था। यह दुकान सैय्यद के दोस्त की थी। जो हाई-स्कूल में पढ़ने वाली एक लड़की से आंखें लड़ा रहा था। उस लड़की से उसका प्यार लुधियाने की एक दरी के कारण हुआ था। दरी का मूल्य जो पाँच रुपये था, उस लड़की के कथनानुसार उसकी सलवार के नेफे में से खुलकर गिर पड़ा था। लतीफ़ उसके घर के पास ही रहता था। इस लिये उस लड़की ने अपने चाचा की गालियों से छुटकारा पाने के लिये, उस से दरी उधार माँगी और ... बस दोनों का प्यार हो गया।

शाम के समय बाजार में आने-जाने वालों की भीड़ अधिक होती थी, क्योंकि दरबार-साहब जाने के लिए अकेला वही रास्ता था। इसलिये स्त्रियाँ भी अधिक संख्या में उसकी नजरों के सामने से चल-चित्र की भाँति निकल जातीं। लेकिन जाने क्यों, उसे ऐसा अनुभव होता कि जितने लोग बाजार में चलते-फिरते हैं, सब के सब खाली हैं? उसकी आँखें किसी पुरुष या स्त्री पर नहीं ठहरती थीं। लोगों की भीड़-भाड़ को देखकर वह अनुभव करता था कि यह यन्त्र हैं, केवल देख सकते हैं, कुछ कर नहीं सकते।

उसकी आँखें किस ओर थीं? यह न आँखों को याद है, न सैय्यद को। उसकी आँखें दूर, बहुत दूर सामने चूने और मिट्टी के बने हुए

मकानों को छेदते हुए निकल जातीं, न जाने कहाँ और स्वयं ही कह घूम-घाम कर उसके हृदय में समा जातीं। बिल्कुल उन बच्चों की तरह जो अपनी माँ की छाती पर औंधे मुँह लेटे नाक, कान और बालों से खेल-खाल कर अपने ही मुलायम हाथों को आश्चर्य-जनक दृष्टि से देखते-देखते नींद के कोमल कपोलों में धँस जाते हैं।

लतीफ़ की दुकान पर ग्राहक बहुत कम आते थे। इसी कारण वह उसकी उपस्थिति से लाभ उठाते हुए उससे कई प्रकार की बातें किया करता था; परन्तु वह सामने लटकी हुई दरी की ओर निहारता रहता, जिसमें रंग-बिरंगे अनगिनत धागों के उलझाव ने डिज़ाइन बना दिया। लतीफ़ के अधर काँपते रहते और वह सोचता रहता कि उसके दिमाग़ का नक़्शा दरी के डिज़ाइन से किस तरह मेल खाता है? कभी-कभी तो वह सोचा करता कि उसके अपने भाव ही बाहर निकल कर इस दरी पर कीड़े के समान रेंग रहे हैं।

इस दरी में और सैय्यद के दिमाग़ में कोई अन्तर न था और था भी तो केवल इतना ही अन्तर कि रंग-बिरंगे धागों के उलझाव ने, उसके सामने, दरी का रूप धारण कर लिया। किन्तु उसके विचारों की उलझनें ऐसा रूप न धारण कर सकीं, जिसको वह दरी के समान अपने सामने बिछा कर या लटका कर देख सकता।

लतीफ़ में अशिष्टता कूट-कूट कर भरी थी। किसी से बात-चीत करने की उसे तमीज़ नहीं थी। किसी वस्तु में उसको सौन्दर्य ढूंढने के लिये कहा जाता, तो वह निकम्मा और असभ्य ही साबित होता था। उसके हृदय में वह बात ही नहीं उत्पन्न हो सकी थी, जो एक कलाकार में होती है। इन सब दुर्गुणों के होते हुए भी एक लड़की उससे प्रेम करती थी, उसको पत्र लिखती थी। जिनको लतीफ़ इस ढंग से पढ़ता था, जैसे किसी तीसरे दर्जे के अखबार में युद्ध के समाचार पढ़ रहा

हो। इन पत्रों में वह कंपकंपाहट उसे दीख न पड़ती थी, जो प्रत्येक शब्द में होनी चाहिये। वह शब्दों के मर्म भावों से अनभिज्ञ था। यदि उसमें कहा जाता, कि लतीफ़ यह पढ़ो, लिखती है, "मेरी फूफी ने कल मुझ से कहा, क्या हुआ है तेरी भूख को ? तूने खाना-पीना क्यों छोड़ दिया है ? जब मैंने सुना तो पता चला कि सचमुच मैं आज कल बहुत कम खाती हूँ। देखो ! मेरे लिये कल शाहबुद्दीन की दुकान से खीर लेते आना...जितनी लाओगे सब की सब चट कर जाऊँगी, अगली पिछली कसर निकाल दूँगी...।" कुछ मालूम हुआ, इन पंक्तियों में क्या है ?...तुम शाहबुद्दीन की दुकान से खीर का एक बहुत बड़ा दोना लेकर जाओगे, किन्तु लोगों की निगाहों से बच-बचाकर ड्योढ़ी में जब तुम उसे यह तोफ़ा दोगे, तो इस विचार से प्रसन्न न होना कि वह सारी खीर खा जायेगी। वह कभी भी नहीं खा सकेगी ..पेट भर कर वह कुछ खा ही नहीं सकती। जब दिमाग़ में विचारों की कांग्रेस का जल्सा हो रहा हो, तो पेट स्वयं ही भर जाता है, लेकिन यह उलझन उसकी ताकत से बाहर थी। वह कैसे समझ सकता। वह तो समझने समझाने से कोसों दूर भागता था। जहाँ तक शाहबुद्दीन की दुकान से चार आने की खीर और एक आने की रबड़ी और खुशबू मोल लेने का प्रश्न था, वहाँ तक लतीफ़ बिल्कुल ठीक था। खीर के लिये क्यों लिखा ? और इसी भूख का प्रश्न किन विचारों के कारण उसकी प्रेमिका के दिमाग़ में उत्पन्न हुआ ? इससे लतीफ़ को कोई सरोकार न था। और सच पूछो तो वह इस योग्य ही नहीं था कि इन बारीकियों की जड़ तक पहुँच सके। वह मोटे दिमाग़ का मालिक था, जो कि लोहे के ज़ंग लगे हुए गज से दरियाँ अनोखे ढंग से मापता था और शायद इस प्रकार के भौंडे गज से अपने विचारों को मापता होगा।

परन्तु यह सच है कि एक लड़की उससे प्यार करती थी, जो हर चीज में उससे बहुत ऊँची दीख पड़ती थी। लतीफ़ और उसमें केवल

इतना ही अन्तर था, जितना कि लुधियाने की दरी और कश्मीर के गद्देदार ग़ालीचे में...।

सैय्यद की समझ में न आता था कि प्रेम किस प्रकार होता है, अपितु कैसे कहा जाये कि हो सकता है ? वह जिस समय भी चाहे, शोक में डूब जाये और जब चाहे स्वयं खुश भी कर सकता था। आह ! वह प्यार नहीं कर सकता था, जिसके लिये वह बेचैन था।

उसका एक मित्र, जो बड़ा ही जल्दबाज़ था। वह मूंगफली और चने, केवल उस अवस्था में खा सकता था, यदि उनके छिलके उतरे हुए हों। अपने मुहल्ले की एक हसीन लड़की से आँखें लड़ा रहा था। हर समय उसके हुसन की प्रशंसा अलापने में लीन रहता। यदि उससे पूछा जाता—यह सौन्दर्य तुम्हारी प्रेमिका में कहाँ से शुरू होता है, तो निश्चित ही वह खाली दिमाग़ हो जाता। हुसन का मतलब वह न समझ सकता था। कालेज में पढ़ने के इलावा भी उसके दिमाग़ की नींव घटिया रखी गई थी; परन्तु उसके प्यार की कहानी इतनी लम्बी थी कि कालीदास के ग्रन्थ से भी बड़ा ग्रन्थ बन सकता था। आखिर इन लोगों को . इस असभ्यता के प्रेमियों को प्रेम करने का क्या अधिकार है ?...कई बार यह प्रश्न सैय्यद के दिमाग़ में उत्पन्न हुआ और घबराहट बढ़ गई; परन्तु कुछ समय विचारों के समुद्र में डूबकर उससे बाहर निकला और कहने लगा—"प्रेम करने का सबको अधिकार है, चाहे कोई सभ्य हो या असभ्य......।"

किसी अन्य को प्यार करते देख कर, वास्तव में उसका हृदय ज्वाला-मुखी के समान फटने लगता। यह जानते हुए भी कि यह नीचता है; परन्तु वह असमर्थ था, क्योंकि प्यार करने की लालसा उसके दिमाग़ पर छाई रहती। कभी-कभी तो कई बार वह प्यार करने वालों को गन्दी-गन्दी गालियाँ भी देने लगता और गालियों के पश्चात् स्वयं को

भी कोसता कि व्यर्थ में उसने दूसरों को गालियाँ दीं। यदि संसार के सभी प्राणी एक दूसरे से प्यार करने लग जायें, तो इसमें मेरे बाबा का क्या बिगड़ता है ? मुझे तो केवल अपने काम से काम है। यदि मैं किसी के प्यार में स्वयं को न बाँध सका, तो इसमें किसी का क्या दोष ? किसी हद तक ठीक है कि मैं इस योग्य हीं नहीं हूँ। क्या पता है कि बेवकूफ और बेअक्ल होना ही प्यार करने वाले के लिये जरूरी है। वह स्वयं से ऐसे-ऐसे प्रश्न करता, जैसे वह कहीं 'इन्टरव्यू' पर गया हुआ हो।

एक दिन सोचता-सोचता वह इस निष्कर्श पर पहुँचा कि प्यार एक-दम नहीं होता। वह झूठे हैं, जो कहते हैं प्यार एक-दम हो जाता है। यदि ऐसा होता तो मालूम है कि उसके हृदय में बहुत पहले से किसी के साथ प्यार हो गया होता। बहुत सी लड़कियाँ उसकी निगाहों से अब तक गुजर चुकी थीं। यदि एक-दम प्रेम हो सकता, तो इनमें से किसी एक के साथ प्यार की दुनिया बसा लेता। किसी लड़की को एक या दो बार देख लेने से भी प्यार हो जाया करता है, यह वह न जान सका।

कुछ दिन पहले उसके मित्र ने कहा कि कम्पनी-बाग़ में आज मैंने एक लड़की को देखा और एक ही नजर में जख्मी कर दिया। उसका मन दुःख से चिल्ला उठता और इस प्रकार के शब्द उसको उल्टे दीख पड़ते। एक ही नज़र में उसने मुझे जख्मी कर दिया, लाहौल-बि-ललाह... विचारों को किस भद्दे ढंग से व्यक्त किया गया है।

जब वह इस प्रकार के झूठे और 'थर्ड क्लास' के शब्दों को सुनता, तो उसे ऐसा अनुभव होता कि उसके कानों में कोई पिघला हुआ शीशा डाल रहा हो।

परन्तु यह उल्टे दिमाग़ और लँगड़े मज़ाक के इन्सान उससे अधिक

खुश थे। वह व्यक्ति जो प्यार से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। उससे बहुत अच्छा आराम और शान्ति का जीवन व्यतीत कर रहे थे।

प्यार और जिन्दगी एम० असलम की निगाहों से देखने वाले खुश थे। सैय्यद, जो प्यार और जिन्दगी को अपनी खाली आँखों से देखता था, दुःखी था...बहुत दुःखी...।

एम० असलम से उसे घृणा थी। इतना गन्दा और छिछोरा प्रेमी, तो उसकी नज़रों से कभी न गुज़रा था। उसकी कहानियाँ पढ़कर उसका विचार कटरा धनियाँ की खिड़कियाँ देखने को दौड़ता, जिनमें रात को लाल रंग से रंगे हुए गाल दीख पड़ते। आश्चर्य है कि प्रायः लड़के और लड़कियों में इन्हीं की कहानियाँ दीख पड़ती हैं।

जो प्यार एम० असलम की कहानियाँ उत्पन्न करती हैं, किस प्रकार का प्यार होगा, जब वह कुछ देर विचार करता, तो इस प्यार में उसे एक बहुरूपिया दीख पड़ता। जिसने दिखावे के लिये अच्छे-अच्छे वस्त्र पहन रखे हों, एक पर एक...।

एम० असलम के विषय में उसका मन चाहे कुछ भी हो; परन्तु आधुनिक लड़कियाँ छिप-छिप कर पढ़ती थीं। जब प्रेम की आग बाहर निकलने लगती तो वह उसी आदमी से प्यार करने लग जातीं, जो सब से पहले इनकी निगाहों में आया हो। इसी प्रकार "बदज़ाद" जिसकी कवितायें भारत की जनता और बाई रात को अपने चौबारे पर गाती हैं। आज कल के युवकों और युवतियों में लोकप्रिय था, क्यों? यह उसकी समझ से बाहर था।

बदज़ाद की वह पंक्ति......

"दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे" जिसे प्रत्येक व्यक्ति गाता दीख पड़ता। उसके अपने घर में उसकी नौकरानी जो गधा-पच्चीसी

से भी बीस जूते आगे थी, बर्तन साफ करते समय हमेशा धीमे स्वर मे गुनगुनाया करती थी—

"दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे।"

इस कविता की पक्ति ने उसे दीवाना बना दिया था। जिधर जाओ, उधर से यही सुनाई देता ? "दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे" आखिर यह क्या बला है ? ऊपर कोठे पर चढो, तो काना इस्मायल अपनी एक आँख से कबूतरो को देखकर ऊँचे स्वर से गा रहा है। "दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे," दरियों की दुकान पर बैठो, तो बगल की दुकान में ला० किशोरी मल बजाज अपने मोटे-मोटे चूतड़ों की गद्दियों पर आराम से बैठकर बड़े भद्दे ढंग से "तानसेन" की तरह गाना शुरू कर देता—"दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे" दरियो की दुकान से उठो और बैठक में जाकर रेडियो लगाओ तो अखतरी बाई फैजाबादी गा रही है—

"दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे।"

क्या बेहूदगी है ? वह यही सोचता रहता परन्तु; एक दिन, जब वह खाली दिमाग़ था और पान बनाने के लिये छालियाँ काट रहा था तो उसने स्वयं बिना विचार के गाना शुरू कर दिया—

"दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे।"

वह स्वयं ही लज्जित हो उठा और अपने पर उसे बहुत गुस्सा आया; किन्तु एक-दम खिलखिला कर हँसने के बाद उसने जान बूझ कर ऊँचे स्वर में गाना शुरू कर दिया। "दीवाना बनाना...।" इस प्रकार गाते हुए "बदजाद" की सारी कविता उसने एक हँसी के नीचे दबा दी और मन ही मन में खुश हुआ।

कई बार उसके मन में आया कि वह भी एम० असलम की

कहानियाँ और बदज़ाद की कविताओं का दीवाना बन जाये और इस प्रकार किसी से प्यार करने में सफलता प्राप्त करे; परन्तु चाहने पर भी वह एम० असलम का उपन्यास पूरा न पढ़ सका और न "बदज़ाद" की कविता में अनोखा-पन देख सका। एक दिन उसने अपने हृदय में प्रण कर लिया, चाहे कुछ भी हो, मैं एम० असलम और बदज़ाद के बिना ही सफलता प्राप्त करूँगा। जो विचार मेरे दिमाग़ में है, मैं इन सब के साथ किसी एक लड़की से प्यार करूँगा—यही होगा कि असफल रहूँगा; परन्तु इन डुगडुगी बजाने वालों से तो अच्छा है। उस दिन से उसके मन में प्रेम करने का विचार और भी प्रबल हो उठा और उसने प्रति-दिन बिना जलपान किये, रेल के फाटक पर जाना शुरू कर दिया, जहाँ से बहुत सी लड़कियाँ 'हाई स्कूल' की ओर जाया करती थीं।

फाटक के दोनों तरफ लोहे के बहुत बड़े तवे लगा कर लाल रोगन किया गया था। दूर से जब वह इन लाल तवों को एक-दूसरे के पीछे देखता, तो उसे मालूम हो जाता कि 'जनता मेल' आ रही है। जब फाटक के समीप पहुँचता, तो मुसाफिरों से लदी हुई जनता मेल आती और दनदनाती हुई स्टेशन की ओर निकल जाती।

फाटक खुलता और वह...लड़कियों की प्रतीक्षा में खड़ा हो जाता। पहले दिन इधर से पच्चीस नहीं, छब्बीस लड़कियों को आते देखा। अपने समय पर इधर से लोहे की पटरियों को पार करके, कम्पनी-बाग़ के साथ वाली सड़क पर चली जातीं, जिधर उनका स्कूल होता था। इन छब्बीस लड़कियों को जिनमें दस हिन्दू लड़कियों को देख सका, सोलह मुसलमान लड़कियों का सारा शरीर तो बुर्क़ों में छिपा रहता था।

दस दिन तक लगातार फाटक पर जाता रहा। दो तीन दिन इन बुर्क़े और बग़ैर बुर्क़े वाली लड़कियों की ओर देखता रहा। पूरे दसों

दिन सवेरे की स्वच्छ ठंडी वायु चल रही थी, जिसमें कम्पनी-बाग़ के सभी पुष्पों की गंध बसी हुई थी। उसने एकदम अपने आपको लड़कियों की जगह उन वृक्षों को देखते पाया, जिन में अनगिनत चिड़ियाँ अपनी-अपनी बोलियाँ बोल रही थीं। खुमार से भरी हुई प्रातःकाल की चुप्पी कितनी भली लगती है? किन्तु जब उसने देखा तो उसे पता चला कि वह एक सप्ताह से लड़कियों के स्थान पर जनता-मेल की मौत जैसी अटूल मौत के आने से दिल-बहलाव करता रहा।

प्यार करने के लिये उसने बहुत प्रयत्न किये; परन्तु असफल रहा। अन्त में उसने विचार किया, क्यों न अपने ही मुहल्ले में प्यार की नींव रखी जावे। एक दिन उसने उन लड़कियों की सूची बनाई, जिनसे प्यार किया जा सकता था। सूची बन गई और केवल नौ लड़कियाँ ही उसमें आ सकीं।

नं० १ हमीदा, नं० २ सगरा, नं० ३ नग़मा, नं० ४ पुष्पा, नं० ५ कमलेश, नं० ६ राजकुमारी, नं० ७ फ़ातिमा उर्फ फत्तो, नं० ८ ज़विदा उर्फ जिदा।

नं० ९, उसका नाम इसको मालूम नहीं था। यह लड़की पशमीने के सौदागरों के यहाँ नौकरी करती थी। अब उसने नम्बर वार विचार करना आरम्भ किया।

हमीदा सुन्दर थी, बड़ी भोली-भाली लड़की। जिसकी आयु लग-भग पन्द्रह की होगी। सदा प्रसन्न रहने वाली थी। इस नाजुक कली को देखकर ऐसा लगता, जैसे कोई सफेद शक्कर की पुतली और भुर-भरी है। यदि ज़रा भी हाथ लग जाये तो इसके शरीर का मानो कोई अंग गिर जाने का डर रहता। छोटे से सीने पर छातियों का उभरा-पन ऐसे दीख पड़ता था, जैसे मन्द-राग में किसी ने दो स्वर ऊँचे कर दिए हों।

यदि इससे वह कहता, "हमीदा मैं तुम से प्यार करना चाहता हूँ, तो अवश्य ही इसके मन की धड़कन वाली आवाज़ बन्द हो जाती। वह इसे सीढ़ियों में ही ऐसा कह सकता था। कल्पना में वह हमीदा से उसी स्थान पर मिला ..वह ऊपर से तेजी के साथ जा रही थी और उसने उसे रोका और ध्यान से देखने लगा। उसका छोटा-सा दिल हृदय में इस प्रकार फड़फड़ाया, जैसे तेज वायु के झोंके से दीपक की लौ। वह कुछ न कर सका।"

हमीदा से वह कुछ नहीं कह सकता था। वह इस योग्य ही नहीं थी, जिससे प्यार किया जा सके। वह केवल विवाह योग्य थी। कोई भी पति इसके लिये ठीक हो सकता था। उसका प्रत्येक अंग, स्त्री बनने योग्य था। उसकी गिनती उन लड़कियों में हो सकती थी, जिनका समस्त जीवन विवाह के पश्चात् घर में सिमट के रह जाता है। जो बच्चे पैदा करती रहती हैं। कुछ ही वर्षों में अपना यौवन नष्ट-भ्रष्ट कर बैठतीं और रंग-रूप खोकर भी जिनको अपने में कुछ भी अन्तर नहीं दीख पड़ता।

इस प्रकार की लड़कियों से प्यार का नाम सुनकर तो यह समझे कि अचानक बड़ा भारी पाप हो गया है। वह प्यार नहीं कर सकता था। उसे विश्वास था, यदि वह किसी दिन ग़ालिब की एक भी पंक्ति उसे सुना देता, तो कई दिनों तक नमाज़ के साथ-साथ क्षमा-याचना माँग कर भी वह यह समझती कि उसकी ग़लती क्षमा नहीं हुई... अपनी माँ से उसने तुरन्त सारी बात कह सुनाई होती और उस पर वो उधम मचते के विचार आते ही सैय्यद काँप उठता। स्पष्ट है कि सभी उसको दोषी ठहराते और जीवन-भर उसके माथे पर एक ऐसा दाग़ लग जाता। जिस के कारण उसकी कोई बात भी न सुनने को लिये तैयार होता; परन्तु वह ऊँची चट्टानों से टकराने का विचार रखता था।

नं० २ सगरा, नं० ३ नग़मा इनके विषय में विचार करना ही व्यर्थ था, क्योंकि वे एक कट्टर मौलवी की लड़कियाँ थीं। इनका विचार करते ही उसके सामने उस मस्जिद की चट्टाइयाँ आगईं, जिन पर मौलवी गर्दत्तुल्ला साहब लोगों को नमाज़ पढ़ाने और बाँग देने में लगे रहते थे। मौलवी की दोनों लड़कियाँ जवानी में पदार्पण कर चुकी थीं। वे जवान और सुन्दर थीं; किन्तु यह अनोखी बात है कि उनके मुख, जैसे दरवाज़े के आगे दीवार बनी होती है, इस प्रकार के थे। जब सैय्यद अपने घर में बैठा उनकी आवाज़ सुनता तो वह अनुभव करता कि आदत के अनुसार कोई धीमे-धीमे स्वरों में प्रार्थना कर रहा है। इस प्रकार की प्रार्थना, जिसका अभिप्राय: वह स्वयं भी न जानता था। इनको केवल खुदा से प्रेम करना सिखाया गया था, मनुष्य से नहीं। इसलिये सैय्यद इनसे प्रेम नहीं करना चाहता था।

वह इन्सान था, इन्सान को प्यार भरा हृदय देना चाहता था। सगरा और नग़मा को इस प्रकार से सिखाया जा रहा था, कि इस संसार में नहीं, बल्कि दूसरे संसार में उन भले-मानस व्यक्तियों के काम आ सकें।

जब सैय्यद ने उनके विषय में सोचा, तो अपने आपसे कहा—"भई नहीं इनसे प्रेम नहीं किया जा सकता, क्योंकि अन्त में यह लड़कियाँ कुछ दिनों पश्चात् किसी और के हवाले कर दी जायेंगी। मुझे संसार में गुनाह भी करने हैं। इसलिये मैं यह जुआ नहीं खेलना चाहता। मुझसे यह न देखा जायेगा कि मैं, जिससे प्रेम करूँ और वह कुछ दिनों बाद किसी अन्य पुरुष को दे दी जावे।"

इसलिये उसने सगरा और नग़मा का नाम सूची से काट दिया।

नं० ४ पुष्पा, नं० ५ कमलेश, नं० ६ राजकुमारी, जिनका आपस में, भगवान ही जानता है कि क्या सम्बन्ध होगा? सामने वाले मकान में

रहती थीं। पुष्पा के विषय में विचार ही करना व्यर्थ था। क्योंकि उसका विवाह एक बजाज़ से होने वाला था, जिसका नाम इतना ही बदसूरत था, जितना पुष्पा का सुन्दर। वह कभी-कभी उसे छेड़ा भी करता था और खिड़की में खड़े होकर अपनी काली अचकन दिखा कर कहा करता था—"पुष्पा बताओ तो मेरी इस अचकन का रंग कैसा है?" पुष्पा के कपोलों पर क्षण भर के लिये गुलाब की पत्तियां सी थरथरा जातीं और वह बहादुरी से उत्तर देती 'नीला"।

उसके होने वाले पति का नाम कालूमल था। लाहौल-बि-ल्लाह "किस प्रकार का यह भद्दा सा नाम" उसका नाम रखते हुए उसके माता-पिता ने कुछ भी नहीं सोचा।

जब वह पुष्पा और कालू के विषय में सोचता, तो अपने हृदय में कहा करता। यदि इनका विवाह किसी भी कारण से नहीं रुक सकता, तो केवल इसी कारण से विवाह रोक देना चाहिये कि उसके बनने वाले पति का नाम बेहूदा है।...कालूमल...एक कालू और इस पर "मल" धिक्कार है...इसका क्या तात्पर्य है?

किन्तु वह सोचता यदि पुष्पा का विवाह कालूमल से न हुआ तो किसी घसीटाराम हलवाई, या किसी करोड़ीमल सर्राफ़ से हो जायेगा। वह उस दशा में उससे प्यार नहीं कर सकता था। यदि वह करता तो उसे हिन्दू मुस्लिम दंगे का डर था। मुसलमान और एक हिन्दू लड़की से प्यार करे ..प्रथम तो प्यार करना वैसे ही अपराध है और फिर मुसलमान और हिन्दू लड़की को प्यार करे..."एक करेला दूसरा नीम चढ़ा" वाली बात।

नगर में कई बार हिन्दू मुस्लिम फ़साद हो चुके थे, किन्तु जिस मुहल्ले में सैय्यद रहता था, न मालूम किस वजह से बचा हुआ था। यदि वह पुष्पा, कमलेश और राजकुमारी से प्यार करने का विचार

करता, तो स्पष्ट है कि ससार की सभी गाएँ और सूअर मुहल्ले मे डेरा लगा लेते। हिन्दू मुस्लिम फसाद से सैय्यद को घृणा थी। इसलिये नही कि एक दूसरे का सर फोड देते और खून के छीटे उडाते, नही इसलिए कि सिर बडे भद्दे ढग से बखेरे जाते थे।

राजकुमारी जो उन दोनो मे छोटी थी। वह उसको पसन्द थी उसके अधर स्वॉस की कमी के कारण थोडे से खुले रहते थे, जो उसे बहुत पसन्द थे। इनको देखकर इसे हमेशा यही विचार आता कि एक चुम्बन इनको छूकर आगे निकल गया है। एक बार उसने राजकुमारी को जो अभी चोदहवी मजिल को पार कर रही थी। अपने घर की तीसरी छत के गुसलखाने में स्नान करते सैय्यद ने अपने घर के झरोखों से जब उसकी ओर देखा तो उसे ऐसा अनुभव हुआ कि इसके गन्दे विचार दिमाग से निकल कर सामने आ खड़े होगे। सूर्य की मोटी-मोटी किरणे जिन मे से अनगिनत सोने-चाँदी की तारे छिड़काव सा करती हुई उसके नग्न शरीर पर फिसल रही थी। इन किरणो ने उसके गोरे-बदन पर सोने-चॉदी के मानो पतरे चढ़ा दिये हो। बाल्टी मे से जब उसने गड़वा निकाला और खडी होकर अपने शरीर पर पानी डाला तो वह सैय्यद को सोने की पुतली-सी जान पडी। पानी की मोटी-मोटी बूँदे उसके शरीर से लुढक कर गिर रही थी। जैसे सोना पिघल कर गिर रहा हो।

राजकुमारी, पुष्पा और कमलेश से चतुर थी। इसकी पतली-पतली उँगलियाँ इस ढग से हिलती रहती कि वह कोई बड़ी भारी फिलासफर हो। उसे बहुत पसन्द थी। इन उँगलियो में खिचाव था। इस खिचाव का प्रमाण करोशिया और सूई के काम से मिलता था, जिसे वह कई बार देख चुका था।

एक दिन उसने राजकुमारी के कोमल हाथों से बुना हुआ मेज़-पोश देखा। "उसे विचार आया" कि उसने हृदय की अनगिनत धड़कनें भी उसकी छोटी-छोटी डब्बियों में गूँथ दी हों। एक बार जब वह उसके समीप ही खड़ा था, उसके हृदय में प्यार करने का विचार उत्पन्न हुआ; किन्तु जैसे ही उसने राजकुमारी की ओर देखा, तो वह मन्दिर के रूप में दीख पड़ी, जिसके साथ बनी मस्जिद के समान वह खड़ा था.. "मस्जिद और मन्दिर में क्या प्यार हो सकता है ?"

मुहल्ले की सभी लड़कियों से यह हिन्दू लड़की बुद्धिमान थी। इसके माथे पर एक पतली-सी रेखा अपने पाँव जमाने की चेष्टा किया करती थी, जो इसे बहुत अच्छी दीख पड़ती थी। इसके माथे को देख कर वह मन ही मन में कहा करता कि जब भूमिका इतनी सुन्दर और आकर्षक है तो मालूम नहीं पुस्तक कितनी आकर्षक होगी...मगर... आह...ये मगर . इसके जीवन में यह मगर शब्द सच-मुच का मगर बन कर रह गया था, जो उसे डुबकी लगाने से सदा रोके रखता था।

नं० ७ फ़ातमा उर्फ फत्तो, खाली नहीं थी। इसके दोनों हाथ प्यार में डूबे हुए थे। एक अमजद से जो लोहे का काम किसी वर्कशाप में करता था, दूसरा उसके चाचा के बेटे से, जो दो बच्चों का बाप था, उससे प्रेम करती थी। फ़ातमा उर्फ फत्तो इन दोनों भाईयों से प्यार कर रही थी। मानो एक पतंग से दो पेचें लड़ा रही हो। एक पतंग में जब दो और पतंग उलझ जावें तो अधिक दिलचस्पी पैदा हो जाती है; परन्तु यदि इस तिगड़े में एक और पेंच की वृद्धि हो जाये, तब यह उलझाव एक भूल-भुलइया का रूप धारण कर लेगा। इस प्रकार का उलझाव सैय्यद को अच्छा नहीं लगता था। इस के अतिरिक्त फत्तो जिस प्रकार के प्रेममय जीवन में फंस चुकी थी, वह प्रेम निकृष्टता का रूप था। सैय्यद जब इस प्रकार के प्रेम का विचार करता तो प्रेममय

पुरानी कहानियों की 'बड़ी चट्टनी' पीले कागजों के ढेर से उठ कर उसकी आँखों के सामने लाठी टेकती हुई आ जाती और उसकी ओर इस प्रकार देखती जैसे कहना चाहती है कि मैं उस नीलपटी पर बिखरे तारों को ला सकती हूँ। बता तेरी नज़र किस लड़की पर है, ऐसे चुटकियों . में तुझसे मिलाप करा दूंगी।

उस बुढ़िया का विचार आते ही वह 'पाईबाग' के विषय में सोचता। वह जाहरापीर और दाता गंज बख्श की समाधि उसकी आँखों के सामने आ खड़ी हो जाती। जहाँ वह बुढ़िया, उसकी प्रेमिका को किसी बहाने से ला सकती थी ?...उस विचार के उठते ही उसका प्रेम सुकड़ जाता और एक ऐसी समाधि का रूप धारण कर लेता; जिस पर हरे रंग का ग़लाफ चढ़ा कर, अनगिनत हार उस पर बिखेरे गये हों ..।

कभी-कभी उसे यह ख्याल भी आता। यदि 'चट्टनी' असफल रही, तो कुछ ही दिनों के पश्चात् इस मुहल्ले से मेरा जनाज़ा ही निकलेगा और दूसरे मुहल्ले से मेरी उस प्रेमिका की अर्थी निकलेगी जो यौवन में पदार्पण कर चुकी थी। यह दोनों अर्थी और जनाज़ा एक दूसरे मुहल्ले से निकलते हुए टकरा जाएँगे तो फिर दोनों अर्थियाँ एक अर्थी का रूप धारण कर लेंगी या प्रेममय कहानियों की तरह जब मुझे और मेरी प्रेमिका को दफ़न किया जाएगा, तब एक नीहारिका प्रगट होगी और दोनों समाधियाँ मिल कर एक बन जायेंगी। वह यह भी सोचता यदि उसकी मृत्यु भी हो गई और उसकी प्रेमिका किसी कारण-वश आत्म-हत्या न भी कर सकी, तब आये वीरवार को उसकी समाधि पर कोमल हाथ, उसकी याद में फूल चढ़ाया करेंगे और दीपक भी जलाया करेंगे। अपने काले और लम्बे केशों की लटाएँ खोलकर अपना सिर (माथा) समाधि से फोड़ा करेंगी और समाज एक तस्वीर और बना

देगा; जिसके ऊपर यह लिखा होगा।

'हाय ! इस जदो परशेमां का परशेमां होना'

या कोई कवि दूसरा गीत लिख देगा। एक जमाने तक तमाशबीन, जिसे कोठों पर तबले की थाप के साथ सुनते रहेंगे। यह गीत इस ढंग के होंगे—

मेरी लहद पे कोई पर्दा पोश आता है
चिरागे गोरे-गरेबाँ सुबा बुझा देना।

इस प्रकार के गीत जब वह किसी गद्य में देखता, तो इस नतीजे पर पहुँचता कि प्रेम गौर-कंकन है, जो हर समय कंधे पर कुदाल रखे, प्रेमियों के लिये कब्रें खोदने के लिये, हर समय तैयार रहता है। इस प्रेम से वह उस प्रेम की तुलना करता, जिसकी कल्पना उसके दिमाग में थी; परन्तु जब उनमें धरती और आकाश-सा अन्तर पाता तो वह विचार करता कि या तो उसका दिमाग खराब है, या वह नजाम ही खराब है; जिसमें वह स्वांस ले रहा है।

सैय्यद यदि कभी दुकान खोलता, तो उसे ऐसा अनुभव होता कि वह किसी कसाई की दुकान में दाखिल हो गया हो। प्रत्येक गीत की पंक्ति इसे बगैर खाल का बकरा दीख पड़ती; जिसका गोश्त चरबी के समेत बू पैदा कर रहा हो। प्रत्येक बात उसकी जबान पर एक खास-मजा उत्पन्न होने का अनुभव करती, जब वह कोई गीत पढ़ता, तो उसकी जबान को वही अनुभव होता जो कुर्बानी का गोश्त खाते समय अनुभव होता था।

वह सोचा करता कि जिस प्रान्त में जनसंख्या का चौथा भाग कवि है, वह इस प्रकार के ही गीत लिखते हैं। प्यार सदा वहाँ पर गोश्त के लोथड़ों के नीचे फँसा रहेगा। उस प्रकार की उदासी एक दो दिन

के पश्चात् स्वयं ही समाप्त हो जाती और फिर नई ताज़गी के साथ प्रेम-समस्या को सुलझाने का प्रयत्न करता था।

नं० ८ जुविदा उर्फ जिदा मोटे-मोटे हाथ-पाँव वाली लड़की थी ? यदि उसे दूर से कभी देख लेता तो गुँथे हुए मैदे के समान ढेर दीख पड़ती थी। मुहल्ले के एक नवयुवक ने एक बार उसको आँख मारी, प्रेम की प्रथम सीढ़ी पर चढ़ने के लिये; परन्तु उस बेचारे को लेने के देने पड़ गये। उस लड़की ने अपनी माँ से सब कुछ जा सुनाया और उसकी माँ ने अपने बड़े लड़के से खुफिया ढंग से बात-चीत की और उसको फटकारा। परिणाम इसका यह हुआ कि आँख मारने के दूसरे ही दिन सायंकाल के समय जब अब्दुलगनी साहब हिकमत सीख कर घर आए, तो उनकी दोनों आँखें सूझी हुई थीं। सुनते हैं, जुविदा उर्फ जिदा चिक में से यह तमाशा देखकर बहुत ही प्रसन्न हुई। सैय्यद को चूँकि अपनी आँखें बहुत प्यारी थीं, इसलिये वह जुविदा के विषय में क्षण-भर के लिये भी सोचने को तैयार न था। अब्दुलगनी ने आँख के द्वारा प्यार का श्री-गणेश करना चाहा था। सैय्यद को यह ढंग बाजारी जान पड़ता था। यदि वह इसको अपना प्यार-भरा सन्देश देना चाहता तो अपनी जबान को हिलाता, जो दूसरे दिन ही काट दी जाती। मरहम पट्टी करने से पहले जुविदा का भाई कभी न पूछता कि क्या बात है ? बस, वह लज्जा के नाम पर छुरी चला देता, उसको इसका कभी विचार न आता कि वह छः लड़कियों का जीवन नष्ट कर चुका है, जिनकी कहानियाँ बड़े मजे के साथ अपने मित्रों को सुनाया करता था।

नं० ९ जिसका नाम उसको भी पता न था; परन्तु वह पश्मीने के व्यापारियों के यहाँ नौकरी करती थी। एक बहुत बड़ा घर था, जिसमें चारों भाई रहते थे। यह लड़की जो कश्मीर की पैदावार थी, इन चार

भाइयों के लिये सर्द-ऋतु का शाल बन कर इनको आनन्द प्रदान करती थी। ग्रीष्म-ऋतु में वे सब से सब कश्मीर चले जाते और वह अपनी दूर की बिरादरी में किसी स्त्री के पास चली जाती थी ? यह लड़की जो अब स्त्री का रूप धारण कर चुकी थी, दिन में एक दो बार अवश्य ही उसकी नजरों से गुजरती थी। इस लड़की को देखकर वह सदा यही विचार करता कि उसने एक नहीं, तीन चार स्त्रियाँ इकट्ठी देखी हैं। इस लड़की के विषय में जिसके विवाह के लिये चारों भाई चिन्ता कर रहे थे। उसने कई बार सोचा ! वह इसके फुर्तीलेपन पर बहुत ही रीझ चुका था। वह घर का सारा काम-काज स्वयं ही संभालती थी। वह इन चार सौदागर भाइयों की बारी-बारी सेवा भी करती थी।

वह देखने में प्रसन्न दीख पड़ती थी। इन चार सौदागरों को; जिनके साथ इसके शरीर का सम्बन्ध था, वह एक ही दृष्टि से देखती थी। इस लड़की का जीवन जैसा कि दीख पड़ता है, एक आश्चर्य जनक खेल था, जिस खेल में चार व्यक्ति भाग ले रहे थे। उन चार व्यक्तियों में से प्रत्येक को यही समझना पड़ता था कि वह तीनों भाई मूर्ख हैं। जब इस लड़की के साथ उनमें से कोई मिल जाता तो वह दोनों मिलकर यह सोचते या समझते होंगे कि घर में जितने आदमी रहते हैं, सब के सब अन्धे हैं; किन्तु क्या वह स्वयं अन्धी नहीं थी ? इस प्रश्न का उत्तर सैय्यद को नहीं मिलता था। यदि वह अन्धी होती तो एक ही समय में चार व्यक्तियों से सम्बन्ध पैदा न करती, हो सकता है वह इन चारों को एक ही समझती हो...क्योंकि स्त्री और पुरुष का शारीरिक सम्बन्ध एक जैसा ही होता है।

वह अपने जीवन की सुनेहली घड़ियाँ आनन्दमय व्यतीत कर रही थी। चार सौदागर भाई छुप-छुप कर कुछ न कुछ अवश्य ही देते होंगे; चूँकि जब पुरुष किसी भी स्त्री के साथ कुछ क्षण आनन्दमय व्यतीत करता है, तो उसके हृदय में उसका मूल्य चुकाने का विचार अवश्य ही

उत्पन्न होता है; क्योंकि यह विचार एकान्त स्थान में पहुँचने से पूर्व ही उत्पन्न होता है, इसलिये अधिक लाभप्रद होता है।

सैय्यद इसको प्रायः बाजार में शहाबुद्दीन हलवाई की दुकान पर खीर खाते या भाई केसरसिंह फलों वाले की दुकान के पास फल खाते देखता था। उसे इन वस्तुओं की आवश्यकता थी। फिर वह जिस स्वतन्त्रता-पूर्वक फल और खीर खाती थी, इससे पता चलता है कि वह इनका एक-एक अंश हज़म करने का विचार रखती है।

एक बार सैय्यद शहाबुद्दीन की दुकान पर फालूदा पी रहा था और सोच रहा था कि इतनी सुन्दर चीज को, किस प्रकार हज़म कर सकेगा ? वह आई और चार आने की खीर में एक आने की रबड़ी डलवा कर दो ही मिन्ट में सारी प्लेट चट कर गई। सैय्यद को यह देख कर मन में ईर्ष्या हुई। जब वह चली गई तब शहाबुद्दीन के मैले अधरों पर मैली मुस्कान की रेखाएँ उत्पन्न हुईं और उसने किसी को भी जो सुन ले पुकारते हुए कहा—"साली मजे कर रही है।"

यह सुनकर उसने उस लड़की की ओर देखा जो आँखें मटकाती हुई फलों की दुकान के समीप पहुँच चुकी थी। भाई केसर सिंह की दाढ़ी का मज़ाक उड़ा रही थी। वह सदा खुश रहती और सैय्यद को यह देख कर अत्यन्त खेद होता। भगवान् जाने क्यों ? उसके हृदय में अद्भुत और गदले विचार उत्पन्न होते कि वह सदा प्रसन्न न रहे।

सन् तीस के प्रारम्भ तक वह इस लड़की के बारे में यही निर्णय करता रहा कि इससे प्यार नहीं किया जा सकता।

२

***

सन् इक्कतीस के शुरू होने में केवल रात के चन्द घन्टे ही शेष थे। सैय्यद रजाई में भी सर्दी अधिक होने के कारण काँप रहा था। वह पतलून और कोट पहने हुए ही लेट गया था; किन्तु ठंड की लहरें फिर भी उसकी हड्डियों तक पहुँच रही थीं। वह उठ खड़ा हुआ और अपने कमरे की हरी रोशनी में जो इस ठंड में एक नया प्लाट तैयार कर रही थी, उसने ज़ोर-ज़ोर से टहलना शुरू कर दिया ताकि खून फिर से गर्म हो सके।

थोड़ी देर इस प्रकार चलने-फिरने के पश्चात् जब वह गर्मी का अनुभव करने लगा तो वह आराम कुर्सी पर बैठ गया और सिगरेट जला कर अपना दिमाग़ टटोलने लगा। उसका दिमाग़ खाली था, इसी कारण वह कुछ तेज़ था। कमरे की सभी खिड़कियाँ बन्द थीं; परन्तु वह बाहर गली की हवा वाली गुनगुनाहट सरलता पूर्वक सुन रहा था।

इसी गुनगुनाहट में उसे किसी इन्सान की आवाज़ भी आने लगी ? एक घुटी-घुटी चीख़, वर्ष की अन्तिम घड़ियों वाली रात के सन्नाटे में चाबुक के मारने के समान उभरी, फिर किसी की प्रार्थनामय आवाज़ काँपी और वह उठ खड़ा हुआ और खिड़की के सुराख में से गली की ओर निहारा।

वही...वही लड़की अर्थात् सौदागरों की नौकरानी, बिजली के खम्बे के नीचे खड़ी थी, एक कम्बल, एक बनियान में बिजली की रोशनी में ऐसी दीख पड़ती थी कि उसके शरीर पर पतली सी बर्फ की तह जम गई हो। इस बनियान के नीचे उसकी बेढंगी छातियाँ नारियल के समान लटक रही थीं। वह इस ढंग से खड़ी थी, मानो अभी-अभी कुश्ती लड़कर अखाड़े से बाहर आई हो। इस अवस्था में देखकर सैय्यद के नन्हें और कोमल हृदय को बड़ा धक्का लगा।

इतने में किसी पुरुष की घबराई हुई आवाज़ आई..."खुदा के लिये अन्दर चली आओ ..कोई देख लेगा तो मुसीबत खड़ी हो जायेगी ?" जंगली बिल्ली के समान लड़की ने गुर्रा कर कहा—"मैं नहीं आऊँगी ..बस एक बार जो कह दिया नहीं, आऊँगी।"

सब से छोटे सौदागर की आवाज़ आई, "खुदा के लिये ज़ोर से न बोलो ..कोई सुन लेगा, राजो ..?"

राजो ने अपनी लंडूरी चोटियों को झटका देकर कहा—"सुन ले, खुदा करे कि कोई सुन ले ..और यदि तुम मुझे इसी प्रकार अन्दर आने के लिये दुःखी करते रहे, तो मैं मुहल्ले भर को जगा कर सब कुछ कह दूँगी ..समझे ?"

राजो सैय्यद को दीख रही थी, जिससे वह बोल रही थी, वह नहीं दीख पाया। जब सैय्यद ने बड़े सुराख में से राजो की ओर निहारा, तो उसके शरीर से कम्पन छूट पड़ी। यदि वह सारी की सारी नंगी

होती तो शायद उसके कोमल विचार को धक्का न पहुँचता; परन्तु उसके शरीर के वह अंग नंगे थे, जो दूसरे छिपे हुए अंगों को अपने जैसा होने का आदेश दे रहे थे। राजो बिजली के खम्बे तले खड़ी थी। सैय्यद को ऐसा महसूस हुआ कि औरत के विषय में उसके सभी विचार धीरे-धीरे कपड़े उतार रहे हैं।

राजो की भौंडी और मोटी-मोटी बाहें, जो कन्धों तक नंगी थीं, घृणास्पद रूप से लटक रही थीं। मर्दाना बनियान के खुले और गोल गले में से ढलकी हुई, डबल रोटी जैसी मोटी और कोमल छातियाँ कुछ इस ढंग से बाहर को झाँक रही थीं, मानो सब्जी, तरकारी की टूटी हुई टोकरी में से गोश्त के टुकड़े दीख रहे हों। अधिक पहनने के कारण पतली बनियान के नीचे वाला भाग स्वयं ही ऊपर को उठ चुका था और नाफे का गड्ढा, इसके खमीर के आटे जैसे फूले हुए पेट पर ऐसे दिखाई देता था, जैसे किसी ने उँगली गाड़ दी हो।

यह दृश्य देख कर सैय्यद के दिमाग़ का स्वाद खराब हो गया। उसने चाहा कि खिड़की से हटकर अपने बिस्तर की ओर चला जाये और सब कुछ भूल-भाल कर सो जाये; किन्तु जाने क्यों वह सुराख पर आँख जमाये खड़ा रहा। राजो को इस अवस्था में देखकर उसके हृदय में घृणा के अंकुर जाग उठे; परन्तु इसी घृणा के कारण वह दिलचस्पी ले रहा था।

सौदागर के सब से छोटे लड़के ने जिसकी आयु तीस वर्ष के लगभग होगी, एक बार फिर प्रार्थना भरे स्वर में कहा—

"राजो! खुदा के लिये अन्दर चली आओ। मैं तुम से वादा करता हूँ कि फिर कभी नहीं सताऊँगा। लो अब मान जाओ...देखो, खुदा के लिये अब मान लो। यह तुम्हारी बगल में वकीलों का मकान

है, यदि इन में से कोई जाग उठा या देख लिया, तो बड़ी शर्म का सामना करना पड़ेगा।"

राजो चुप रही; किन्तु थोड़ी देर के बाद बोली—"मुझे मेरे कपड़े ला दो। बस अब मैं तुम्हारे यहाँ न रहूँगी। मैं तंग आ गई हूँ, मैं कल से वकीलों के यहाँ नौकरी कर लूँगी ..समझे, यदि अब तुमने मुझसे कुछ भी कहा तो खुदा की कसम शोर मचा दूँगी ..मेरे कपड़े चुप-चाप लाकर दे दो।" ..सौदागर के लड़के की आवाज़ आई .."लेकिन तुम रात भर कहाँ रहोगी ?"

राजो ने कहा—"जहन्नुम में, तुम्हें क्या ? जाओ अपनी औरत की गोद गर्म करो। मैं तो कहीं न कहीं सो जाऊंगी"...उसकी आँखों में आँसू थे ..आँसू ? ...वह सच-मुच रो रही थी।

सुराख से आँख उठाकर सैय्यद पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया और सोचने लगा। राजो की आँखों में आंसू देख कर उसको दुःख हुआ। इसमें कोई आश्चर्य वाली बात नहीं कि उस दुःख के साथ वह घृणा भी लिपटी हुई थी जो राजो को देखकर सैय्यद के हृदय में पैदा हुई थी; परन्तु बहुत कोमल हृदय होने के कारण वह शीघ्र ही पिघल-सा गया। राजो की आँखों में जो शीशे के अमृतबान में चमकदार मछलियों की तरह सदा प्यासी रहती थी, आँसू देखकर उसके हृदय ने चाहा कि उठ कर उसे दिलासा दे......

राजो के यौवन के चार कीमती साल सौदागर भाइयों ने मामूली चटाई की तरह प्रयोग किये थे। इन वर्षों पर चारों भाइयों के नक्शे-कदम इस प्रकार घुलमिल गये थे कि इन में से अब किसी का भय ही नहीं रहा था कि कोई इनके पाँव के चिह्न देख लेगा। राजो के विषय में यह कहा जा सकता है कि वह अपने पाँव के चिह्न देखती थी न दूसरों के, बस केवल चलते जाने की धुन थी। किसी ओर भी; किन्तु

अब शायद उसने मुड़कर देखा था, मुड़कर उसने क्या देखा था, जो उसकी आँखों में आँसू आ गये ? . यह सैय्यद को मालूम नहीं था।

जिस चीज़ का पता न हो उस चीज़ को जानने के लिये सभी लालायित रहते है। कुर्सी पर बैठा सैय्यद देर तक अपनी जानकारी की उलट-पुलट करता रहा। जब उठकर उसने कुछ और देखने की चेष्टा करते हुए सुराख पर आँख जमाई, तो राजो वहाँ न थी। देर तक सुराख पर आँख लगाये खड़ा रहा; किन्तु उसे बिजली की श्वेत चाँदनी, गली के लम्बे फर्श और गन्दी नाली के सिवा, जिसमें पालक के अनगिनत डंठल पड़े थे और कुछ न दीख पाया।

बाहर सम्भवत: तीन का अन्तिम पहर दम तोड़ रहा था और उसका हृदय सलवियाँ-इन्जन की तरह धक्-धक् करने लगा।

राजो कहाँ है ?...अन्दर चली गई है क्या ?...मान गई है क्या ? परन्तु प्रश्न है कि वह किस बात पर झगड़ी थी ?

राजो की काँपती हुई छातियाँ अभी तक सैय्यद की आँखों के सामने खड़ी थीं। अवश्य ही उसके और सौदागर के छोटे लड़के जिसका नाम "महमूद" है, किसी बड़ी भारी बात पर झगड़ा हो गया होगा। दिसम्बर की खून जमाने वाली रात में केवल एक बनियान और सलवार के साथ बाहर निकल आई थी। बहुत कहने सुनने पर भी अन्दर जाने का नाम नहीं लेती थी।

जब सैय्यद सोचता कि इनके झगड़े का कारण परन्तु वह इस कारण पर विचार ही नहीं करना चाहता था; कितनी भयंकर घटना थी, जो उसके सामने आ जाती थी, किन्तु वह सोचता कि यह बात झगड़े का कारण न होगी, क्योंकि वह दोनों इसके आदी थे। एक समय से, राजो इन सौदागर भाइयों को बड़े ढंग से एक थाल में भोजन खिला रही थी; परन्तु अब क्या हो गया था ? राजो के यह शब्द

उसके कानों में जिद्दी मक्खी के समान भिनभिना रहे थे—जहन्नुम में...तुम्हें इससे क्या...जाओ तुम अपनी औरत की गोद गरम करो... मैं कहीं न कहीं सो जाऊँगी—इन शब्दों में वेदना थी।

इसको पीड़ित देखकर सैय्यद के नामालूम विचारों को शान्ति तो अवश्य ही पहुँची थी; परन्तु उसके साथ ही इसके हृदय में दया भी पैदा हुई थी। किसी भी औरत से उसने आज तक अपनी हमदर्दी प्रगट न की थी। वह इस को दुःखी देखना चाहता था, इसलिये कि वह उसकी हमदर्दी, जो उसके हृदय-पटल पर उसके नाम की लिख चुका है, प्रगट कर सके। वह उसको सहन कर सकती थी। यदि वह गली की किसी और लड़की से हमदर्दी प्रगट करता, तो मालूम है, कितनी बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ता। वास्तव में इस हमदर्दी का तात्पर्य कुछ और ही आधुनिक समाज वाले निकालते।

राजो के अलावा सभी लड़कियाँ इस प्रकार जीवन काट रही थीं, जिसमें ऐसे मौके कम ही मिलते हैं। जब इन से विशेष प्रकार की हमदर्दी की जा सकती है। यदि इस प्रकार के कुछ क्षण प्राप्त भी हों, तो वह एकदम इनके हृदय में दफ़न हो जाते हैं। आशाओं और तमन्नाओं की यदि कब्रें बनती हैं, तो फ़ातिहा पढ़ने की इज्जात नहीं मिलती या इसका मौका ही नसीब नहीं होता। यदि प्यार की कोई चिता तैयार भी होती है, तो आस-पास के लोग इस पर राख डाल देते हैं कि चिंगारियाँ न उठ सकें।

सैय्यद विचार करता कि यह कितना दुःख से भरा और बनावटी जीवन है। किसी को भी आज़ादी नहीं कि जिन्दगी के गड्ढे किसी को दिखा सके? वह व्यक्ति जिनके पाँव मज़बूत नहीं, इनको अपनी लड़खड़ाहटें छिपानी पड़ती हैं; क्योंकि इस प्रकार की रीत है। प्रत्येक व्यक्ति को एक जीवन अपने लिए और एक दूसरों के लिए व्यतीत

करना होता है। आँसू भी दो प्रकार के होते हैं, अट्टहास भी दो प्रकार के। एक वह आँसू जो जबरदस्ती से निकालने पड़ते हैं और एक वह जो स्वयं ही निकल पड़ते हैं। एक अट्टहास जो नीरवता में गूँज सकता है, दूसरा वह जो खास अन्दाज और खास नियमों के रूप में ही गले से निकालना पड़ता है।

कवि जिसकी सारी आयु वैश्याओं के चौबारे पर और मयखानों में बीती हो और मौत के बाद हजरत मौलाना और रहमतालला ओलिया बता दिया जाता है। यदि दुर्भाग्य से इसकी जीवनी लिखी जाये, तो उसको देवदूत का रूप चढ़ाना, जीवन-चरित्र में साबित करना कलाकार अपना काम समझता है। आग़ाहुसन का सारा जीवन बुरे कामों में बीता हुआ; परन्तु मौत के बाद ही क्षणभर में इसके सारे करेक्टर को धोबी के घर भिजवा दिया और जब वापिस आया तो जनता ने देखा, तो उसमें कोई दाग़, कोई सलवट नहीं थी।

गधे, घोड़े, खच्चर, ऊँट, मतलब यह कि प्रत्येक जानदार और बेजान वस्तु को अच्छा कहना उसका धर्म है। लेखन-कला पर, कविता पर, इतिहास पर, प्रत्येक व्यक्ति के गले पर अच्छा-अच्छा बिठा दिया जाता है। बड़े से बड़े इन्सान से लेकर मास्टर निसार गवैये तक सब के सब सच्चे हैं। सैय्यद बिल्कुल ठीक था। राजो की सदा खुश रहने वाली आँखों में आँसू दीख पड़ें और उन आँसुओं की इखलाक से बेपरवाह होकर अपनी उँगलियों से छुए। वह अपने आँसुओं का स्वाद भली प्रकार जानता था; परन्तु वह दूसरों के आँसू भी चखना चाहता था। खास कर किसी स्त्री के आँसू; क्योंकि स्त्री वृक्ष के रूप में शहद है। इसलिये उसकी इच्छा भी तेज हो गई।

सैय्यद को विश्वास था, यदि वह राजो के समीप होना चाहेगा, तो वह जंगली घोड़ी के समान बिदकेगी नहीं। राजो गलाफ़ चढ़ी हुई

ग्रौरत न थी। वह जैसी भी थी, दूर से नज़र ग्रा जाती थी। उसको देखने के लिये खुर्दबीन या किसी यन्त्र की ग्रावश्यकता न थी। वह बिल्कुल साफ थी। उसकी भद्दी ग्रौर मोटी हँसी, जो उसके मटमैले अधरों पर बच्चों के टूटे हुए मिट्टी के मकानों के समान दीख पड़ती थी। हँसी में सत्यता थी, बड़ी स्वस्थ ग्रौर ग्रब के उसकी सदा प्रसन्न रहने वाली ग्राँखों ने दो मोटे-मोटे ग्राँसू ढलका दिये थे, इनमें बनावटी-पन न था। राजो को सैय्यद बहुत दिनों से जानता था। उसकी ग्राँखों के सामने उसके मुख की रेखाएँ बदली थीं। वह लड़की से ग्रौरत का रूप धारण करने में लगी हुई थी; क्योंकि उसके ग्रन्दर एक की जगह तीन-चार ग्रौरतें थीं, यही कारण है कि चार व्यापारी भाइयों को जन-समूह न समझती थी, लेकिन वह जन-समूह सैय्यद को पसन्द न था। इसीलिये वह केवल एक ग्रौर के साथ एक ही पुरुष को सदा देखने का इच्छुक था; किन्तु यहाँ 'राजो' के मामले में पसन्द या न पसन्द के बीच में रुक जाना पड़ता था; क्योंकि कई प्रकार के विचार उसके दिमाग़ में इकट्ठे होते ग्रौर कई बार तो उसे बिचोलिया बनकर राजो को दाद देनी पड़ती। यह दाद किस कारण थी, यह वह नहीं जानता था? इस कारण विचारों की भीड़-भाड़ में वह उस पर विचार करने में सदा भूल करता, जो उस वेदना का इच्छुक होता है इसलिये।

गली के ग्रच्छे ग्रौर बुरे सभी राजो को भली-भाँति जानते है। मौसी 'मख़तो' गली की सब से बड़ी ग्रायु वाली स्त्री है। उसका मुख ऐसा है जैसे पीले रंग के सूत की ग्रटियाँ बड़ी लापरवाही से नोच कर एक दूसरे में से उलझा दी हों। यह बुढ़िया भी, जिसको कम दिखाई देता है ग्रौर कान जिसके सुनने से दूर रहते हैं, ग्रर्थात् बहरे हैं, राजो से चिलम भरवा कर, उसके विषय में ग्रपनी बहू सैंया से, जो कोई भी उसकेप ास हो, कहा करती थी—"इस छोकरी को घर में ग्रधिक मत ग्राने-जाने दिया करो, वरना किसी दिन ग्रपने प्यारे खसमों से हाथ धो

बैठोगी" ."यह कहते समय बुढ़िया का बीता हुआ यौवन उसके मुख की झुरियों में जवानी की याद ताजा कर देता था ..।"

राजो की अनुपस्थिति में सब इसका बुरा ही कहते थे । इस प्रकार के पाप के लिए खुदा से पश्चात्ताप करते थे, अर्थात् क्षमा माँगते थे, ताकि आगे चलकर उनसे कहीं मिल जाए। स्त्रियाँ जब राजो के विषय में बात करती थीं, तो अपने आप को उच्च चरित्र वाली स्त्री समझती थीं और मन ही मन में यह विचार कर अभिमान का अनुभव करती थीं कि उनके दम से ही चरित्र की रक्षा हो रही है ..।

सब राजो को बुरा समझते थे किन्तु आश्चर्यजनक बात हैं कि उसके सम्मुख किसी ने भी घृणा प्रकट नहीं की थी ? इसके अतिरिक्त बड़े प्रेम और आदर सहित उससे बातें करते थे । शायद इसका कारण वही नाम-नहाद चरित्र की चर्चा हो; परन्तु इस भले व्यवहार में राजो की खिलखिलाट और दूसरों को प्रसन्न-चित्त करने वालों का भी कुछ अधिकार था । सौदागर के घर से काम-काज से छुट्टी पाकर जब किसी पड़ौसी के यहाँ जाती भी तो वहाँ भी बेकार बैठकर बातें न बनाती थी । कभी किसी के बच्चे का पोतड़ा बदल दिया, कभी किसी की चुटिया गूँथ दी, कभी किसी के सिर से जुएँ निकाल दीं, मुट्ठी-चापी कर दी, वास्तव में वह बेकार कहीं भी नहीं बैठ सकती थी । उसके मोटे-मोटे हाथों में बला की तेजी थी । उसका हृदय जैसा कि प्रतीत होता है, हर समय इस खोज में रहता कि किसी को प्रसन्न करने का ढंग निकाला जाए ।

राजो दूसरों को प्रसन्न करने में कई-कई घण्टे व्यतीत करने देती थी; किन्तु कृतज्ञता और धन्यवाद के शब्द सुनने के हेतु वह एक क्षण भी न ठहरती थी । मौसी 'मखतो' की चिलम भरी, सलाम किया और चल दी, मुनसफ साहब को बाजार से फालूदा लाकर दिया,

उनके बच्चे को थोड़ी देर गोद में खिलाया और चली गई। गुलाम मुहम्मद नेचागर की बूढ़ी दादी की पिंडलियाँ थपकीं और उसका आशीर्वाद लिए बिना ही चल दी ...।

यह गठिये की मारी बुढ़िया, जो अपने जीवन में ऐसी मंजिल पर पहुँच गई थी, जहाँ उसका नाम होने या न होने के समान था। गुलाम मुहम्मद जिसे बेकार हुक्के के नेचे के समान समझता था। राजो के हाथों वह एक अद्भुत प्रसन्नता का अनुभव करती थी। इसकी अपनी बेटियाँ उसके पाँव दबाती थीं; किन्तु उनकी मुट्ठियों में वह रस नहीं था, जो "राजो" के हाथों में था। जब राजो उसकी पिंडलियाँ दबाती, तो उसे देवता मानती; किन्तु उसके चले जाने के पश्चात् ही कहा करती --"हरामज़ादी ने इस प्रकार से पाँव दबा-दबाकर उन सौदागर बच्चों को फांसा होगा ..?"

विचारों के अथाह समुन्द्र की लहरें सैय्यद को न मालूम कहाँ से कहाँ तक ले गई—एक दम ! वह चौंक पड़ा और सुराख पर आँख रख कर उसने फिर बाहर की ओर देखा। बिजली की चमक गली में ठिठुर रही थी। रात के सन्नाटे की गुनगुनाहट सुनाई दे रही थी, परन्तु राजो वहाँ न थी।

उसने खिड़की को खोला और बाहर झाँककर देखा। इस किनारे से उस किनारे तक रात की ठण्डी चल रही थी। ऐसा दीख पड़ता था कि बिजली के उस खम्बे तले कभी कोई खड़ा ही न था ? सफेद रोशनी में अद्भुत सन्नाटा मिला हुआ था। उसका दिल भर आया, उस का जीवन और अफीम खाने वाले व्यक्ति के मुख की आकृति गली से कितनी मिलती जुलती है ?

सैय्यद ने खिड़की के द्वार बन्द कर दिये और सोने के विचार से उसने रजाई अपने ऊपर डाली तो एक बार फिर ठण्डी उसकी हड्डियों तक पहुँचने लगी।

३

***

नया साल धूप सेंक रहा था। सैय्यद अभी तक बिस्तर में ही पड़ा था, केवल लेटा ही नहीं, अपितु गहरी नींद सो रहा था। वह रात भर जागता रहा, सात बजे के लगभग उसकी आँख लगी थी। यही कारण है कि बारह बजने पर भी उसने जागने का नाम न लिया था।

सिरहाने लगे घंटे ने भी बारह बार टन-टन की; किन्तु धातु की ध्वनि के स्थान पर उसके कानों ने राजो की आवाज सुनी, जैसे बड़ी दूर से आ रही हो। वह घबड़ा उठा और इस प्रकार जागने के हेतु वह ऐसा अनुभव करने लगा, मानो वह घबड़ा कर उठा हो। उसके रेशमी पाजामे ने फिसल कर उसकी क्षमता का परिचय दे ही दिया और इसकी हल्की-फुल्की निद्रा ने आँखें खोलीं, उसकी बौखलाहट में

और भी वृद्धि हुई, जब उसने राजो को अपने सामने खड़े देखा...
एक दम उसकी नजरें खिड़की की ओर उठीं, राजो की ओर मुड़ी
और वहाँ से दरवाजे की ओर घूमीं। फिर फैल कर अन्त में राजो
पर जम गईं राजो ने घड़ी की ओर देखा, और कहा—"मियाँ जी
बारह बज गए हैं। माँ जी, आपको बुलाती हैं, चाय तैयार है।"

यह कह कर राजो ने घंटे में चाबी देना शुरू कर दिया, इसके पश्चात्त उसने तिपाई पर से पानी का गिलास उठाया और चल दी।

इसका मतलब क्या है...? क्या राजो सौदागरों के यहाँ से नोकरी छोड़ कर यहाँ आ गई है। सैय्यद कुछ भी समझ नहीं पा रहा था कि क्या बात है? उसकी माँ बहुत कोमल हृदय की है। वह जानती थी, राजो का चरित्र ठीक नहीं; परन्तु इन सब बातों के बाद भी वह कुछ नहीं कहती थी। मन के विचार खुदा ही जानता है, चाहे हृदय में कुछ भी हो। सैय्यद अन्त में इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इसकी माँ भी खुदा-तरस है। खुदा तरसी इस हद तक इसके दिल पर छाई हुई थी कि वह किसी को भी बुरा नहीं कह सकती थी? जब उस बस्ती के किसी व्यक्ति ने चोरी की तब वह कहा करती थी, बेचारे को जरूरत ने मजबूर किया होगा।

राजो की बुराइयाँ सुनकर इसने कई बार कहा था। किसी ने आँख से तो इसकी बुराइयाँ देखी नहीं, क्या पता सब बदनाम करने के लिए किसी ने इसे सोच रखा हो...अल्लाह-ताला से हर समयडरना चाहिये, हम स्वयं ही बड़े भारी पापी हैं?

सैय्यद की माँ अपने आप को संसार की सब से बड़ी गुनाहगार स्त्री समझती थी। एक बार सैय्यद ने हँसी-हँसी में अपने माँ से कहा था—"माँ जी! आप हर समय कहती रहती हैं, मैं गुनाहगार हूँ, मैं

गुनाहगार हूँ, कहीं ऐसा न हो यम आप को सचमुच गुनाहगार समझकर नरक में धकेल दें। हाँ, यह तो बताओ उस समय भी आप यही कहेंगी, मैं गुनाहगार हूँ, मैं गुनाहगार हूँ।"

उसकी माँ पाँच वक्त बे-नागा नमाज पढ़ती थी, नियाज देती थी। मतलब यह कि वह सभी बातें मानती थी, जो एक गुनाहगार को माननी चाहिएँ ..।

सैय्यद अधिक समय तक सोच-विचार में डूब कर इस परिणाम पर पहुँचा; क्योंकि मेरी माँ नमाज़ पढ़ना और रोज़े रखना पसन्द करती है, इसी कारण वह अपने आपको गुनाहगार समझती है और अब नमाज-रोज़े पढ़ने की आदि बन गई है, इस लिए हर समय गुनाह का विचार भी इसकी आदत में घुस चुका है।

सैय्यद गुनाह और शबाब के चक्कर में अपने मस्तिष्क को फँसाने ही वाला था कि उसे राजो का विचार आया, जो अभी-अभी इसके कमरे से बाहर गई थी...दो बातें हो सकती हैं . या तो वह सौदागरों की नौकरी छोड़ कर हमारे यहाँ चली आई है और मेरी माँ ने जवानियों में एक और जवानी की वृद्धि करने के लिये उसे अपने पास रख लिया है, या फिर सौदागरों के ही पास है और वैसे ही इधर आ निकली है। जैसा कि इसकी आदत है, शीशे का गिलास उठा कर ले गई है, जो तिपाई पर व्यर्थ पड़ा इधर-उधर झाँक रहा था; किन्तु रात वाली घटना . ? उसने राजो के मुख पर जो इस घटना के बुझे हुए चिह्न देखने की चेष्टा की थी; परन्तु वह कोरी स्लेट के समान साफ़ थी।

एक दम सैय्यद का हृदय बिना किसी बात के घृणामय विचारों से लीन हो उठा ? उसे राजो से घृणा थी, वह अपने मस्तिष्क की तख़्ती पर सदा राजो की तस्वीर बनाया करता था। हमेशा इन मैले

रंगों से जो इस राजो के जीवन में दीख पड़ते थे। इसके कोमल हृदय को धक्का सा लगता, जब वह राजो को या सौदागर भाइयों को राजो के साथ बंधा हुआ देखता, गोश्त और छेछड़ों के रूप में। इससे पूर्व भी वह कई बार इस फैसले पर पहुँचता कि राजो से उसे घृणा है...वास्तव में यह चीज़ सैय्यद को बहुत ही दुःखमय कर देती कि "राजो" को अपने आप से घृणा नहीं थी। वह अपने आप से बहुत खुश थी... ।

एक बार सैय्यद से इस प्रकार गलती हो गई थी। जो अधमता से भी अधिक बुरी थी किन्तु जब इसके मस्तिष्क ने इसको फटकारा तो वह कई दिनों नहीं, कई महीनों तक अपने आप से पृथक रहा। इसका विचार था कि जिस प्रकार लोग बुरे कामों पर एक दूसरे को बुरी निगाहों से देखते हैं या वैसा बुरा उनसे व्यवहार करते हैं। इसी प्रकार ऐसे मौकों पर वह अपने आप से ऐसा बर्ताव करते हैं; किन्तु राजो या तो अपने आप से बेखबर थी या इसके अन्दर वह मस्तिष्क न था, जो तराज़ू का काम दे सके।

इस युवती के विषय में सैय्यद ने इतना अधिक सोचा कि अब केवल विचार पर ही गुस्सा आने लगा। वह इसके विषय में सोचना नहीं चाहता था, इसलिए कि इसमें कोई आकर्षण शक्ति न थी, जिस पर कुछ विचार किया जा सकता। वह अधम थी, सैय्यद उठ खड़ा हुआ, इस ढंग से राजो को अपने मस्तिष्क से झटका—"जैसे किसी घोड़े ने अपने शरीर से एक ही झुर-झुरी में सारी मक्खियाँ उड़ा दी हो, इसने सारी रात जागते हुए भी स्वयं को स्वयं अनुभव किया हो।"

भास्कर अपनी किरणें फैलाता हुआ, खिड़कियों, दरवाज़ों में फँस-फँस कर कमरे में पहुँचा और प्रकाश कर रहा था। जो बनावटी प्रतीत होता था। उसने खिड़कियाँ नहीं खोलीं और तिपाई के समीप

आराम कुर्सी पर बैठ गया। अभी वह कुर्सी पर पूर्णतया पाँव न फैला पाया था कि राजो ने कमरे में प्रवेश किया। बिना कहे या सुने, उसने एक-एक करके सभी खिड़कियाँ खोलीं और झाड़ पोंछ कर दी। सैय्यद इसके नटखटपन को ध्यान पूर्वक देखता रहा। राजो के मोटे-मोटे हाथों की मोटी-मोटी कलाइयों में ज़रा भी आकर्षण शक्ति न थी... शीशे के फूलदान को ऐसे ढंग से इस अदा से साफ किया, जिस तरह लोहे के कलमदान को साफ किया जाता है। झाड़न द्वारा दगने तस्वीरें जिन पर गर्द ने अपना पूर्ण अधिकार जमा रखा था, साफ कीं, कानस पर रखी सभी वस्तुओं को एक-एक करके उस ने साफ किया, इस ढंग से जिसमें आहट न हो। जब वह बातें करती तो ऐसा प्रतीत होता कि इसकी आवाज़ रूई के नरम-नरम गालों में लिपटी हुई हो। कान के पर्दे इसकी आवाज़ से न टकरा पाते थे; केवल बाहर ही छूकर वापस आ जाती थी। इसकी प्रत्येक आवाज़ और अन्दाज ने रबड़ सोल जूते पहन रखे थे। सैय्यद इसे देखता रहा ..नहीं उसे सुनने की चेष्टा करता रहा।

राजो ने नीलगगन के समान रंग का ऊनी कमीज पहन रखा था, जो कुहनियों पर से फटा हुआ था। यह कमीज शायद सौदागरों के सब से बड़े बच्चे ने दिया हो। इसके ऊपर गरम स्वेटर पहन रखा था, जिस पर जगह-जगह मैल के गोल-गोल निशान दीख रहे थे। खादी की सलवार अधिक प्रयोग के कारण सलवार के रूप में नहीं दीख पड़ती थी, यह प्रतीत होता था कि इसने अपने टाँगों में चादर लिपटा रखी हो। अधिक समय तक ध्यान-पूर्वक देखने के पश्चात इस सलवार के पहुँचे दीख पड़ते थे, जो इतने खुले थे कि पाँव बिलकुल छुप जाने के कारण नहीं दीख पाते थे।

सैय्यद इसके पहुँचों की ओर देखता रहा कि राजो मुड़ी, यह

कह कर अपने काम में लग गई—"आपको चाय तैयार है, माँ जी आपकी राह देख रही हैं।"

सैय्यद का मन नहीं चाहता था कि इस से बात भी की जाये; किन्तु जाने क्यों उसने पूछ लिया—"चायबनाने के लिये, इससे किसने कहा था ?"

राजो ने पलट कर आश्चर्य-जनक दृष्टि से उसकी ओर देखा। आपने...अभी-अभी तो आपने कहा था कि हाँ ! तैयार की जाये... सैय्यद कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ, बगैर किसी झकझक के, उसने कभी ऐसा नहीं कहा था। प्रातः की चाय साढ़े बारह बजे कौन पीता है ? अब नाश्ता करूँगा तो दोपहर का खाना शाम को खाऊँगा . और रात का खाना...राजो हँस पड़ी—"रात का खाना.. प्रातः को।"

सैय्यद एक दम संजीदा हो गया और बोला—"इसमें हँसने की कौन-सी बात है ? जाओ माँ जी से कह दो, मैं चाय नहीं पीऊँगा, भोजन करूँगा...भोजन तैयार है क्या ?"

राजो अपने मुख पर से हँसी के उन चिह्नों को मिटाने की चेष्टा करते हुए भी न मिटा सकी। इसकी मुखाकृति इस प्रकार की थी, मानो ठंडे पानी में रंग घोल कर ऊनी बस्त्रों पर चढ़ाया जाये और वह न चढ़े। इसने धीरे से उत्तर दिया—"जी भोजन तैयार है...मैं अभी-अभी माँ जी से कहे देती हूँ कि आप चाय नहीं, भोजन करेंगे।" यह कह कर वह जल्दी से दरवाजे की ओर बढ़ी।

"देखो"—सैय्यद ने उसे टोक कर कहा—"माँ जी से कहना कि... मैं चाय नहीं पीऊँगा, भोजन करूँगा..." मैं सारी रात जागता रहा हूँ। समझ में नहीं आता मेरी नींद को क्या हो गया था ? मुहल्ले में शोर हो तो मुझे बिल्कुल भी नींद नहीं आती, रात बाहर, खुदा ही

जानता है क्या गड़बड़ हो रही थी ?...हाँ तो मैं और कुछ न लेकर केवल एक कप चाय ही लूँगा और उसके बाद भोजन करूँगा, अर्थात् नियम-पूर्वक समय पर ..माँ जी कहाँ हैं ? मैं स्वयं पता कर लूँगा .. किन्तु तुम .तुम यह क्या कर रही हो, मेरा आशय है कि मेरे कमरे की सफाई करने को किसने कहा है, यानी तुम यहाँ कैसे आई हो ?... तुम तो सौदागरों के यहाँ थीं ।"

एक ही सांस में सैय्यद सारी बातें कह गया और चोर नज़रों से उसके मुख की ओर निहारता रहा । लाली की रेखा का मध्यम सा उसे दीख पड़ा था । जब बाहर गली में गड़बड़ की ओर संकेत किया था; परन्तु इसके पश्चात्त इसके मुख-मंडल में कोई परिवर्तन न देख सका, किन्तु हँसी ने इसके मुख पर जो फैलाव पैदा कर दिया था, वह अभी तक इसके साथ घटी घटनाएँ देख रहा था ।

राजो ने कोई उत्तर न दिया और कमरे से बाहर चली गई, जैसे इससे कुछ पूछा ही न हो । इस पर सैय्यद को बहुत गुस्सा आया, इसमें सन्देह नहीं कि मैंने कुछ पूछने के लिए इससे बातें नहीं की, किन्तु बिना विचार के वैसे ही कहता चला गया, जिनका कोई सम्बन्ध नहीं था ? परन्तु मेरी इच्छा थी, इच्छा क्या मुझे पूर्णतया विश्वास था कि वह घबरायेगी और रात की घटना उसके मुख से फूट निकलेगी; परन्तु वह स्त्री है या ..या क्या है ?

सैय्यद इसकी बाबत विचार नहीं करना चाहता था; किन्तु कोई न कोई बात ऐसे आकर सामने खड़ी हो जाती कि इसे फिर सोच विचार करना पड़ जाता था । यह स्त्री उसके जीवन में ख्वाम-ख्वाह दाखिल होती चली आ रहीं थी । यह दाखिला सैय्यद को अच्छा न लगा, चुनांचे इसने निश्चय कर लिया कि वह इसे अपने घर में न रहने देगा ।

जब वह अपनी माता से रसोई-घर में मिला, तब वह राजो के

विषय में कुछ चाहता हुआ भी न पूछ सका। उसकी माँ ने जो उसे बहुत ही प्यार करती थी चाय का प्याला बना कर कहा—"बेटा रात तेरे दुश्मनों को क्यों नींद नहीं आई ? मुझे राजो ने अभी कहा है कि गली में कुछ गड़-बड़ थी। इस कारण तू सो न सका ..मैंने तो कुछ भी नहीं सुना.. मैं कहती हूँ ! यदि तुम मेरे वाले कमरे में सोया करो तो क्या हर्ज है ? मेरी भी घबराहट दूर हो जायेगी"—"ले बाबा मैं कुछ नहीं कहती, जहाँ चाहे सो जाया कर अल्लाह तेरी देख-भाल करेगा . ले चाय पी...मैं तुझ से कुछ नहीं कहती . ।"

वास्तव में सैय्यद राजो के विषय में कुछ कहना चाहता था, किन्तु इसकी माँ ने समझा कि वह यही कहेगा, माँ जी आप तो वैसे ही घबराया करती हैं। मैं अकेली ही सोने का आदि हूँ। किन्तु वह चुप हो रहा। उधर उसकी माँ ने उसकी हठ पर अधिक वाद-विवाद न किया। राजो चूल्हे के समीप शान्त चित बैठी सब कुछ...देखती रही।

४

✿✿✿

सैय्यद के घर राजो को नौकरी करते एक महीना बीत गया; परन्तु इस एक महीने के लम्बे समय में भी वह माँ से कुछ कह न सका, जो कहना चाहता था कि राजो को निकाल दो। अब साल के दूसरे महीने का प्रारम्भ था। सर्दी धीरे-धीरे ताप में ढल कर, निराला रूप धारण कर रही थी। दिन और रात बसन्त की प्रभात, मीठे-मीठे गीत, मीठी-मीठी सौगात, मन को मोह लेती है। पंजाब में यह महीना बहुत ही अच्छा माना जाता है। सवेरे जब वह सैर को जाता, तो हल्की-फुल्की खुश्क वायु का सेवन काफी देर तक करता रहता—उसे प्रत्येक वस्तु सुन्दर दीख पड़ती..।

इन्हीं दिनों की बात है कि एक दिन वह कम्पनी बाग से सवेरे सैर से वापिस घर आया, तो उसे अपना शरीर गर्म-सा महसूस हुआ। बिस्तर पर लेटते ही ज्वर हो गया। उसके पुराने मित्र ने भी अपना

करिश्मा दिखाया, यानी जुकाम भी बड़े ज़ोर से हो गया और उसका नाक बेजान-सी हो गई। दूसरे दिन खाँसी भी आ गई और तीसरे दिन छाती में दर्द और धीरे-धीरे बुखार १०५ दरजे तक पहुँच गया। उसकी माँ ने पहले दिन ही डाक्टर को बुलाया था; परन्तु उसकी दवाई से कुछ लाभ न हुआ।

आश्चर्यजनक बात है, जब सैय्यद को बुखार अधिक चढ़ जाता, तो उसका दिमाग़ थोड़ा तेज हो जाता। ऐसी-ऐसी बातें उसके दिमाग़ में आतीं, जो वह वैसे कभी न सोच पाता था। विचार की शक्ति उतनी तेज हो जाती कि शरीर में बेचैनी पैदा कर देती कि वह घबड़ा उठता, उसके हृदय पर नये-चक्कर की रेखाएँ अङ्कित हो जातीं, जब उसे अधिक बुखार चढ़ता, जिनका विचार वह मामूली अवस्था से न कर पाता था। वह अनुभव करता कि उसके सभी विचार सान पर लगा कर नोकीले और तेज हो गए हैं ..।

बुखार की अवस्था में वह संसार की सभी समस्याओं पर विचार करता, एक नई रोशनी में नए अनोखे अन्दाज़ में वह संसार की बुरी से बुरी वस्तु पर विचार करता, चिट्ठियों को उठाकर नील गगन पर नन्हें-नन्हें इन चमकते हुए सितारों के साथ चिपटा देता और उन सितारों को तोड़ पृथ्वी पर फेंक देता।

बुखार १०५ डिग्री से कुछ बढ़ा, तब सैय्यद के दिमाग़ का इतिहास-पृष्ठ उलटने लगा। क्षण भर में सैंकड़ों नहीं, हज़ारों पृष्ट उल्टे और प्रसिद्ध-प्रसिद्ध घटनाएँ ऊपर-तले खट-खट करते, उसके दिमाग़ में से होते हुए निकल गए। बुखार कुछ और बढ़ा, तो पानीपत का युद्ध, ताजमहल के श्वेत भवन में लोप हो गया, तब कुतुब साहब की लाठ कटी हुई भुजा के समान बन गई और धीरे-धीरे चारों ओर धुन्धलाहट ही धुन्धलाहट छा गई।

एकदम जोर का धमाका हुआ और धुन्धलाहट में से महमूद ग़जनी बड़ी तेजी के साथ घोड़े पर चढ़ा हुआ अपनी सेना के साथ प्रगट हुआ और महमूद ग़जनवी का घोड़ा सोमनाथ के जगमग-जगमग करते मन्दिर के स्वर्णमय द्वार पर जा रुका। महमूद ग़जनवी ने उन टूटे हुए हीरे और मोतियों के ढ़ेर को देखा और उसकी आँखें तमतमा उठीं, फिर उसने सोने की बनी उस मूर्ती को निहारा तब उसका हृदय धड़कने लगा—राजो . महमूद ग़जनवी ने सोचा यह साली राजो कहाँ से टपक पड़ी उसके राज्य में ? उस नाम की कौन स्त्री है क्या वह इसे जानता है . क्या वह इससे प्यार करता है . प्यार का विचार आते ही महमूद गजनवी ने जोर का ठठाहाका मारा . महमूद गजनवी और प्यार ! . महमूद गजनवी को अपने बनाए हुए गुलाम से प्यार है . और फिर इस नौकर राजो से कैसे हो सकता है ?

महमूद गजनवी ने उस स्वर्ण मूर्ति पर चोट पर चोट लगानी शुरू कर दी। आशय कि जब पेट पर लगा, तब वह फट गया और इसमें से शाहबुद्दीन की खीर और फालुदा निकलने लगा। महमूद गजनवी ने देखा तो हथोड़ा उठाकर अपने सिर पर दे मारा।

सैय्यद का सिर फट रहा था। महमूद गजनवी के सिर पर जो हथोड़ा पड़ा था, उसका धमाका उसके सिर पर गूँज रहा था। जब उसने करवट ली तो छाती में कोई ठण्डी-ठण्डी वस्तु के रेंगने का अनुभव हुआ ..सोमनाथ और स्वर्णमयी मूर्ति उस के दिमाग़ से निकल गई धीरे-धीरे उसने भट्टी के अंगारों के सामने जलती हुई अपनी आँखें खोलीं...राजो, फर्श पर बैठी पानी में भिगो-भिगो कर कपड़े की गद्दियाँ उसके माथे पर रख रही थी।

जब राजो ने माथे पर से कपड़ा उतारने का प्रयत्न किया तब सैय्यद ने उसका हाथ पकड़ लिया और हृदय पर रख कर धीरे-धीरे

प्यार से अपने हाथ द्वारा उन हाथों को प्यार करने लगा। उसकी लाल-लाल आँखें दो अँगारे बन कर देर तक राजो की ओर देखती रहीं। राजो उसकी आँखों का सामना न कर सकी और अपने हाथ छुड़ा कर काम में लग गई।

इसके बाद वह बिस्तर से उठ कर बैठ गया और कहने लगा—"राजो ..राजो ..इधर मेरी ओर देखो। महमूद गज़नवी...इसका मस्तिष्क अशान्त होने वाला ही था, कि उसने अपने को संभालते हुए, महमूद गजनवी के विचार को झटक कर पुन: कहा—"इधर मेरी ओर देखो !" जानती हो, मै तुम्हारे प्यार मे बँधा हुआ हूँ, बहुत बुरी तरह से तुम्हारे प्यार में फँसा हुआ हूँ। इस प्रकार फंस गया हूँ, मानो जैसे कोई दलदल में फँस गया हो ..मै जानता हूँ कि तुम प्यार के लायक नहीं हो; किन्तु मैं सब कुछ जानते हुए भी तुम से प्यार करता हूँ। धिक्कार है मुझ पर...अच्छा छोड़ो इन बातों को—इधर मेरी ओर देखो। खुदा के लिए मुझे तंग न करो, मैं बुखार में इतना नहीं जल रहा राजो—राजो मैं—मैं उसकी विचार शृंखला टूट गई और उसने 'मुकन्द लाल भाटिया' से कुनीन के नुक्से पर वाद-विवाद शुरू कर दिया।

"डा० भाटिया, मैं आप को कैसे समझाऊं, यह कुनीन बहुत नुक़सान देने वाली वस्तु है। मैं मानता हूँ कुछ समय के लिये मलेरिया के कीटाणुओं को मार देती; किन्तु प्राकृतिक रूप में बीमारी दूर नहीं कर सकती। इसके अलावा इसकी तासीर बहुत ही खुश्क और गरम है, इसी कारण मेरे कान बन्द हो गए हैं और मेरा दिमाग़ भी बन्द हो गया है। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि किसी ने मेरे कानों और दिमाग़ में स्याही-चूस ठोंस दिए हों। मैं अब ज़रा भी कुनीन नहीं खाऊँगा और गजनवी के बुत के समान सोमानाथ राजो...तुम

सोमनाथ नहीं जाओगी—मेरे माथे पर हाथ रखो ..आह . आह . यह क्या बदतमीजी है, मैं ..मैं...मेरे दिमाग़ में अनगिनत विचार उठ रहे हैं ? माँ जी आप क्यों हैरान हो रही हैं, मुझे राजो से प्यार है, हाँ ! हाँ ! ! इस राजो से, जो सौदागरों के यहां नौकर थी और जो अब आपके पास नौकरी कर रही है । आप नही जानती, इसने मुझे कितना जलील बना दिया है ? इसलिये कि मैं इसके प्यार में फँसा हुआ हूँ । यह प्यार नहीं, हीजड़ापन है—दुःखी हीजड़े से भी बढ़ कर है और इसका इलाज नहीं है । मुझे इन मुसीबतों को सहन करना पड़ेगा, और सारी गली का कूड़ा अपने सिर पर उठाना होगा, गन्दी नाली में हाथ डालने होंगे, यह सब कुछ होकर रहेगा—यह सब कुछ होकर रहेगा । धीरे-धीरे सैय्यद का स्वर बैठता गया और बेहोशी के चिह्न दीखने लगे । उसकी आँखें गीली थीं; किन्तु फिर भी ऐसा अनुभव होता था कि पलकों पर बोझ सा आ पड़ा है । राजो पलँग के समीप उसकी बे-जोड़ ध्वनि को सुनती रही; परन्तु उस पर इन बातों का कुछ भी प्रभाव न पड़ सका ..और वह इस प्रकार के बहुत से रोगियों की सेवा कर चुकी थी ।

बुखार की हालत में जब उसने अपने प्यार का चिट्ठा राजो को सुनाया, तो राजो ने क्या अनुभव किया ? इसके विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता । इसलिये उसका गोश्त से भरा हुआ चेहरा विचारों से बिल्कुल खाली था । हो सकता है कि उसके हृदय के किसी हिस्से में थोड़ी बहुत सरसराहट पैदा हुई हो; किन्तु मोटे माँस की जिल्द की तह से निकल कर बाहर न आई हो, या न आ सकी ।

इसने रूमाल निचोड़ा और ताजे पानी में भिगो कर उसके माथे पर रखने के लिये उठी । अब की बार इसे इस कारण से उठना पड़ा कि सैय्यद ने करवट बदल ली थीं । अब इसने सैय्यद का सिर धीरे से

इधर मोड़ कर माथे पर भिगा हुआ रूमाल रख दिया। अचानक ही सैय्यद की आँखें जो अर्द्ध नींद के पर्दे में पड़ी हुई थी, ऐसे खुलीं, जिस प्रकार लाल-लाल जख्मों के मुँह टाँके उधड़ जाने पर खुल जाती हैं। उसने क्षण भर के लिये राजो के झुके हुए मुख की ओर देखा, जिस पर कपोल थोड़े से नीचे की ओर लुढक आए थे। एक दम, उसने राजो को अपनी भुजाओं में जकड़ कर इतने जोर से सीने के साथ लगाया कि उसकी रीड़ की हड्डी कड़-कड़ बोल उठी। उठ कर उसने राजो को अपनी रांनो पर लिटा लिया और इसके मोटे-मोटे गुद-गुदे अधरों पर इतने जोर से अपने तपते हुए अधरों को रखा, जैसे वह गरम-गरम लोहे से इसे दाग़ देना चाहता हो . ?

सैय्यद की भुजाओं में वह इस ढंग से फँसी हुई थी कि लाख प्रयत्न करने पर भी अपने को स्वतन्त्र न करा सकी। सैय्यद के अधर देर तक इसके अधरों पर प्रैस करते रहे और फिर एक ही झटके में हाँफते-हाँफते उसने इसको अपने से दूर कर दिया और उठ कर ऐसे बैठ गया, मानो उसने कोई बुरा स्वप्न देखा है ? राजो एक ओर सिमट गई, वह डर गई थी। उसके पेपड़ी-जमे अधर फड़क रहे थे।

राजो ने तेज निगाहों से देखा ! तब वह इस पर बरस पड़ा और कहने लगा—"तुम यहाँ क्या कर रही हो, जाओ ! जाओ !" यह कहते-कहते सैय्यद ने अपने सिर को दोनों हाथों से थाम लिया, मानो वह गिरने लगा हो। इसके बाद वह लेट गया और धीरे-धीरे बुड़बड़ाने लगा, राजो...मुझे माफ़ कर दो, मुझे माफ़ कर दो, मुझे कुछ भी मालूम नहीं, मैं क्या कर रहा हूँ या कह रहा हूँ, बस केवल एक बात ही ज़ानता हूँ कि मुझे पागल-पन की हद से भी अधिक तुम से प्यार है...ओह मेरे अल्लाह, हाँ मुझे तुम से प्यार है, इसलिये नहीं कि तुम प्यार करने योग्य हो, इसलिये नहीं तुम मुझ से प्यार करती हो...फिर

किस लिये ..काश ! मैं इसका उत्तर देने योग्य होता। मैं तुमसे प्यार करता हूँ, इसलिये कि तुम घृणा के लायक हो, तुम स्त्री नहीं हो एक मालूम स्त्री की, एक बहुत बडी बिल्डिंग हो, परन्तु मुझे तुम्हारे सभी कमरों मे प्यार है इस कारण कि वे अस्त-व्यस्त हैं, गन्दे हैं ..मुझे तुम से प्यार है। क्या यह अनोखी बात नहीं। यह कह कर सैय्यद मुस्कराने लगा।

राजो चुप थी, उस पर अभी तक सैय्यद की जकडन और भयंकर चुम्बन का प्रभाव था। वह उठ कर कमरे से बाहर जाने का विचार कर ही रही थी कि सैय्यद ने फिर उसी प्रकार बुड़बड़ाना शुरू कर दिया। राजो ने उसकी ओर धडकते हुए दिल से देखा। उसकी आँखें गीली थी। वह निष्पक्ष व्यक्ति से बातें कर रहा था। तुम जालिम हो, मनुष्य नहीं अमनुष्य हो, मान लिया कि वह भी तुम्हारी तरह जंगली है; परन्तु फिर भी स्त्री है स्त्री यदि टुकड़े-टुकड़े भी हो जावे तब भी स्त्री ही कहलायेगी। भैंस और स्त्री में तुम कोई अन्तर नहीं समझते, किन्तु खुदा के लिये जाओ और इसे अन्दर ले आओ। बाहर शीत में और बिना कपड़ों के इसका सारा खून जम गया होगा। मैं पूछता हूँ इसके साथ तुम्हारी लड़ाई किस बात पर हुई...खम्बे के नीचे केवल तुम बनियान डाले खड़ी थी और तुम...तुम...लानत हो तुम पर . तुम समझते क्यों नहीं राजो स्त्री है...पश्मीने का थान नहीं, जिसे तुम चर्ख चढ़ाते रहो ..!

पहली बार राजो को मालूम हुआ कि उस रात वाले मामले को माँ जी का लड़का भी जानता है। इस कारण भी अधिक घबराई, लोग इसके और सौदागर भाइयों के विषय में तरह-तरह की बातें करते थे; परन्तु वह जानती थी कि किसी ने भी इसको अपनी आँखों से नहीं देखा, इस कारण वह भयभीत न हुई थी, लेकिन अब इसके समक्ष

के विषय में आज तक इसने नहीं सोचा था। वह केवल इतना ही जानती थी कि स्वर्गीय मियाँ ग़ुलाम रसूल का लड़का किसी से अधिक बातें नही करता और सारा-सारा दिन बैठक में मोटी-मोटी पुस्तकें पढ़ता रहता है और वैसे गली के दूसरे लड़कों के विषय में तरह-तरह की बातें सुनती थी, किन्तु इसके विषय में केवल इतना ही सुना था कि बड़ा गरम मिज़ाज है और स्वर्गीय ग़ुलाम रसूल से भी अधिक इसे अपने खानदानी होने का अभिमान है। इसके अलावा वह कुछ न जानती थी; किन्तु आज इसे मालूम हुआ कि वह इसके विषय में सब कुछ जानता है और...और इस से प्यार भी करता है...।

उसके प्यार का होना राजो के लिए दुःखदाई न था; किन्तु उसकी वह बात वास्तव में इसे कष्ट पहुँचा रही थी कि उस रात जब वह गुस्से के कारण दीवानी हो रही थी, तब उसने सब कुछ देख लिया, यह शर्म की बात थी। अधिक सोच-विचार के बाद उसके हृदय में यह भाव उत्पन्न हुए कि माँ जी का बड़ा लड़का वह सब कुछ भूल जाये और इसने यह कहना शुरू किया—"खुदा कसम!...अल्लाह कसम... पीर दस्तगीर की कसम...यह सब झूठ है, मैं मस्जिद में कुरान उठाने के लिए तैयार हूँ। जो कुछ आप समझते हैं, बिलकुल गलत है, मैने अपनी मरजी से उनकी नौकरी छोड़ दी है। वहाँ काम अधिक है, मैं दिन रात कैसे काम कर सकती हूँ? चार नौकरों काकाम मुझ अकेली से भला कैसे हो सकता है, मियाँ जी?"

सैय्यद बुखार के कारण बेहोश पड़ा था। राजो अपने विचार के अनुसार जब सब कुछ कह चुकी, तब उसके दिल का बोझ कुछ हल्का हुआ; लेकिन इसने सोचा—एक ही सांस में जितनी झूठी कसमें खाई हैं, शायद नाकाफ़ी हों और इसने फिर कहा—"मियाँ जी पाक परवर-

दिगार की कसम...मरते समय मुझे 'कलमा' नसीब न हो। यदि मैं झूठ बोलूँ . यह सब झूठ है, मैं कोई ऐसी-वैसी थोड़े ही हूँ। मुझ से अधिक काम नहीं हो सकता। इसलिए मैंने उनको छोड़ दिया। इतनी सी बात का बतंगड़ बन जाए, तो इसमें मेरा क्या कसूर।"

यह कहने के बाद, मानो इसने अपना बोझा उतार दिया और पास के कमरे से बाहर चली जाती, तभी सैय्यद ने आँखें खोलीं और पानी माँगा। राजो ने जल्दी से उसके हाथ में पानी का गिलास दे दिया और पास ही खड़ी रही, ताकि वापस लेकर तिपाई पर रख सके।

एक ही सांस में गिलास का गिलास पीने के बाद उसकी प्यास को थोड़ा बहुत सहारा मिला। खाली गिलास देकर राजो की ओर सिर उठाकर देखा। कुछ कहना चाहा; किन्तु चुप हो गया और तकिए पर सिर रखकर लेट गया।

अब वह होश में था। उसने बेतकल्लुफी के साथ राजो को पुकारा—"राजो!"

राजो ने धीरे से उत्तर दिया—"जी।"

"देखो! माँ जी को यहाँ भेज दो।"

यह सुनकर राजो ने विचार किया कि वह रात की सारी बात माँ जी को सुनाना चाहता है। तभी राजो ने फिर कसमें खाना शुरू कर दिया—"मियाँ जी . कुरान मजीद की कसम, अल्लाह-पाक की कसम और कोई बात नहीं थी, मेरा उनसे केवल इसी बात पर झगड़ा हुआ कि मैं मोल की या खरीद की नहीं आई हूँ, जो सारा दिन-रात काम करती रहूँ...आपने मेरे मुंह से इसके अलावा और क्या सुना था?"

बिस्तर पर सैय्यद ने कठिनता से करवट बदली। ठंडे पानी ने उसके सारे शरीर में कंपकंपाहट-सी दौड़ा दी। राजो की ओर आश्चर्य-जनक दृष्टि से देखा और पूछा—"क्या कह रही हो तुम ?" फिर क्षण भर में ही, उसे जब ख्याल आया कि बेहोशी में इससे अनगिनत बातें कर चुका है और अपना प्यार भी इस पर प्रगट कर चुका है, तो उसे अपने आप पर बहुत गुस्सा आया। मलेरिया के कारण उसके मुंह का स्वाद भी बिगड़ा हुआ था, अब इस गलती के कारण ने उसके मुँह में अधिक कड़ुवाहट पैदा कर दी और उसको अपने आप से घृणा होने लगी।

मुझे राजो से बातें नहीं करनी चाहिए थीं। राजो पर अपने प्यार को प्रगट, किसी भी अवस्था में नहीं करना चाहिए था ? इसलिए कि वह इसके योग्य ही नहीं। मैंने राजो को अपने हृदय के भाव नहीं बताए; अपितु अपने सारे शरीर को एक गन्दी-नाली में फेंक दिया है। इसमें कोई शक की बात नहीं, मैंने नीम-बेहोशी की अवस्था में यह गलती की, यदि मैं कोशिश करता, तो अपनी भावुकता को रोक सकता था, मुझ में इतनी क्षमता है; किन्तु खेद इस बात का है कि विचार पहले नहीं आया और इसी कारण अनाप-शनाप बकता रहा।

जो कुछ वह राजो से कह चुका था, उसका शब्द तो सैय्यद को याद नहीं था; परन्तु वह विचार कर सकता था कि उसने इससे क्या कहा होगा ? वह इससे पूर्व विचारों के अथाह समुन्द्र में डूबकर राजो से कई बार बातें कर चुका था और वह लज्जा का अनुभव कर रहा था; परन्तु वह सचमुच इससे बातें कर चुका था और इस पर अपने प्यार को प्रगट किया था। दूसरे शब्दों में इसको वह राज भी बता चुका था; जिन से वह स्वयं भी दूर रहना चाहता था...यह सैय्यद के जीवन की सब से बड़ी धारणा थी।

राजो उसके सन्मुख खड़ी थी। मलेरिया उस पर अपने बर्फ़ीले हाथ फेर रहा था। एक ऐसी झुरझुराहट, उसकी रग और रेशे में कनखजूरे के समान रेंग रही थी और उसके हृदय में एक ऐसी तलखी उत्पन्न हो रही थी; जो उसने इससे पूर्व कभी नहीं महसूस की थी। वह चाहता था कि उसे एकदम, उसे इतना बुखार चढ़े कि बेहोश हो जाए, ताकि जो कुछ हुआ है, उसका, उसके हृदय से प्रभाव कुछ समय तक, दूर हो जाए।

बड़ी कठिनता से उसने स्वयं को राजो से यह कहने का साहस किया—"जाओ माँ जी को यहाँ भेज दो, मैं यहाँ मर रहा हूँ, कुछ मेरा भी तो ख्याल करें।" इस पर राजो ने धीरे से कहा—"आप ही के लिए सौ नकल पढ़ रही हैं। मैं जाकर देखती हूँ खत्म हुए हैं या नहीं।" "...जाओ ..खुदा के लिए जाओ .." यह कहकर सैय्यद ने रज़ाई अपने ऊपर डाल ली और अधिक ठंडक होने के कारण, जो मलेरिया के ताज़े हमले का चिह्न थी। ज़ोर-ज़ोर से काँपना शुरू कर दिया।

राजो कमरे से बाहर चली गई।

५

***

क्योंकि सर्दी अधिक थी, इसलिए ठीक देख-भाल न होने के कारण सैय्यद को निमोनिया हो गया। उसकी हालत ज्यादा खराब हो गई। उसकी माँ बेचारी क्या कर सकती थी? दिन-रात दुआ माँगने में लीन रहती या अपने बेटे के पास बैठी रहती थी। राजो ने भी सेवा करने में कोई कसर न उठा रखी थी; किन्तु स्वस्थ होने के स्थान पर उलटा रोगी अधिक अस्वस्थ होने लगा...। सैय्यद के मन में कई बार आया कि माँ से स्पष्ट शब्दों में कह दे कि राजो का यहाँ रहना, उसे अच्छा नहीं लगता; परन्तु प्रयत्न करने पर भी वह न कह सका। इस अवस्था में, वह जो कुछ भी अनुभव कर रहा था, इस घर के कारण भावनाओं में और वृद्धि हुई।

डा० मुकन्दलाल भाटिया ने यह सुझाव रखा था कि उसे जल्दी से जल्दी हस्पताल में दाखिल करवा दिया जाये, तो ठीक रहेगा। वहाँ

रोगी की देख-भाल भी ठीक प्रकार से हो सकेगी और दवा-दारू भी समय पर मिलती रहेगी, इसके अलावा समय कुसमय अच्छा डाक्टर भी मिल सकेगा; किन्तु उसकी माँ न मानी; क्योंकि हस्पताल के नाम से उसे घृणा थी; परन्तु जब उसके लाडले बेटे ने हस्पताल में दाखिल होने का निश्चय किया, तब हृदय पर पत्थर रख कर चुप हो रही; क्योंकि आज तक उसने अपने बेटे की कोई भी बात को नहीं ठुकराया था ? चुनांचे निमोनिया होने के दूसरे दिन ही डा० मुकन्द लाल भाटिया बड़ी हिफाजत से सिविल हस्पताल (Civil Hospital) में ले गये और वहाँ सुविधा-जनक वार्ड में दाखिल करा दिया।

हस्पताल में सैय्यद कुछ ही दिनों में स्वस्थ हो गया। निमोनिया का हमला बड़ा भारी था, फिर भी वह बच गया और बुखार आदि सभी दूर हो गए। हस्पताल के कमरे में; जिसकी प्रत्येक वस्तु सफेद थी उसकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हुई, चूँकि राजो वहाँ न थी। इस कारण उसके हृदय पर जो बोझ सा आ पड़ा था, बहुत कुछ हद तक दूर हो गया और वह पूर्ण-स्वस्थ होने की प्रतीक्षा बड़ी बेचैनी से करने लगा; लेकिन यह निश्चय था, वह घर में नहीं रहेगा, जहाँ राजो रहेगी। वह इस स्त्री का रहना सहन नहीं कर सकता था। इसको देखते ही उसके मन में खलबली मच जाती थी। इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि वह उसके प्रेम में बुरी तरह गिरफ्तार हो गया था; किन्तु वह उसके प्रेम को सदा के लिये समाप्त कर देना चाहता था...।

मालूम था कि यह काम बहुत कठिन है; परन्तु वह इस कार्य में पूर्ण-रूप से सफलता प्राप्त करने के लिये चेष्टा कर रहा था और उसने इस बीच में स्वयं को धीरे-धीरे इस बात का विश्वास भी दिलाया था कि राजो को भूल कर, वह ऐसे काम करेगा; जिन्हें आज तक कोई भी न कर सका हो ?

हस्पताल में दाखिल होने के आठ दिन बाद, अधिक कमजोरी होते हुए भी सैय्यद अपने आपको बहुत, स्वस्थ समझने लगा। सवेरे जब सफेद-पोश नर्स ने उसके बुखार को थर्मामीटर द्वारा देखा, तब सैय्यद ने मुस्करा कर कहा—"नर्स ! मैं तुम्हारा आभारी हूँ, तुम ने मेरी बहुत सेवा की है। काश ! मैं इसका इनाम तुम्हें प्रेम के रूप में दे सकता।" एंग्लो इंडियन नर्स के अधरों पर एक पतली-सी मुस्कराहट फैल गई, आँखों की पुतलियों को मिचका कर, उसने कहा—"तो क्यों नहीं करता करो ?"

उसने बगल से थर्मामीटर निकाल कर नर्स को दिया और उत्तर में कहा—"मैं हृदय के द्वार सदा के लिये बन्द कर चुका हूँ, तुम ने इस समय खटखटाया है। जब घर का मालिक हमेशा के लिये सो गया है, तो मुझे खेद है कि तुम इस योग्य हो कि तुम से आइडो-फार्म की तेज बू समेत प्यार किया जाये; लेकिन इट् इज़ टू लेट माई डियर।"

नर्स हँस पड़ी और ऐसा लगा कि हार का धागा टूटने के कारण मोती इधर-उधर बिखर गए हैं। इसके दाँत बहुत सफेद और चमकीले थे...सैय्यद नर्सों की कमजोरी से जानकार था। इसलिये उसने बड़े मज़े के साथ कहा—"नर्स ! तुम अभी पूरी जवान कहाँ हुई हो...? बहार आने दो, एक छोड़ पूरी दर्जन तुम्हें चूसने के लिए चक्कर काटेंगी ..लेकिन उस समय मुझे भूलना नहीं, याद कर लेना, जिसने हस्पताल में तुम्हारी पिंडलियों की एक बार प्रशंसा की थी और कहा था कि यदि चार होतीं, तो मैं अपने पलंग के पायों के स्थान पर लगाता।"

नर्स ने तख्ती पर टैम्परेचर नोट किया और "यू नौटी ब्वाय" कह कर अपनी पिंडलियों की ओर दाद भरी दृष्टि से देखती हुई बाहर चली गई।

सैय्यद बहुत ही प्रसन्न था या समझ लें कि वह अपने आप को प्रसन्न करने की चेष्टा कर रहा था। वास्तव में वह राजो को किसी न किसी ढंग से भूल जाना चाहता था ? कई बार उसको उन बातों का विचार आता, जो उसने बुखार की हालत में की थीं; किन्तु वह तुरन्त ही दूसरे विचारों के नीचे उन्हें दबा देता।

हस्पताल में केवल चार दिन शेष रहना था, इसमें कोई संशय नहीं कि मलेरिया और निमोनिया ने उसकी शक्ति क्षीण कर दी थी, फिर भी वह कमजोरी का ज़रा ध्यान न करता था। इसके उल्टे वह प्रसन्न होता, अब उसे ऐसा अनुभव होता था कि आवश्यक से आवश्यक बोझ उसके ऊपर से उठ गया है, विचारों में अब पहला खिचाव नहीं था, न ही विचारों में गन्दगी ही थी। बुखार और निमोनिया ने फिल्टर का काम दिया था। वह महसूस करता था कि अब उसमें वह भारी-पन नहीं रहा, जो उसे पहले तंग करता था। बुखार ने उसके नोकिले विचारों को घिसा दिया था। इसलिये अब दर्द का अनुभव भी होना खत्म हो गया था।

दिमाग़ बिल्कुल ही हल्का था और बाकी शरीर के सभी अँग भी हल्के-फुल्के हो गये थे, जिस प्रकार धोबी मैले कपड़े को फटक-फटक कर उजला करता है, इस तरह बुखार ने अच्छी तरह झंझोड़-निचोड़ कर उसका सारा मैल निकाल दिया था।

जब नर्स अपनी पिंडलियों की ओर देखती हुई बाहर निकली, तो सैय्यद मन ही मन में मुस्कराया, फिर उसने सोचा, नर्स की पिंडलियाँ वास्तव में सुन्दर हैं, दूसरे रोगियों के लिये चार दिन भी यहाँ रहना कठिन था; किन्तु सैय्यद ने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक यह दिन व्यतीत किये शाम को उसके मित्र आ जाते और सवेरे उसकी माँ आती, जो अपनी

ममता से उसको प्रसन्न कर जाती, दोपहर को सोकर या पत्र पत्रिकाएँ पढ़ कर समय काटा करता; जिनका ढेर खिड़की में लग गया था।

जब सैय्यद को छुट्टी मिलने का समय आया, तब डाक्टर, नर्स, सेवक और हस्पताल के एक दो नौकर भी उसके कमरे में उपस्थित थे। दो भंगी इनाम लेने के लिये खड़े थे, बाहर फाटक पर टाँगा खड़ा हुआ था, जिसमें उसका नौकर गुलाम नबी बैठा प्रतीक्षा कर रहा था, जैसे वह लन्दन जा रहा है या लन्दन से वापिस आ रहा है और उसके मित्र उसको विदा करने या लेने के लिये आए हुए हों।

नर्स उसको बार-बार कह रही थी—"आपने अपनी सभी वस्तुएँ अटैची में रख ली हैं ना?...और वह बार-बार इसका उत्तर दे रहा था—"जी हाँ रख ली हैं।"

नर्स फिर कहती थी—"वह आपकी घड़ी कहाँ है? देखिये कहीं गद्दैले के नीचे ही पड़ी न रहे।"

इस पर उसे कहना पड़ा—"मैंने उठा कर अपनी जेब में रख ली है।"

"और आपका पैन?"

"वह भी मेरी जेब में है।"

"और आपकी ऐनक?"

"वह मेरी नाक पर है, आप देख सकती हैं।"

नर्स ने सैय्यद की बहुत सेवा की थी; जिस प्रकार कोई छोटे-छोटे बालकों का ध्यान रखता है। इसी प्रकार सैय्यद का ध्यान रखती थी और अब, जब कि वह हस्पताल से जा रहा था। वह उसको इस

विदा कर रही थी, जैसे माँ बच्चे को स्कूल भेजती है और इसके दरवाजे से निकलने तक कभी इसकी टोपी ठीक करती रहती या कभी कमीज के बटन बन्द करती रहती। नर्स की इस प्रेम-भरी सेवा ने उसके हृदय पर बहुत प्रभाव डाला था। यही कारण था कि वह उससे हरेक बात, हँसी के ढंग पर करता था।

जब सब कुछ ठीक-ठाक हो गया तब सैय्यद नर्स से बोला "नर्स देखना मेरी टाई की नॉट कैसी है?"

नर्स ने टाई की नॉट की ओर देखा; किन्तु क्षण भर मे वह समझ गई कि उसके साथ परिहास हो रहा है: अपितु मुस्करा दी, बोली—"बिल्कुल ठीक है, परन्तु आप अपना शीशा यहीं भूले जा रहे है।"

यह कह कर वह कमरे की अन्तिम खिड़की की ओर बढ़ी, जिसके पास ही लोहे की आलमारी खड़ी झाँक रही थी, उसे खोल कर उसने शीशा निकाला और सैय्यद के अटैची-केस में रख कर कहा—"आप एक चीज तो भूल ही गए थे ना।"

इस पर सैय्यद ने जवाब दिया—"अब मुझे क्या मालूम कि शीशा भी फलों और दूध वाली आलमारी में ही स्थान बनाएगा। मैंने तो उसे वहाँ नहीं रखा था। आपने कभी इसकी सहायता से अपने अधरों पर सुर्खी लगाई होगी और वह भी, जब मै सो रहा हूँगा।"

इस प्रकार की मज़ेदार बातों के बाद उसने डाक्टर से हाथ मिलाया और कुछ कागजों पर हस्ताक्षर करने के बाद नर्स का धन्यवाद किया। दानपत्र में कुछ रुपये डाल कर, कमरे से बाहर आया। जहाँ उसने पूरे १५ दिन बीमारी की हालत में काटे थे।

जब वह सड़क की ओर बढ़ा, तो उसने वैसे ही मुड़ कर अपने पीछे देखा; जिधर उसके कमरे की खिड़कियाँ खुलती थीं। केवल तीन बन्द

और एक खुली, जिसमें से नर्स झाँक रही थी, जब इन दोनों की आँखें चार हुईं, तो नर्स ने अपने छोटे से सफेद रूमाल को हिलाया और फिर खिड़की बन्द कर ली।

उसके मित्र अब्बास ने जब यह खेल देखा, तो आंख मारते हुए रशीद से कहा—"भाई, मुझे दाल में कुछ काला-काला दीख पड़ता है।"

६

❀ ❀ ❀

पन्द्रह दिन घर से बाहर रहने के बाद सैय्यद ने जब घर में प्रवेश किया, तो सब से पहले राजो नजर आई, जो दौड़ी-हुई बड़े दरवाजे से बाहर निकल रही थी। उसे देख कर रुक गई और तुतला-तुतला कर कहने लगी—"मियां जी! आप ठीक ..ठीक हो गये.. मैं...पांच रुपये के पैसे लेने जा रही हूं।"

यह कह कर वह चली गई और सैय्यद ने आराम के साथ सांस भरी। आगे बढ़ा, उसकी मां झट छाती से लगा और चट-चट बलाएं लेने लग गई।

सैय्यद को अपनी मां के अधिक प्यार से उलझन होती थी; किन्तु अब उसका स्वास्थ्य ठीक था। इसी कारण वह आज शान्ति पूर्ण खड़ा रहा और मां के प्यार को अच्छा समझने लगा और खुशी का अनुभव किया।

जब घर पहुँचा, तो उसके साथ अतिथियों का सा बर्ताव हुआ, नये टी-सैट में चाय दी गई। अन्दर कमरे में नया फर्श बिछा दिया गया था, कुर्सियों पर नई गद्दियाँ रखी थीं। पलंग पर वह चादर बिछी हुई थी; जिस पर उसकी माँ ने मेहनत से तारकसी का काम किया था। प्रत्येक वस्तु अपने-अपने स्थान पर रखी गई थी और कमरे में ऐसा वातावरण पैदा हो गया था, जैसे शुक्रवार को मस्जिद में नमाज के समय देखा करते हैं।

चाय पी कर, वह देर तक अपनी माँ के पास बैठा रहा। मुहल्ले की सभी स्त्रियाँ एक-एक कर के आईं और सैय्यद के ठीक होने की खुशी में उसकी माँ को बधाई देकर चली गईं। जब फकीरों को पाँच रुपये के पैसे बाँटने का समय आया और मुहल्ले में शोर मच गया, तब सैय्यद उठ कर अपनी बैठक में चला आया।

गुलाम नबी ने कमरे को बहुत ही अच्छे ढंग से साफ़ किया हुआ था और सभी खिड़कियाँ खोल रखी थीं। सैय्यद की माँ को पहले ही मालूम था कि वह अपने ही कमरे में जाकर बैठेगा, सिग्रेट का नया-टीन तिपाई पर रखा था और पास ही नई माचिस पड़ी थी।

जब कमरे में प्रवेश किया, तो उसने अपनी सभी वस्तुओं को अपने-अपने स्थान पर लगा हुआ देखा। उस कबूतर तक को, जो बारह बजे तक उस के बाप की बड़ी तस्वीर के भारी फ्रेम पर ऊँघता रहता था।

थोड़ी देर तक वह साफ-सुथरी दरी पर नंगे पाँव टहलता रहा। इतने में उसके मित्र आने शुरू हो गये। दोपहर का भोजन भी वहीं किया गया, जो कि स्वास्थ्य के अनुकूल था; परन्तु फिर भी हस्पताल से बहुत अच्छा था। भोजन करने के बाद सिग्रेटों का दौर चला और

देर तक गप्प-बाजी चलती रही। इसी बीच में अब्बास ने कहा—"अमां हस्पताल की वह " रसीद ने हँस कर कहा—"आपका डबल निमोनिया बिना दवाई के वैसे थोड़े ही उतर गया, कुछ नर्स अमृत-धारा होती हैं।" अब्बास को रसीद की बात बहुत जँची। "वाह अल्लाह क्या बात कही है . नर्स और अमृत-धारा मैं समझता हूँ.. सैय्यद आधी बोतल तो खत्म कर ही दी होगी तुम ने ..? भाई इस प्रकार की दवाइयों का फ़िज़ूल में इस्तेमाल नहीं किया जाता ..?" सैय्यद को यह गप्पें बहुत अच्छी लगीं। इसी कारण उसने भी इनमें भाग लिया। क्या विचार है तुम्हारा हस्पताल में शायद ही कोई उस जैसी तेज़ नर्स हो .भाई हस्पताल वालों की दाद तो देनी ही पड़ेगी कि उन्होंने मिस फरिया को मेरी देख-रेख पर लगाया ..वैसे तो इस नगर में किसी स्त्री की नंगी टाँगें नहीं दीख पड़तीं और अब तो सर्दी भी अधिक है सब टाँगें मोटे-मोटे गलाफों में रहती हैं, इसलिये उसकी नंगी पिंडलियों ने बड़ा आनन्द दिया ..किन्तु तुमने उसकी पिंडलियाँ नहीं देखीं...? अब्बास बोला—"क्या मशहूर जगहों पर मिलना ठीक है ?"

इस पर सैय्यद कुछ देर शान्त रहकर, बोला—"भई मज़ाक खत्म; किन्तु उसने मेरी बहुत सेवा की है। बालक समझ कर मेरी दवा-दारू करती रही है। छोटी से छोटी चीज का ध्यान रखती थी। कभी-कभी मेरा मुंह भी धुलाती थी, नाक भी साफ करती थी, जैसे मैं बिल्कुल ही अपाहिज हूं। मैं उसका आभारी हूँ। मेरा विचार है, उसको इनाम के रूप में, एक साड़ी दूं। एक बार उसने कहा था, उसे साड़ी पहनने का अधिक चाव है। क्यों अब्बास तुम्हारा क्या विचार है ?" अब्बास ने कहा—"नेकी और पूछ-पूछ; किन्तु शर्त यह है कि साड़ी लेकर मैं जाऊँगा...ठीक है और यह भी फैसला हो गया कि साड़ी सफेद होगी, क्योंकि यह रंग उसे बहुत ही पसन्द है... ।"

इसलिये दूसरे दिन गोकुल मार्केट से अब्बास और सैय्यद ने एक

सफेद रंग की साड़ी ; जिसके किनारे-किनारे एक सफेद तिल्ले का बौडर दौड रहा था। मूल्य चुका कर सैय्यद ने एक चिट पर अपना और नर्स का नाम लिख कर चिपका दिया। अब्बास ने बक्स बन्द किया और उसे लेकर हस्पताल की ओर चल पड़ा। अब्बास के जाने से पूर्व सैय्यद ने अब्बास से कहा—"देखो! हस्पताल में जाकर किसी को कुछ भी देना ठीक नहीं ?"

अब्बास ने कमरे से बाहर निकलते हुए कहा—"मैं नर्स के घर जा रहा हूँ, हस्पताल में तो रोगी जाते हैं।"

अब्बास चला गया और संध्या समय वापस आया. जब सैय्यपू अपनी चाय आदि से निवृत हो, माँ के पास थोड़ी देर बैठ कर इधर वाले कमरे में आ रहा था कि दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी और ख्वाजा साहब की आवाज गूँज उठी, तो उसने समझ लिया कि अब्बास है और कोई दिल बहलाव की बात होगी ? जब दोनों शान्ति पूर्वक कमरे में बैठ गए, तो बात-चीत शुरू हुई।

अब्बास ने ही श्री गणेश किया—"भाई मुझे शक है कि उसे तुम से बहुत बुरी तरह प्यार है और दिन-रात तुम्हारी जुदाई में आहें भरती रहती है, रात को सो नहीं सकती आदि-आदि।"

"अरे! भाई नहीं, तुम मजाक मत समझना, उसने खुद तो कुछ नहीं कहा ; किन्तु मैंने महसूस किया है कि वह तुम्हारे प्यार में जकड़ी जा चुकी है, न जाने तुम ने उस पर क्या जादू कर दिया है ?"

"मैं पूरी बात तो सुन लूँ...?"

"मैं वहाँ गया. उसका ठिकाना मालूम किया। वह ड्यूटी पर न थी, इसलिये उसने मुझे छोटे से कमरे में बुला लिया और मेरे आने

का कारण पूछा। मैंने साड़ी वाले बक्स को उसके हाथों में थमा दिया। उसे खोल कर जब उसने साड़ी देखी, तो उसकी आँखों ने आँखें धोने का प्रयास किया, यानी कि आँखें गीली हो गईं, कहने लगी व्यर्थ में कष्ट किया; किन्तु यह साड़ी मुझे पसन्द है। उसका शोक बहुत अच्छा था। माना कि मैं सफेद कपड़े पहन-पहन कर मैं सफेद कपड़ों से उब गई हूँ; परन्तु इसमें भी एक मुख्य कारण है...ये...ये बौडर कितना आकर्षक है, यदि बड़ा होता तो सारी सुन्दरता नष्ट हो जाती? मेरी ओर से उनको धन्यवाद कहना; किन्तु वे स्वयं क्यों नहीं आये? क्योंकि उन्हें स्वयं आना चाहिये था। यह कहते-कहते वह रुक सी गई, और बात बदल डाली।

"आपने भी अधिक कष्ट किया है, मुझे आपका भी धन्यवाद करना चाहिए...।"

यह सुनकर सैय्यद ने अब्बास से पूछा कि इस बात-चीत से यही सबूत मिलता है कि कुछ भी नहीं...।

"अरे भाई! मेरे बताने से क्या होता है? मैं मिस फरिया तो नहीं हूँ। यदि तुम वहाँ होते तो वहाँ तक ही पहुँचते, जहाँ तक मैं पहुँच पाया हूँ और फिर यह भी तो उसने कहा था कि उनसे कहना कि जब भी कम्पनी-बाग की ओर आएँ तो मुझे अवश्य ही मिलकर जायें। मेरे कमरे का नं० उनको बता देना, इसलिये उनको कष्ट न होगा; लेकिन ठहरिये...?"

"तुम्हें मालूम है इसके बाद उसने क्या कहा?"

"तुम से कहा होगा चले जाइये?"

उसने छोटे से पैड पर तुम्हें एक पत्र लिखा; लेकिन थोड़ी देर विचार के बाद फाड़ दिया, फिर एक नया पत्र लिखना शुरू किया और

मेरी ओर देखकर पागलों की तरह घबड़ाए हुए शब्दों में कहने लगी—"समझ में नहीं आता... धन्यवाद किन शब्दों में करूँ", यह कह कर उसने फिर लिखने की चेष्टा की, जो ठीक रही। बड़े सोच विचार के बाद उसने एक पत्र लिखा और लिफाफे में बन्द कर मुझे दिया और कहा कि यह उनको दे दीजिएगा। मैं यह पत्र लेकर बाहर निकला और...।"

सैय्यद ने पूछा—"कहाँ है ?"

अब्बास ने बड़ी लापरवाही से उत्तर दिया—"मेरे पास . हाँ तो मैंने बाहर आकर लिफाफे को देखा। उस पर लिखा था प्राइवेट; परन्तु फिर भी मैंने खोल ही लिया .."

"तुमने खोल लिया ?"

"खोल लिया और पढ़कर देखा, तो मालूम हुआ कि वह आप से मिलने की उत्सुक है, पत्र का सार यही है कि मैं तुम से मिलना चाहती हूँ। मेरा मन नहीं लगता, साड़ी के लिए धन्यवाद ! मैं इसे परसों 'बाल' पर पहन कर जाऊँगी, जो छावनी में हो रहा है।",

यह कह कर उसने जेब में हाथ डाला और लिफाफा निकाल कर सैय्यद को दे दिया, बोला—"तुम स्वयं भी पढ़ लो, शायद कुछ और न लिखा हो।"

सैय्यद ने लिफाफा खोल कर पढ़ा; वास्तव में वही लिखा था, जो अब्बास ने सुनाया था। केवल इतना ही अन्तर था कि मिस फरिया ने अंग्रेजी में चार पंक्तियाँ लिखी थी, जिन का अनुवाद कर के अब्बास ने सुनाया था...।

यह पत्र पढ़कर सैय्यद सोच में पड़गया... वह मुझ से किस

कारण मिलना चाहती है और उदास क्यों रहती है ? क्या उदासी मुझ से मिलने पर दूर हो जायेगी, क्या यह सच है कि उस के मन में उदासी पैदा करनें वाला मैं ही हूं ? क्या सच-मुच अब्बास के कथनानुसार वह मुझ से प्यार करती है। इस अन्तिम विचार पर उसे हंसी आ गई। अब्बास तुम पूरे के पूरे बेवकूफ हो। उसे मुझ से प्यार नहीं हुआ, किसी और से होगा और मुझे उसका पूरा-पूरा हाल सुनाना चाहती है। मैंने उसे एक बार हँसी-हंसी में कहा था—"जब भी तुम किसी से प्रेम करो, मुझे अवश्य बताना ? हो सकता है, किसी ने उस के हृदय पर अपना निशाना लगा ही दिया हो। अच्छा छोड़ो, इस बात को और बताओ क्या तुम नें किसी ऐंग्लो इंडियन लड़की से प्यार किया है ?"

अब्बास ने बड़े गर्व के साथ उत्तर देते हुए कहा—"मैंने ठेठ योरपियन लड़की से लेकर भंगिन तक, सब से प्यार किया है; किन्तु यह प्रेम वासनामय होता है और कुछ नहीं सच पूछो तो, मैं तुम्हारी फरिया से प्यार करने लगा हूं; परन्तु उसके भाग्य का क्या कारण, जैसा की तुमने कहा है, वह किसी और की हो चुकी है ? मैं समझता हूँ, अपना काम यों ही चलता रहेगा और एक दिन अन्त में विवाह हो जायेगा और फिर छुट्टी समझो।"

अब्बास कुछ उदास हो गया। तब सैय्यद ने पूछा—"अब्बास, क्या तुम, वास्तव में किसी से प्यार करना चाहते हो ?"

अब्बास तड़प कर बोला—'यह वास्तव की भी खूब रही। अरे, भई एक जमाना हो गया है अभ्यास करते-करते और अब प्यार की आग ज्वालामुखी का रूप धारण कर चुकी है। बस, कोई भी हो, मगर हो स्त्री, हाँ स्त्री, खुदा-कसम मजा आ जाए।"

यह कह कर अब्बास ने जोर-जोर से मजा लेने के लिये अपने

हाथ मलने शुरू कर दिए ; किन्तु मैं इस ढंग के प्यार का अनुयायी नहीं, जो क्षय रोग की तरह सदा के लिये चिमट जाये। मैं अधिक से अधिक एक या दो साल किसी स्त्री से प्यार कर सकता हूं, बस इस से अधिक प्यार करना मेरे बस का रोग नहीं। गालिब ने कितना सुन्दर कहा है—'मिसरी की मक्खी बनो ! शहद की मक्खी न बनो', तो भई, मैं तो मिसरी की मक्खी हूं .. अपना तो यही नियम है, चाहे प्यार हो, या न हो। विवाह अलग रहे और प्यार पृथक हो। वाह अल्लाह, यदि ऐसा हो जाये, तो क्या कहने हैं; किन्तु मुझे ऐसा लगता है, बस अब किला अपने ही हाथ आने वाला है, तो बस सारी जर्मनी मेरी है। मुझे यह लाइन तोड़नी है; जिस दिन टूट गई, बेड़ा पार समझो ..।"

अब्बास का भाषण सुनकर सैय्यद ने अपने और उस के प्यार की तुलना की; पृथ्वी और आकाश का अन्तर था; किन्तु एक बात थी कि अब्बास ने दूसरे व्यक्तियों की तरह अपने शारीरिक प्यार पर पर्दा नहीं डाला, उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि एक या दो साल से अधिक किसी औरत से प्यार करना अच्छा नहीं समझता है. ?

प्यार कितनी देर रहता है, यह सैय्यद को मालूम न था ? मयादी बुखार की तरह उसका समय भी निश्चित होता है। यह भी उस को ज्ञात नहीं। मयादी बुखार उसको एक बार चढ़ा था, जो उसकी माँ के कथनानुसार सवा महीने तक रहा था; किन्तु यह प्यार जो अभी-अभी उसके हृदय में उत्पन्न हुआ था, कब तक उसे कष्ट देता रहेगा ? यह प्रश्न उसके हृदय में उत्पन्न हुआ ही था कि राजो और उसके आस-पास की सभी वस्तुएँ सामने घूमने लगीं। वह उस व्यक्ति की तरह जो अनजाने ही में किसी मुसीबत में फँस जाये, बहुत घबड़ा गया, अपितु उसने तुरन्त ही स्वयं को इन विचारों से स्वतन्त्र कराने के लिए अब्बास से कहा।

"अब्बास आज कोई खेल देखना चाहिए ?"

अब्बास जिसके दिमाग में प्यार बसा हुआ था, कहने लगा—"खाली तस्वीर प्यास नहीं बुझा सकेगी, दोस्त.. मुझे औरत चाहिए औरत, गर्म-गर्म गोश्त वाली औरत, जिसके सुन्दर गालों पर मैं अपने प्यार के ठंडे टोस्ट सेक सकूँ। तुम्हें एक मौका मिल रहा है, उससे अवश्य ही लाभ उठाओ। जाओ वह नर्स तुम्हारी है, खुदा कसम तुम्हारी है। उसकी आँखों ने मुझे बता दिया था कि वह एक गलती कर के रोना चाहती है। जाओ, उसको अपने जीवन की पहली गलती पर न रोने देना . पागल न बनो, गलतियाँ न होतीं, तब औरतें भी न होतीं . मेरी समझ में नही आता, तुम्हारे विचार किस ढंग के हैं ? भाई एक औरत तुम्हारी मदद से अपने जीवन में खुशी के रंग भरने की कोशिश कर रही है। यदि तुम अपने रंग के बकस को बन्द कर डालो, तो तुम्हारा पागलपन है—काश ! तुम्हारे स्थान पर कहीं मैं होता, फिर .. फिर देखते कैसे-कैसे तीखे रंग उसके जीवन में भरता .. ?"

अब्बास का भाषण सैय्यद उन कानों द्वारा सुनने की चेष्टा कर रहा था, जिनमें राजो का प्रेम अब भी भिन-भिना रहा था। हस्पताल में बहुत हद तक राजो को भूल गया था; किन्तु आज पहले ही दिन घर आने पर वह फिर उसके अन्दर आगई थी। अब्बास बातें कर रहा था और उसके हृदय में यह विचार उत्पन्न हो रहे थे कि उठे और अन्दर जाकर राजो को एक बार देख आये। नयनों से ही देखे; मगर देखे-अवश्य। उस की ओर प्यार भरी दृष्टि से न देख कर घृणा की दृष्टि से देखा जाये। मगर देखे अवश्य; किन्तु उसके साथ-साथ वह यह भी नहीं चाहता था कि जो निश्चय वह कर चुका है; क्षण भर में खत्म कर दे।

उसने बड़ी सावधानी से काम लेकर राजो के विचार को एक बार

फिर उसने अपने हृदय के अन्दर कुचल दिया और उठ खड़ा हुआ, बोला—"अब्बास, कोई नई बात सुनाओ.. सच पूछो तो मैं प्रेम का अर्थ अभी तक भी न जान सका, इतना अवश्य जानता हूँ, प्रेम वह वस्तु नहीं है; जिसका तुम अलाप कर रहे हो। तुम एक औरत से केवल एक या दो वर्ष प्यार करने के आदि हो, मगर मैं तो आजीवन भर पट्टा लिखाना चाहता हूँ। यदि मुझे किसी से प्यार हो जाये .. तो मैं उस पर पूर्ण अधिकार चाहता हूँ ? वह औरत पूर्णतया मेरी होनी चाहिए। उसका प्रत्येक अंग मेरे प्यार के अधिकार में होना चाहिए। प्रेमी और डिक्टेटर में मैं कोई भी अन्तर नहीं समझता, दोनों बल चाहते है ? दोनों शासन की अन्तिम सीढ़ी के इच्छुक हैं . प्रेम तुम प्यार-प्यार की रट लगाते हो। मैं खुद प्यार-प्यार कहता हूँ, मगर इस विषय में हम कहाँ तक जानते हैं किसी अंधेरी खाई में या बाग की घनी सी झाड़ी के पीछे अगर तुम्हारी किसी शहतूत की भूखी औरत से भेंट हो जाए, तो क्या तुम कहोगे, मैंने प्यार लड़ाया है, मेरे जीवन में चंचलता ने प्रवेश कर लिया है ? गलत है, बिल्कुल गलत, यह प्यार नही, प्यार कुछ और ही होता है। मैं यह भी नहीं कहता हूँ कि प्यार शुद्ध विचारों का नाम है और जैसा हमारे बड़ों ने कहा है कि औरत इच्छाओं से खाली नहीं होती। मैं इसको भी नहीं मानता। मुझे ऐसा जान पडता है कि मुझे मालूम है, प्यार क्या है ..लेकिन . लेकिन मैं पूर्णरूप से अपने शब्दों को पूरा नहीं कर सकता। मैं समझता हूँ, प्यार हरेक आदमी के अन्दर नई उमंगें लेकर पैदा होता है। जहाँ तक जगह का सवाल है, एक ही रहती है, अमल में भी एक ही है और जवाब भी एक जैसा ही निकलता है; लेकिन जिस तरह रोटी खाने का मतलब एक सा है और बहुत से आदमी रोटी के टुकड़े जल्दी-जल्दी उठाते हैं और बगैर चबाए ही उनको निगल जाते हैं और बहुत से चबा-चबाकर रोटी को अपने पेट में भरते हैं। यह शब्द भी पूरी तरह से पूरा नही कर सकते भाई मेरा

दिमाग खराब हो जायगा। खुदा के लिए यह प्यार की दास्तान खत्म करो। हमारा प्यार बड़े-बड़े पत्थरो के नीचे दब चुका है। जब खुदाई होगी, इसको निकाला जायेगा, फिर हम दोनो, इस के बारे मे खुलकर बाते कर सकेंगे।"

सैय्यद की संक्षिप्त भाषा मे इतने धक्के थे कि अब्बास के दिमाग की ऐसी हालत हो गई, जैसे थर्ड-क्लास तांगे मे बैठ कर टूटे फूटे रास्ते पर चलने से पैदा हो जाती है। वह भी उठ खड़ा हुआ—"न जाने तुमने क्या बकवास की है; मगर मै सिर्फ इतना समझता हूं कि औरत से प्यार करना और जमीन को खरीदना तुम्हारे लिए एक समान है। मेहरबानी हो यदि तुम प्यार करने की जगह पर, एक-दो बीघा जमीन खरीद लो और उम्र भर उस पर कब्जा जमाए रखो लाहौल बल्लहा! आज तुम्हे क्या हो गया है, तुम्हारे अन्दर की शायरी का क्या हुआ . ? बीमार रहने के बाद तुम इतने कमजोर हो गए हो कि छोटी सी बात को भी नही समझते। शादी प्यार जो अधिक समय तक रहे, प्यार नही, लानत है . हम आदमी हैं पैगम्बर नही, जो एक ही औरत पर पूरी तसल्ली कर लेंगे। अगर एक ही औरत से मैने अपने आपको चिपका दिया, तो जिन्दगी बिगड़ जायेगी मै खुदकशी कर लूंगा . उम्र भर सिर्फ एक औरत सिर्फ एक औरत और यह दुनिया क्यों इतनी भरी पड़ी है . ? क्यो इसमें इतने तमाशे इकट्ठे है सिर्फ गेहूं पैदा करके ही अल्लाह-मियाँ ने अपना हाथ क्यो नही रोक लिया ?"

"मेरी सुनो! और इस जिन्दगी को, जो तुम्हे दी गई है, ठीक ढंग से रखो, तुम उस औरत को जो तुम्हारी राह पर डाल दी गई है, कुछ समय के लिए, किस तरह खुश कर सकते हो ? अपनी खुशी अच्छी रही ..? झगड़े मे खुद को न उलझाओ, औरत कोई अयोग्य सृष्टि नही है। वैसे तो तुम अपने पालतू कुत्ते को भी अच्छी तरह जान

नहीं सकते, लेकिन उसको समझने की ही जरूरत क्या ? जब तक पुचकारने पर अपनी कटी हुई दुम हिलाता रहता है और तुम्हारे कहने पर वह गेंद पकड़ता है। मैं पूछता हूँ, औरत के बारे में ज्यादा सोचने की जरूरत ही क्या है ? अगर औरत अथाह समुन्द्र है, चाहे नीले आसमान का तारा है, इन बातों में क्या ? इन बातों से क्या, जब तक वह औरत है और उन विशेषताओं से परिपूर्ण है, जो एक औरत में मौजूद होती है, केवल एक ही विषय पर विचार करना चाहिए कि उसे किस ढंग से पाया जा सकता है ?"

यह भाषण सुनने के बाद, सैय्यद ने अब्बास से पूछा—"लेकिन औरतें हैं कहां ?"

अब्बास ने पैकेट से एक सिग्रेट निकाली, माचिस जलाकर सुलगाते हुए उसने उत्तर दिया—"यहाँ-वहां, इधर-उधर, हर जगह पर औरतें ही औरतें हैं। क्या इस घर में कोई भी औरत नहीं है। वह तुम्हारी नौकरानी राजो ही क्या बुरी है ? जिसने उस दिन बैठक के किवाड़, मेरे लिए ही खोले थे। तुम मेरी ओर आँखें फाड़-फाड़ कर क्यों देख रहे हो ? भाई, हमें तो औरत चाहिए और राजो शत प्रतिशत औरत ही है। भले ही वह तुम्हारी नौकरानी सही, किन्तु इससे, इसके वंशगत संस्कार का क्रिया कुछ नहीं बिगड़ सकती। माना कि हमारे यहाँ की औरतें सन्दूक की चार दीवारी में बन्द रहकर साँस लेती हैं, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि जो सन्दूकों से बाहर हों उनकी ओर ध्यान देना ही छोड़ दें। सच तो यह है कि थाल में जो कुछ भी है, उसे खाना ही पड़ता है।"

यह कह कर अब्बास ने सिग्रेट की राख झाड़ी और अपने मित्र की ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगा, यद्यपि वह देखना नहीं चाहता था। फिर भी ऐसा भास होता था, मानो सैय्यद को इस बात

का भय हो कि वह उसकी आँखों में राजो के प्रेम की कहानी पढ़ लेगा, अतः वह जाने क्या सोच कर किस कारण एक ओर हट गया और समीप पड़ी तस्वीर को हाथ लगा, उसे इधर-उधर हिलाते हुए, अब्बास से कहा—"तुम तुम ..तुम ! तुम कुछ नहीं ! तुम्हारी बातें बहुत ही बेढंगी हैं, तुम जब बातें करते हो, तब-तब मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारे मुख से खून की गन्ध आ रही है। सच तुम खून पीने वाले दरिन्दे हो ।"

"और तुम ?" अब्बास ने फिर सिग्रेट की राख झाड़ी, फिर कहने लगा—"मैं खून पीने वाला दरिन्दा ही सही; किन्तु तुम जैसे दूध पीने वाले मजनुओं से तो फिर भी कही अच्छा हूँ। तुम तो केवल अच्छाई और बुराई के बीच लटक रहे हो। अच्छा है कि मै चमगादड़ नहीं हूँ, मैं एक तूफ़ानी समुद्र हूँ और तुम तो अभी तक मरुस्थल पर खड़े हो। मैं कवि हूँ और तुम एक अनभिज्ञ वक्ता। तुम एक ऐसे ग्राहक हो जो औरत को पाने के लिए आजीवन भर धन जोड़ते रहोगे और उसे कभी भी पूरा न कर सकोगे ?"

"मैं ऐसा ग्राहक हूं, जो कितनी ही औरतों का क्रय-विक्रय करूँगा। तुम ऐसा प्रेम करना चाहते हो कि तुम्हारे असफल प्रेम पर कोई घटिया सा लेखक तुम्हारी प्रेम-कथा लिखे; जिसे चन्द्र एण्ड सन्ज़ जैसे प्रकाशक लाल-पीले रंग के काग़जों पर छापें और दरीबा-कलां में एक-एक इकन्नी में तुम्हारी प्रेम कहानी बिके। मैं अपनी जीवन-पत्री को दीमक बन कर चाट जाना चाहता हूँ, ताकि इसका चिह्न भी न दीख पड़े। तुम प्रेम में जीवन चाहते हो मैं जीवन में प्रेम ! किन्तु तुम कुछ भी नहीं हो। कुछ सोचो तो सही कि तुम क्या हो ?"

सैय्यद को लगा, जैसे वास्तव में अब्बास ही सब कुछ है। वह कुछ भी नहीं। वह अपने विवेक से अपने आप प्रश्न कर उठा—"मैं

क्या हूँ और यहाँ इस घर में एक और है और जिससे मैं प्यार करता हूँ; किन्तु किन्तु, यह प्यार क्या है ? दुःख और सुख का कैसा अनुभव है ? मैं चाहता हूं, वह मेरी बन जाये; किन्तु साथ ही यह भी सोचता हूँ कि इस प्रकार के विचारों को अपने हृदय से नोच-नोच करके फेंक क्यों न दूँ ? मैं किस झगड़े में पड़ गया हूँ, क्या दुःखी जीवन का ही दूसरा नाम प्यार है ?"

कुछ भी हो; किन्तु सैय्यद यह भली-भाँति जानता था कि यह दुःख या इसका और जो भी नाम रखा जाये, वह वास्तव में प्रेम ही था, जो धीरे-धीरे इस हृदय में अपना पूरा स्थान बना चुका था; जिस प्रकार बहुत से व्यक्ति भूत-प्रेत आदि से भय खाते हैं, उसी प्रकार सैय्यद प्यार से भय खाने लगा था। उसको क्षण प्रति क्षण डर रहता है कि कहीं ऐसा समय न आ जाए कि प्रेमावेग में उस बिगड़े हुए घोड़े की तरह वह बे-लगाम न हो जाए और वह हाथ मलता रह जाये। कभी वह विचार करता कि यदि वह कुछ कर बैठेगा, पर दूसरे क्षण ध्यान आता कि वह क्या कर बैठेगा ? यह उसको मालूम नहीं था। वह तो भविष्य में आने वाली आंधी की प्रतीक्षा कर रहा था, जिसकी प्रचण्ड लहरें आकाश में छाने वाले गर्द से ही सूचना देने के लिए बाहर आ जाती है। सम्भवतः इसी प्यार के कारण वह कुछ भयभीत सा हो उठा था, शायद वह कायर बन गया था।

अब्बास अपने ही विचारों में व्यस्त था, इसी कारण वह अपने प्रिय के धड़कते हुए दिल की ध्वनि न सुन सका; क्योंकि वह दूसरों की समस्याओं को सुलझाने का आदी न था। उसे केवल अपने ही रोने पर विचार करने में आनन्द आता था। वह सदा ही अपने आप में खोया-खोया रहता था। उसे इतना समय ही नहीं मिलता था कि दूसरों की बात पर कुछ सोच-विचार कर सके; किन्तु फिर भी वह एक अच्छा मित्र

था। शायद इसीलिये वह मित्रता और उसकी क्षमा पर जरा ध्यान भी नही दे सकता था। वह उसको आपत्ति मे कभी भी नही देखना चाहता था। वह कहा करता था, अब छोडो, तुम कोन से वहम मे फस गये हो ! दोस्ती-दोस्ती सब फिजूल की बकवास है। धातु और पत्थर के युग मे दोस्त हुआ करते होगे; किन्तु विज्ञान के युग मे कोई किसी का दोस्त नही हो सकता। सारे व्यक्ति यदि दोस्ती की रस्सी बटना शुरू कर दे, तो समस्त कार्यक्रम समाप्त हो जाये। तुम्हे कोई दोस्त कहता है, कहने दो ? कहो, मै भी तुम्हे मित्र कहता हूँ। ठीक है सुनते जाओ, किन्तु इससे अधिक इस पर विचार नही करना चाहिये। जितना अधिक विचार करोगे, उतने इसमे अभाव के गड्ढे दिखाई देंगे। आज ससार मे जितने भी काले कारनामे हो रहे हैं, सभी इसी विचार के परिणाम है।"

"हत्याएं होती हैं; पर अधिक सोच-विचार के कारण, चोरी होती है, अधिक सोचने के कारण और डाके भी पडते हैं, केवल अधिक सोच-विचार करने से। मस्तिष्क और बारूद की मेगजीन मे कुछ भी अन्तर नही। सोच-विचार उस पत्थर के समान अनेको चिगारी फेंक देता है। गधे बन जाओ, उल्लू बन जाओ, किन्तु खुदा के लिए अक्लमन्द और बेफिक्र न बनो।"

अब्बास इस प्रकार भावुकता के प्रवाह मे लच्छेदार बाते करता, छोटी सी बात को इस ढग से कहता कि सुनने वाला आश्चर्य मे पड जाये; पर यह उसका स्वभाव बन चुका था। ससार के विषय मे उसने कुछ ऐसे नियम बना रखे थे, जिन पर वह चल रहा था। इसमे सन्देह नही कि वह सदा चिन्ता और दुख के घेरे के बाहर रहता था; किन्तु फिर भी इन बातो पर कुछ क्षण उसे विचार करना ही पडता था, जो उससे सम्बन्धित होती थी।

इस समय भी वह विचार कर रहा था; क्योंकि इसके मुख पर शान्ति के चिह्न न थे, जो कुछ समय पहले दीख रहे थे। एकाएक सिग्रेट पीने की इच्छा उसने नई सिग्रेट जलाई और बड़े जोर-जोर से कश खींच रहा था और इसका मित्र सैय्यद आग के पास बैठा हृदय और मस्तिष्क के मल्ल-युद्ध में चोट पर चोट खा रहा था।

सहसा अब्बास चौंक पड़ा। उसने कहा—"छोड़ो भी इस झगड़े को। व्यर्थ में क्यों स्वय को उलझन में डाल रहे हो? जो होगा, देखा जायेगा।"

अपने दोस्त को संकेत करते हुए उसने कहा—"अरे भाई, किस वहम में पड़ गए, कुर्सी पर बैठो? आप अभी-अभी बीमारी से उठे हैं। ऐसा न हो कि कहीं फिर हस्पताल का मुह देखना पड़े; परन्तु इस बार अपना स्थान मुझे देना। वाह अल्लाह! वह नर्स तो मुझे भा गई है।"

यह कह कर वह स्वयं आराम कुर्सी पर बैठ गया।

सैय्यद भी उठ कर कुर्सी पर बैठ गया। अधिक बात-चीत और सोच-विचार ने उसे कमज़ोर कर दिया था। इसी कारण थकी-मादी आवाज में उसने अब्बास से कहा—"अब्बास! मैं अधिक कमज़ोर हो गया हूँ। मेरा विचार है कि कुछ दिनों के लिये बाहर चला जाऊँ, जिससे हवा पानी बदल जाये।"

अब्बास ने पूछा—"कहाँ जाओगे?"

सैय्यद ने उत्तर दिया—"कहाँ जाऊँ? यही तो सोच रहा हूँ। शरद ऋतु में कहाँ जाना लाभदायक रहेगा? कोई ऐसा स्थान बताओ जहाँ दिल लग जाये? क्या बम्बई चला जाऊँ? कलकत्ता भी बुरा

नहीं; किन्तु . किन्तु ! बड़े दिन तो खत्म हो चुके हैं। बड़े दिनों को छोड़ो, तो बम्बई चला जाऊँ। वास्तव में मैं कुछ समय के लिए अमृतसर को भूल जाना चाहता हूं। यहाँ मुझे कुछ घबराहट सी हो रही है।"

अब्बास ने आश्चर्य-जनक दृष्टि से देखते हुए पूछा—"अमृतसर में आपको घबराहट हो रही है या डर लग रहा है ? अमृतसर ने आपको कहाँ काट खाया है ?"

इस पर सैय्यद के मन में आया कि अब्बास के सामने अपने मन का सारा हाल खोल कर कह दे; किन्तु न जाने क्या सोच कर वह चुप रह गया। वास्तव में वह चाहता था कि किसी को अपना दुःख सुनाए; परन्तु इसके साथ ही साथ वह यह भी नहीं चाहता था कि इसके दुःखों से कोई लाभ उठाए ? यदि ऐसे होता कि दुःख सुना कर भी किसी को इसके दुःख का पता न चले, तो अवश्य ही अब्बास दुःख भरे हृदय के उद्गारों को उँडेल देता। उसे मालूम था कि यदि एक बार राजो के प्रेम की कहानी सुना दी, तो चिड़िया झट से उड़ जायेगी ? जिसे वह पिंजरे में बन्द करके मारना चाहता है। इसलिए अब्बास को वह सब कुछ सुनाने के लिए झुका और पुनः सिग्रेट के डिब्बे से सिग्रेट निकाल कर जलाने की आवश्यकता जान पड़ी। अब्बास से भी उसकी यह बात छिपी न रह सकी कि उसका दोस्त कुछ कहना चाहता है; परन्तु वह कहने में असमर्थ सा हो रहा है। अतः उसकी परेशानी को पहिचान कर उसने कहा—"कहो, क्या कहना चाहते हो ? आखिर तुम्हें अमृतसर से घबराहट क्यों आ रही है ? बाहर क्यों जाना चाहते हो ? कौन सी ऐसी बात है ? पर बात, बात तो कोई भी नहीं होती ? हम और तुम फिजूल ही किसी बात में खासपन पैदा कर देते हैं; फिर भी कहता हूँ कि कहो क्या कहना चाहते हो ?"

सैय्यद ने सिग्रेट का एक कश लेते हुए अब्बास की ओर मुह से धुआँ फेंकते हुए कहा—"कुछ भी नहीं। कोई ऐसी खास बात भी नही; किन्तु मैं खुद नही जान सका हूँ कि मैं अमृतसर छोड़ना क्यों चाहता हूँ? वास्तव में कुछ समय से न जाने क्यों मेरे दिमाग की कल ढीली पड़ गई है। इसलिए चहल-पहल की दुनिया में जाना चाहता हूं।"

"चहल-पहल की दुनिया में जाना चाहते हो। अपने आप घर बनाना, यह तो कुछ कठिन नहीं। मै आपको यहां एक वैसी ही दुनिया की स्थिति को पैदा कर के दिखा सकता हूं! यदि हुक्म दो, तो करूं। सच कहता हूँ कि रसीद, वहीद, प्राण सब के सब आपकी सेवा में हाजिर हो जायेगे और फिर एक कोलाहल से परिपूर्ण वातावरण की जो हालत पैदा होगी, इतना शोर मचेगा कि कानों-कान की आवाज भी नहीं कोई सुन सकेगा? कहो क्या हुक्म है?"

अब्बास हँसने लगा। उसकी हँसी को देखकर सैय्यद का हृदय भीतर ही भीतर जिस चिंगारी के असर से सुलग रहा था, वह बाहर निकल पड़ा, सैय्यद तड़प उठा। वास्तव में अब्बास को मालूम नहीं था कि सैय्यद के हृदय में किस ढंग का तूफान उठ रहा है और वह किस प्रकार के खौफनाक रास्ते पर चल रहा है? यही कारण था कि वह इसकी हँसी उडा रहा था। हँसते हुए अब्बास ने फिर पूछा—"कहो भाई क्या हुक्म है?"

इस पर सैय्यद का विवेक झुंझला उठा, वह व्याकुल होकर उठ खड़ा हुआ, बोला—"मैं फैसला कर चुका हूं कि सप्ताह में कहीं न कहीं जरूर चला जाऊँगा। मैं बहुत उदास हो गया हूँ। मैं अब यहाँ रहना नहीं चाहता। बस एक-दो महीने बाद रहकर, जब मेरा मन ठीक हो जायेगा, तब वापिस भी आ जाऊँगा। सोचो न कि कौनसा कोई ऐसा जरूरी काम यहाँ है, जो मेरे बिना पूरा नहीं हो सकता? तुम भी मेरे साथ चलो।"

अब्बास उसकी बात पर मुस्करा उठा, उसने कहा—"लेकिन मुझे तो बहुत से काम करने हैं।"

"यहाँ तुम्हें कौन से काम करने है ?"

"एक हो, तो बताऊँ, सैकड़ों है। मान लो मुझे एक दो लड़कियों से प्यार करना है और एंग्लो इंडियन लड़कियों से बात-चीत करने के सारे तरीके सीखने है। कुछ थोड़े से सस्ते बाजारू ढंग के मखौल भी याद करने है और दस-बीस घटिया और सस्ते नोवल भी पढने हैं ? और . और नही ! बस अब अपने 'प्लान' के बारे में क्यों बताऊँ ? तुम जाओ। मै यहाँ अपने मनोरंजन के लिए कुछ न कुछ तो पैदा कर ही लूँगा ! बस पत्र लिखते रहना; लेकिन जाओगे कहाँ ?"

सैय्यद ने सोचा। वास्तव में वह जायेगा कहाँ ? ऐसी कौनसी जगह है, जहाँ वह आराम से कुछ दिन काट सकता था। होटल में रहना उसे अच्छा न लगता था और सम्बन्धियों के यहाँ तो बहुत ही बुरा लगता था; क्योंकि उसकी आजादी में किसी न किसी प्रकार की रुकावट पैदा हो सकती थी। यह सब कुछ उसके दिमाग में था; लेकिन अमृतसर छोड़ो का आन्दोलन अब तक उसी रूप में जोर पकड़ रहा था। वह खुद जाना चाहता था; परन्तु गजब की बात यह है कि राजो को अपने हृदय से निकालने का प्रश्न अभी तक इसके दिमाग में नही आया।

वास्तव में इतना सोचने-विचारने के बाद भी वह कुछ फैसला तो न कर सका; किन्तु यह अवश्य था कि वह कहीं न कहीं चला जावेगा ?

७

❊❊❊

अमृतसर से लाहौर केवल तीस मील की दूरी पर बसा हुआ है। मन्द से मन्द चलने वाली गाड़ी भी आपको एक घण्टे में लाहौर फेंक देगी, वास्तव उसने अभी तक अमृतसर नहीं छोड़ा था; परन्तु अब कभी अमृतसर से चले जाने की कल्पना उसके मन में उभरती, तो वह अपने आप को लाहौर में पाकर ऐसा महसूस करता, मानो यहाँ राजो से उसे अब किसी प्रकार का भय नहीं रहा ?

अन्त में एक दिन उसने घर छोड़ने का फैसला कर लिया। माँ ने उसको बहुत रोका; किन्तु वह अपनी बात का पक्का था। एक रोज़ हस्पताल से घर वापिस आने के चौथे दिन ही वह अपना थोड़ा सा सामान बाँधकर चल पड़ा। लाहौर में इसके तीन-चार सम्बन्धी भी रहते थे। उनसे मिला भी; किन्तु उनके यहाँ कुछ देर ठहर कर चला आया। सम्बन्धी भी कुछ ऐसे ही थे; किन्तु सैय्यद फिर भी प्रसन्न

था। इनके व्यवहार से, अतिथियों की तरह कुछ देर के लिए प्रत्येक के पास ठहरा और थोड़ी बहुत बात-चीत करने के पश्चात्त होटल में आ टिका।

पर इस होटल में भी उसका मन एक सप्ताह में ही उब गया था। वैसे किराया भी अधिक था। वह इन व्यक्तियों में रहना भी नही चाहता था, जो भारत में पैदा होकर योरपियन बनने की चेष्टा करते हैं। इसलिए उसने मालरोड पर एक छोटा सा कमरा देख लिया और किराया आदि पक्का करने के बाद उसमें जाने का निश्चय भी कर लिया।

अत: एक दिन होटल का 'बिल' आदि देकर वह तांगे में अपना सामान रखवा रहा था कि समाने से उसने एक और तांगे में 'मिस फरिया' नर्स को आते देखा। पहले-पहल तो उसने सोचा कि कोई और होगी; क्योंकि एंगलो इंडियन लड़कियों की मुखाकृति और रंग एक-सा ही होता है। जब फरिया उसकी ओर प्यासी हिरणी के समान हाव-भाव खोए हुए आगे बढ़ी, तब उसको विश्वास हुआ कि वास्तव में फरिया ही है। सहसा उसके दिमाग़ में सैंकड़ों प्रश्न उठे और कहीं विलीन हो गए। लाहौर में क्या करने आई है और कब आई है? क्या अकेली है ? इस होटल में इसका कौन है, क्या इसी होटल में ठहरी है आदि आदि ?"

अपने दिमाग़ में उठने वाले प्रश्नों को दबा कर सैय्यद ने होटल के नौकर की हथेली पर कुछ रुपए रखकर दबा दिये और जल्दी स फरिया की ओर बढ़ा। आगे बढ़कर उसने प्रेम भरे शब्दों से उसका अभिवादन करते हुए कहा—"मिस फरिया, किसे मालूम था कि लाहौर में तुम से भेट होगी ? तुम यहाँ कब आई हो ?"

इस तरह सैय्यद ने न जाने कितने ही प्रश्न फरिया से किए; किन्तु उसने एक भी उत्तर न दिया। वह दुःखी थी, इतनी दुःखी कि इसके मुख पर ठंडी छा चुकी थी; जिसे लेखनी भी लिखने से चिल्ला उठी। ऐसा मालूम होता था कि वह कोई बड़ी भारी चोट खाकर आई है। उसका रंग पीले पत्थर के समान हो गया था और उसके अधरों पर सुर्खी का पोचा फेरने के बाद भी केवल पपड़ियाँ ही नज़र आ रही थीं।

अन्त में कुछ देर के बाद इधर-उधर देखकर फरिया ने उससे कहा—"मुझे आप से बहुत सी बातें करनी हैं।" यह कहते हुए उसने ताँगे की ओर देखा, जिस में सामान भरा हुआ था, फिर बोली—"लेकिन आप अभी-अभी आए हैं या जा रहे हैं ?"

"मुझे तो यहाँ आए आज सात दिन हो चुके हैं और अब मैं यह होटल छोड़ रहा हूँ।"

यह सुनकर फरिया का रंग और भी पीला पड़ गया। वह बोली—"बस आप घर जा रहे हैं ? "

"नहीं, नहीं, घर तो दो-ढ़ाई महीने के बाद ही जाऊँगा। होटल का वातावरण मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा, इसलिए मैंने अलग एक कमरा किराये पर ले लिया है।"

"तो चलो मुझे भी साथ ले चलो। तुम ..।"

यह कह कर वह कुछ झेंप सी गई। बोली—"आपको यदि कुछ कष्ट न हो तो ..। बात यह है कि मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ और यहाँ होटल के सामने दो मिनट में मैं कुछ भी नहीं कह सकती।"

सैय्यद ने फरिया की ओर देखा तो उसकी मोटी-मोटी आँखों में

: की दो-एक बूँद उतर रही थी। उसका हृदय द्रवित हो उठा। उसने कहा—"नहीं नहीं ! इसमें कष्ट की कोई बात नहीं ? मैं यह सोच रहा हूँ कि तुम्हें वहाँ कष्ट होगा। इसलिए कि वहाँ सामान आदि कुछ भी नहीं है। केवल खाली कमरा है। अभी तक मेज़ और कुर्सियाँ भी कुछ नहीं ला सका। अच्छा, देखा जायेगा। चलो आओ।"

किराया आदि देकर और होटल के नौकरों को इनाम देते हुए दोनों ताँगे में मालरोड की ओर चल पड़े। रास्ते में कोई बात नहीं हुई; क्योंकि दोनों अपने-अपने विचार में मग्न थे और इतने में ताँगा उस मकान के आगे जाकर रुक गया; जिसकी दूसरी मंजिल पर उसने अपने लिये कमरा ले रखा था।

सामान आदि रखवा कर, जब सैय्यद ने फरिया की ओर देखा, तो वह लोहे की चारपाई पर बैठी अपने आँसू पोंछ रही थी। किवाड़ बन्द करके वह उसके पास आया और सहानुभूति प्रगट करते हुए पूछा—"मिस फरिया, क्या बात है ! तुम्हारी आँखें तो कभी रोने वाली नहीं थीं ?"

यह सुनकर फरिया ने ज़ोर-ज़ोर से सिसकना शुरू कर दिया, जिस से सैय्यद बहुत घबड़ा सा गया। इसकी समझ में नहीं आता था कि इस लड़की को वह किस प्रकार दिलासा दे ? यह पहली घटना थी कि नवयुवती उसके पास बैठी थी और रो रही थी। उसका हृदय कोमल था और शीघ्र ही वर्फ सा पसीज गया। फरिया के रोने का उसे अधिक दुःख हुआ घबड़ा कर कहा—"मिस फरिया ! मुझे बताओ तो सही, सम्भवतः मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूँ।"

फरिया चारपाई से उठ खड़ी हुई। खिड़की खोल कर बाहर की ओर देखने लगी। फिर थोड़ी देर के पश्चात्त उसने कहा—"मैं इसीलिए

तो आपके साथ आई हूं। यदि आप से भेंट न होती, तो न जाने क्या होता और मैंने सच-मुच जहर खाकर खुदकशी कर ली होती? मुझ पर जुल्म हुआ है, आपको याद होगा। साड़ी मिलने पर मैंने आपको धन्यवाद का पत्र लिखा था और आपसे प्रार्थना की थी कि आप मुझे अवश्य मिलें। अच्छा ही हुआ, आप न आए; क्योंकि मेरी पहली खुशी देख कर आपको बहुत ताज्जुब होता। मेरे जीवन में क्रान्ति क्या आई, मानो जीवन में भूकम्प आया हो, जिसके आगमन के विषय में किसी को भी कुछ पता नहीं होता? मुझे मालूम नहीं था कि विज्ञान के युग में सुन्दर पुरुष झूठे और धोखेबाज हो सकते है। मुझे उससे प्रेम हो गया और उसने भी अपने प्रेम को दर्शाया। वह इतनी सुन्दर बातें करता था कि सुनकर मेरे हृदय में नाचने की और नाचते चले जाने की प्रबल इच्छा होती थी; किन्तु . किन्तु! यह सब एक स्वप्न मात्र था। उसने मुझसे कहा कि मैं बहुत बड़ा आदमी हूँ। उसने प्रेम के आवेश में एक अच्छा कीमती सूट भी भेंट किया, साथ मुझे एक अंगूठी भी बनवा कर दी और उसने अपने वचन के अनुसार शीघ्र ही विवाह करने की इच्छा प्रकट की। मेरे माता-पिता तो थे नहीं; जिनसे मैं आज्ञा लेती। अपनी इच्छा की मालकिन आप थी, इसलिए तैयार भी हो गई। उससे विवाह के लिए, वह साथ चलने के लिए। तब .. तब! मुझसे विवाह करने के लिए वह मुझे लाहौर ले आया और हम दोनों उसी होटल में ठहरे; जहाँ आप भी कुछ दिन रहे हैं। सात आठ दिन तक मुझे उसने हरेक तरह से खुश रखा; किन्तु एक दिन प्रातः उठ कर मैंने क्या देखा कि उसका सामान आदि सब कुछ जा चुका है और उसका कहीं पता नहीं? मैंने खोजने की बहुत कोशिश की; परन्तु उसका कोई ठिकाना भी तो नहीं। मैंने कितनी बड़ी गलती की, आप विश्वास करें, मैं उसका पूरा नाम भी न पूछ सकी। खुदा जाने वह कौन था और कहाँ का रहने वाला था, क्या करता था? मेरी अक्ल

पर जैसे पत्थर पड़ गए थे। नर्सिंग-होम छोड़कर उसके साथ चली आई विवाह रचाने! मैं कितनी खुश थी। विवाह के पश्चात्त घर बनाने और सजाने के लिए मैंने मन ही मन में क्या-क्या नहीं सोचा था, पर अब मैं क्या करूँ? हस्पताल भी वापिस नहीं जा सकती हूँ। नर्सें क्या कहेंगी और सिस्टर मेरा कितना मजाक उड़ायेगी? मैंने खुदकशी करनी चाही; मगर अब मैं खुदकशी करना भीनहीं चाहती। मुझे जीवित रहने की प्रबल इच्छा है। वह मुझ से विवाह न करता, तो मेरे साथ इसी प्रकार रहता, खुदा की कसम मैं खुश थी; किन्तु वह कितना जुल्मी निकला? मैं यह नहीं कहती कि मैंने उस पर कोई उपकार किया है? यह तो मैं उसका उपकार मानती थी कि उसने मुझे एक नए संसार का रास्ता बताया और मुझे खुश करने के उपाय किये; किन्तु वह तो मुझे धोखा दे गया। उसने जुल्म किया। यह जुल्म नहीं तो और क्या है? होटल वाले मुझे सन्देह-भरी दृष्टि से देखते हैं। बैरे मुझे ऐसे देखते हैं, मानो मैं चिड़ियाघर का पक्षी हूँ। मैं अभी तक केवल इसलिए यहाँ ठहरी हूँ कि होटल वाले समझें कि कोई खास बात नहीं हुई; किन्तु ऐसा मालूम होता है कि इनको सब बातों का पता है? क्योंकि एक दिन बूढ़े बैरे ने मुझसे कहा—"मेम साहब! वह आपका साहब अब नहीं आयेंगे, आप चली जायें।"

"मैंने धन्यवाद के जगह पर उसे गालियाँ दीं। क्या करूँ मैं चिड़-चिड़ी हो गई थी? अब मेरे हृदय में शान्ति आ गई है, आपको देख कर मुझे ऐसा लगता है कि जो कुछ हो चुका है उसका विचार मेरे मन से दूर हो जाए, मुझे दोस्त की आवश्यकता है; किन्तु ..किन्तु यह मेरी दूसरी भूल होगी। यदि मैं आपको दोस्त समझूँ, क्या पता है आप मुझे पसन्द करें या न करें? हस्पताल में आप कुछ दिन रहे और आप ने मेरे साथ सदा ही अच्छा बर्ताव किया। इसलिए मैंने समझा कि आप मेरे दोस्त बन सकें। अच्छा, तो अब मैं जाती हूँ?"

यह सुनकर न जाने सैय्यद को क्यों हँसी आ गई, बोला—"कह जाओगी, बैठ जाओ ?"

उसने उसका हाथ पकड़ कर चारपाई पर बैठा लिया। जब वह बैठ गई, तो सैय्यद के शरीर को मानो काठ मार गया हो। उसे मालूम हुआ कि उसने एक नवयुवती की कलाई को पकड़ कर बिठाया है, मानो वह जन्म-जन्मातर से एक दूसरे को जानते हों। कुछ क्षण पहले आँधी और बबूल के समान उठने वाले विचार को, मानो प्रेम-रूपी वर्षा ने शान्त कर दिया हो ? जो कुछ क्षण पहले उठ रहे थे। वह कुछ अधीर सा हो गया। सैय्यद की व्याकुलता का लाभ उठाते हुए फरिया फिर उठ खड़ी हुई और कहने लगी—"मेरा भी संसार में कोई है यह मुझे आज मालूम हुआ है ? आज से कुछ दिन पहले मैं समझती थी कि सारा संसार ही मेरा है। यह संसार फिर कभी मेरा होगा ? इस प्रश्न का उत्तर तो मैं नहीं दे सकती। पर मैं हस्पताल कभी वापिस न जाऊँगी। लाहौर में कुछ दिन बड़े आनन्द से व्यतीत किए। मेरे दुःख के दिन भी यहाँ ही बीतेंगे। मैं यहाँ किसी दुकान पर नौकरी कर लूँगी और और बाकी दिन भी इसी ढंग से बीत जायेंगे।" आहें भरती हुई वह बोली।

यह कह कर फरिया किवाड़ खोलने के लिये बढ़ी; परन्तु सैय्यद पर उसका जादू चल चुका था। इसलिये उसने उसे फिर रोक लिया, बोला—"मिस फरिया ! जो कुछ तुमने कहा, इसका मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा. खुदा के लिये अब चुप हो जाओ। मै सोचता हूँ कि जिस इंसान ने तुम्हें धोखा दिया, वह बहुत ही नीच है। वैसे तुम्हें धोखा देना कोई बड़ी बात नहीं पर तुम इस योग्य नहीं हो कि तुम्हें धोखा दिया जाये, मुझे तुम पर पूरा भरोसा है ? जो कुछ हो चुका, उसे भुला देना ही ठीक है।" फिर एक दम नए ढंग से सैय्यद ने कहना शुरू

कर दिया—"फरिश्ता माफ़ करना ! तुम एक नासमझ इंसान के पास आई हो । तुम समझती हो, मैं औरतों के विषय में भली प्रकार जानता हूँ । खुदा जानता है, तुम सब से पहली लड़की हो, जिसके साथ मैं खुलकर बातें कर रहा हूँ । हस्पताल में तुम से जितनी भी बातें हुई थीं, वह सब दिखावा था । इसी कारण मैं एक ऐसी औरत समझ कर बातें करता था, जिसके साथ बिना जवाब के बातें कर सकता हूँ । तुम हमारी सोसायटी को नहीं जानती, हम लोग सिर्फ अपनी माँ और बहन के इलावा दूसरे किसी को नहीं जानते, हमारे यहां मर्द और औरत के बीच में एक बड़ी भारी दीवार खड़ी है ? अभी-अभी मैंने तुम्हारी कलाई पकड़ कर तुम्हें चारपाई पर बिठाया । जानती हो, मेरे बदन में एक हलचल सी मच गई थी । तुम इस बन्द कमरे में मेरे पास खड़ी हो, जानती हो मेरे ख्याल दिमाग़ में काँटे के समान खटक रहे हैं । मुझे भूख लग रही है, मेरे पेट में हलचल मच रही है । इस रूह और बदन की शक्ल एक समान हो गई है । तुमने अपने प्रेमी की बात कही और मेरे दिल ने ख्वाहिश जाहिर की कि उठ कर तुम्हें दिल से चिपका लूँ और इतना भींचूँ, इतना भींचूँ कि खुद बेहोश हो जाऊँ; किन्तु मैं अपने को वश में रखने का आदी हूँ । इसलिए मैं कितनी की तमन्नाओं को कुचल चुका हूँ, तुम ताज्जुब में क्यों हो ? मैं सच कहता हूँ, औरत के विषय में अब तक मेरी कोई भी तमन्ना पूरी नहीं हुई । तुम सब से पहली हो; जिसे मैंने इतना अपने पास देखा, यही कारण है मैं मैं और पास आना चाहता हूँ; किन्तु किन्तु मैं शरीफ़ आदमी हूँ, मैं तुम से प्यार नहीं करता । पर इसका मतलब, यह नहीं कि मै तुम से नफ़रत करता हूं । यानी मुझे तुम से प्यार नहीं, इसलिए तुम्हारे प्रति खिचाव नहीं, यह बात नहीं है । प्यार प्यार मैं नहीं समझ सका कि यह प्यार कौन सी आफ़त का नाम है ? तुम्हें आश्चर्य होगा, मुझे एक ऐसी औरत से प्यार है, जो प्यार के लायक ही

नहीं। मुझे उससे घृणा है। खुदा कसम! उसके नाम से ही नफरत है; किन्तु मुसीबत यह है कि इस नफरत ने मेरे दिल में उसके प्रति प्यार के अंकुर बो दिये हैं।"

फरिया ने पूछा—"कौन है वह लड़की?"

"कौन है! तुम उसे जान कर क्या करोगी? एक मामूली लड़की है, जो बहुत समय पहले औरत का रूप धारण कर चुकी है। उसका दिल और दिमाग हर किस्म के लुत्फ़ से खाली है। वह हाड़ और माँस की पुतली के समान है, इससे अधिक कुछ भी नहीं। मेरे घर में नौकर है, पहले किसी और की नौकरी करती थी? मैं इसी कारण अमृतसर छोड़ कर चला आया हूं। उसे देख कर मेरे सीने में आग धधक उठती है। मैं चाहता हूँ कि अपने ढंग से प्यार करूं; किन्तु वह . वह मिस फरिया! खुदा के लिये मुझ से न पूछो कि वह प्यार को क्या समझती है? मैं जानता हूं समझता हूँ कि प्यार में सभी बातें ठीक हैं, जो उसके दिमाग में है; किन्तु मैं यह भी तो चाहता हूँ कभी कभी किसी अच्छी बात पर, किसी शायर की लाइन पर, किसी तस्वीर के चित्र को देखते ही तड़प उठे; किन्तु उसकी आँखें इन सभी चीजों के लिये बन्द हैं। मैं दिमाग से सोचता हूं, वह पेट से सोचती है। वास्तव में सारा झगड़ा यह है कि मैं उस से प्यार करता हूँ और उसने प्यार के लिये मेरे दिल के किवाड़ दूसरे प्यार के लिये बन्द करा दिये हैं, मुझे हमदर्दी की जरूरत है।"

यह कह कर सैय्यद, मानो सारा बोझ उतार कर चारपाई पर हाँफता हुआ बैठ गया। मिस फरिया ने इसकी कमर पर यूँ हाथ फेरा, जैसे बच्चे को दिलासा देते हैं। सैय्यद को फरिया की सहानुभूति से आत्मिक सान्त्वना मिली। उसकी माँ प्रायः उसकी कमर पर ऐसे ही हाथ फैरा करती थी; किन्तु फरिया के हाथ में कुछ और ही आनन्द

पाया और इसे ऐसा अनुभव हुआ कि वास्तव में उसकी सहायता करनी चाहिए। संसार की सभी स्त्रियों को चाहिए कि उसकी कमर पर उसी प्रकार प्यार में बंधा हुआ हाथ फेरें और उसे सान्त्वना दें। सहसा कुछ विचार आया और उसने फरिया का दूसरा हाथ जो खाली था, उठाकर अपने हाथ में ले लिया और धन्यवाद के ढंग से उसे दबाना शुरू कर दिया।

फरिया ने अपना हाथ उसके हाथ में रहने दिया और कहा—"यह अजीब बात है कि तुम एक औरत से प्यार करते हो और साथ ही प्यार करना भी नहीं चाहते। वहाँ से भाग आए हो और अब तुम किसी और लड़की से भी प्यार नहीं करना चाहते?"

सैय्यद ने उसका हाथ छोड़ते हुए कहा—"यहाँ तो चाहने या न चाहने का सवाल ही नहीं उठता। किसी भी औरत से प्यार करने के लिए मैं कितने साल जलता रहा, इसका तुम्हें कुछ भी पता नहीं और प्यार के बारे में जो कुछ भी मेरे दिमाग़ में है वह भी तुम नहीं जानती? जिस मुसीबत में मैं फँसा हुआ हूँ, उसका निर्माता भी मैं ही हूँ। उसकी प्रेम शक्ति में किसी बाहरी शक्ति ने नहीं फँसाया? मैं खुद उस जाल में फँसा हूँ और अब खुद ही भाग आया हूँ। असल...असल में मैं यह कहना चाहता था कि जब मेरा दिल एक औरत से भरा हुआ है, तो दूसरी औरत से कैसे प्यार कर सकता हूँ? जो भावुकता उसके प्रति मेरे दिल में पैदा हुई, तुम्हारे लिए या किसी अन्य के लिए नहीं हो सकती? मैं जब उसका विचार अपने दिमाग़ में लाता हूँ, तो खुद को बे-गुनाह और मजबूर पाता हूँ; किन्तु तुम से बात-चीत करते वक्त या तुम्हारे ख्याल दिमाग़ में लाकर अपने को मजबूर नहीं समझता। शायद तुम मेरा इशारा नहीं समझीं।" यह कहकर वह उठ खड़ा हुआ।

फरिया ने मुस्करा कर इसी की ओर देखा, फिर बोली—"दुनिया में कई तरह के आदमी रहते हैं। मैं बहुत कोशिश करती हूं कि उसको जिसने मुझे अभी धोखा दिया है और उन लोगों को भी, जो मुझे पहले धोखा दे चुके हैं, जंगली आदमी समझूं; किन्तु ऐसा करने में मैं हमेशा नाकामियाब रही। मैं उल्टा यह सोचती हूँ, शायद मैंने ही उन पर जुल्म किए हों। क्या पता मुझ से कोई ऐसी गलती हो गई हो, जिसकी वजह से उन्हें दुःख पहुँचा हो? कभी-कभी गुस्से में आकर उनको बुरा-भला कह उठती हूँ और बाद में पश्चात्ताप भी करती हूँ। तुम नर्स की जिन्दगी को तो अच्छी तरह नहीं जानते, हस्पताल में जो भी आता है, रोगी और दुःखी होता है। हर एक रोगी को हमारी सहानुभूति और देखभाल की जरूरत होती है। लोग मुझ से प्रेम-प्यार की बातें करते हैं और मैं समझती हूँ, उन्हें कोई खास बीमारी हैं, जिसकी दवाई मेरे पास है; क्योंकि मैं...मैं...मैं पागल हूँ...और तुम...।"

"मैं ..मैं बहुत बड़ा पागल हूँ।" सैय्यद ने मुस्कराते हुए कहा।

फरिया मुस्कराई और अचानक उसने सैय्यद के अधरों को चूम लिया। कुछ देर के लिए प्यार की वजह से सिट्टी गुम हो गई और वह घबड़ा गया, बोला—"मिस फरिया! यह क्या!" फिर कुछ संभल कर कहा—"ओह! ओह! कुछ नहीं! वास्तव में मैं ऐसी चीजों का ख्वाइशमन्द नहीं हूँ।" कहकर वह उठ खड़ा हुआ। कृत्रिम हँसी हँसकर पुनः कहा—"मैं आपको इस अभिवादन के लिए धन्यवाद दे रहा हूँ।"

यह सुनकर फरिया बहुत खुश हुई, बोली—"धन्यवाद! धन्यवाद! तुम अभी बिल्कुल बच्चे हो। इधर आओ . . . और खुद आगे बढ़कर उसने उसको अपने हाथों में जकड़ते हुए, अधरों पर अधर जमा दिए।

अब सैय्यद कुछ अधिक घबड़ा गया था। उसने कहा—"मिस फरिया ! मिस फरिया !"

फरिया ने हटकर इसकी ओर देखते हुए कहा—"तुम बीमार हो ! तुम्हें एक नर्स की जरूरत है।"

अपनी घबराहट को छुपाते हुए, सैय्यद ने मुस्कराने की कोशिश की और फरिया से कहा—"मुझे सिर्फ एक नर्स ही नहीं; इसके इलावा बहुत सी चीजों की जरूरत है; मगर मुसीबत यह है कि सब चीजें हासिल नहीं होतीं। मैं . . . मैं तुम से पहले भी कह चुका हूँ कि कितनी ही तमन्नाएँ दिल में अपाहिज हो चुकी हैं। मेरे बहुत से ख्याल लँगड़े हो चुके हैं। . . . अब तो यह हालत हो चुकी है कि जिसे मैं खुद भी नहीं समझ सकता कि मैं क्या हूँ और क्यों हूँ ? एक चीज की ख्वाहिश करता हूँ; पर साथ ही यह भी चाहता हूँ कि इस ख्वाहिश को जाहिर न करूँ। इन में मेरा भी और कुछ बैठक (सोसायटी) की भी गलती है। मैं एक बहुत बड़ा आदमी होता, यानी मेरे अन्दर हर एक तरह की बर्दाश्त करने की ताकत होती, तो यह दूसरी बात है; लेकिन अफसोस है कि मैं एक मामूली सा आदमी हूँ; जिसका दिमाग ऊँचे स्थानों पर उड़ान करना चाहता है, यह कितनी बड़ी 'ट्रेजडी' है ?"

फरिया ने उसकी बात सुनी और कुछ देर के बाद बोली—"लेकिन मैंने तो कभी भी अपने आपको मामूली औरत नहीं समझा। शायद है, कि सारी मुसीबतों की यही जड़ हो। मैं हमेशा यही सोचती आई हूँ, कि मैं मामूली औरत नहीं हूँ। मुझ में मुहब्बत करने की ताकत दूसरी औरतों से ज्यादा है; लेकिन आश्चर्य की बात है कि मैं किसी एक आदमी को हमेशा के लिए रखने में कामियाब न हो सकी ? मेरी समझ में नहीं आता कि आदमी औरत से क्या चाहता है ?"

"मेरा ख्याल है कि ऐसी बातों के बारे में ख्याल ही नहीं करना चाहिए। आदमी औरत में क्या चाहता है या औरत आदमी में क्या चाहती है। दोनों मिलकर क्या चाहते हैं? यह चाहने की बात बहुत लम्बी है, जो कभी खत्म न होगी। आओ, कुछ और बातें करें। हाँ यह बताओ! अब तुम क्या करना चाहती हो?"

फरिया जोर से हँसी, फिर अपनी हंसी रोक कर बोली—"भला चाहने के विचार की सीमाओं का भी कहीं अन्त है?"

सैय्यद भी हंस पड़ा। उसने उसकी हंसी में जैसे दाद दी हो। उसने कहा—"फिर भी कहो तो।"

फरिया बोली—"मैं बहुत दुःखी थी; लेकिन इन बातों ने सब दुःख दूर कर दिए हैं। वैसे तो मैं ज्यादा देर तक तड़प भी नहीं सकती; लेकिन जो बातें आपके और मेरे साथ हुई हैं, वे इतनी अच्छी और इतने सुन्दर ढंग से हुई है कि मैं तीन चार दिन से जिस थकान को महसूस कर रही थी, वह अब सारी दूर हो गई है। मैं अब भविष्य के लिए ठंडे दिमाग से सोच सकूँगी।"

"क्या ख्याल है?" सैय्यद ने पूछा

"कोई विशेष ख्याल तो नही? हां, लेकिन अमृतसर वापिस न आऊँगी; क्योंकि मुझे फिर डर रहेगा कि कहीं कोई आदमी कम्पनी-बाग में न आ निकले और मेरी कमजोरियों से फायदा उठा कर चलता बने? मैं अब लाहौर में ही रहना चाहती हूं। आप कब तक यहाँ रहेंगे?"

सैय्यद ने उत्तर दिया—"यह मैं नहीं कह सकता; लेकिन फिर भी ख्याल है, दो-ढ़ाई महीने यहाँ रहूँगा। मैं खुद अमृतसर नहीं जाना चाहता।"

फरिया ने कहा—"तो मैं भी दो-ढ़ाई महीने तक यहाँ रहूँगी और इसके बाद कोटा चली जाऊँगी। वहाँ मेरी एक बहन रहती है। उसके बाद फिर कहाँ जाऊँगी, इसके बारे में सोचना ही बेकार है? मेरे पास दो सौ रुपये थे, जिनमें से होटल आदि का किराया दे-दिला कर अब पूरे सौ बाकी हैं। इनसे क्या दो महीने गुज़ारा नहीं हो सकेगा?"

"हो जायेगा, लेकिन उस हालत में जब तुम फ़िज़ूल खर्च न करो। मेरे पास सिर्फ दो सौ रुपये हैं और मैंने इन रुपयों से यहाँ ज्यादा से ज्यादा वक्त काटना है। जब अमृसर से चला था, तब माँ ने ढ़ाई सौ रुपए दिए थे। मेरा विचार है कि ये ढाई सौ रुपए मुझे देकर और हस्पताल की फीस देकर उनके पास केवल डेड़ हजार बाकी बचा होगा, जो हमारी कुल पूँजी है।"

८

***

सैय्यद ने बिल्कुल ठीक कहा, उसलिए कि इसकी माँ के पास मुश्किल से डेढ़ हज़ार के लगभग बचा था। बाप दस हज़ार रुपये छोड़ कर मरा था; जिनमें से कुछ उसने फिज़ूल खर्चियों में नष्ट कर दिये और कुछ इधर-उधर खर्च कर दिये। हालाँकि सैय्यद ने इन रुपयों का उपयोग शारीरिक ऐय्याशी पर नहीं किया; अपितु उसको बचपन में निराले ही शौक़ थे। माँ से बहाने बनाकर या खुद सन्दूक से रुपया निकाल कर उसने चोरी-चोरी यानी बाहर ही बाहर कई साइकिलें खरीद लीं और आनन्द की बात तो यह थी कि वह खुद साइकिल चलाना भी नहीं जानता था। उन साइकिलों को उसके दोस्त चलाते और वह खुश होता। इस प्रकार उसने घर से बहुत रुपया चोरी करके एक छोटी सिनेमा की मशीन खरीदी थी, जिसका मूल्य साढ़े तीन सौ के लगभग था, जिसे वह कभी भी नहीं चला सका।

इसलिए कि उसके दोस्त के घर बिजली नहीं थी, जहाँ उसने उसको छिपा कर रखा था। दो बार भाग कर बम्बई गया और साथ अपने दोस्तों को भी ले गया। वहाँ भी कोई ऐय्याशी नहीं की; किन्तु फिर भी सारा रुपया खा खिला कर हाथ झाड़ते हुए वापस आ गये।

सैय्यद का बाप सदा ही उससे नाराज़ रहता था। वह बहुत ही तेज़ स्वभाव का व्यक्ति था, उसको अपने लड़के की बातों पर बड़ा क्रोध आता और उसको कठिन से कठिन दंड भी देता; किन्तु वह अपने जीवन में उसको न सुधार सका। सैय्यद की माँ उसके पिता से बिल्कुल विपरीत थी, यानी बहुत ही शान्त स्वभाव की थी। उसे अपने बच्चे से इतना प्यार था कि यदि किसी से उसकी बात की जाये तो एक अच्छा खासा नॉवल बनाया जा सकता है। सैय्यद के लिये उसने बहुत दुःख उठाए, अनेक बातें सहीं और उसकी प्रत्येक इच्छा को पूरा किया। वह लोगों से कहती थी—"मेरा बेटा फिज़ूल खर्च है, उसको आगे पीछे का रत्ती भर भी ख्याल नहीं। भले ही वह जिद्दी है; किन्तु दिल उसका बुरा नहीं। तुम देख लेना, एक दिन सब गरीबी धो डालेगा।"

अब भी उसका यही विचार था कि उसका फिज़ूल-खर्च बेटा एक दिन अवश्य ही बड़ा आदमी बनेगा और सब ताज्जुब में पड़ जायेंगे। माँ के हृदय में ऐसी बातों का उठना भी स्वाभाविक ही था; क्योंकि प्रत्येक माँ अपनी सन्तान के विषय में ऐसा सोचती ही है। इसके साथ ही सैय्यद की माँ पर्ले दर्जे की खुश और खुदा पर भरोसा रखने वाली औरत थी, इसलिए वह कभी निराश नहीं होती थी। उसको खुदा के घर से उम्मीद थी कि उसका बेटा एक दिन अवश्य ही सुधर जायेगा। उसके सभी दुःख दूर हो जायेंगे। वह सदा ही सैय्यद के लिये दुआ माँगती रहती थी; क्योंकि उसका कहना था कि आदमी खुद बुराइयाँ

नहीं छोड सकता और सिर्फ खुदा की मेहरबानी से ही बुराइयाँ दूर हो सकती हैं। अत: सैय्यद ने उसने इसीलिए कभी बहस न की।

इधर उसका बेटा सैय्यद खुदा के नाम से अनभिज्ञ था। यह अनभिज्ञता जाहिर नहीं थी; क्योंकि सब कामों में उसे अपना ही हाथ दीख पड़ता था। वह एक तेज-धारा में बहता हुआ जा रहा था, एक ज़माने से उसके विचार अनेक रूपों में निकल-निकल कर इधर-उधर बिखर रहे थे।

उसका जीवन, एक ऐसी कहानी के समान था, जो किसी भी सफे पर न लिखा गया हो, जिस प्रकार कहानी का प्लाट बनाते समय लेखक के विचारों को तनाव आ जाता है और बड़ी घटनाओं और छोटी घटनाओं का ढ़ेर सा लग जाता है। ठीक इसी प्रकार सैय्यद का जीवन भी घटनाओं से भरा हुआ था।

वह एक ऐसे मार्ग पर चल रहा, जो न कभी खत्म हो सके। बड़ी तेजी के साथ, जो कुछ पीछे छोड़ दिया, उसकी चिन्ता नहीं करता था और न ही आगे आने वाले की चिन्ता करता था। वह भूत और भविष्य के बीच में वर्तमान की पगडंडी पर खेल रहा था। ऐसा खेल, जिसे समझने की चेष्टा करते हुए भी न समझ सका।

बाप की मार और माँ का प्यार (दुआ) उस पर न चढ़ सका। वह अपने जीवन को समझने के लिए, ऐसे रास्ते पर चलता रहा, जो कभी भी आसान या कठिन बन सकता था।

उसका बाप, इसके कामों को देख कर खेद करता हुआ मर गया। बाप की मृत्यु ने, उस पर काफी असर डाला, वह कई घंटे तक बाप के मृतक शरीर पर रोया; किन्तु उसका दिमाग शोक के आँसुओं के

आगे भी देखना चाहता था। आगे बहुत आगे, औरतों की चीखों और रोने-धोने के भयंकर आवाज़ों के बीच में, उसका मन ऐसी आवाज़ की खोज कर रहा था, जिसको सुनकर उसकी आत्मा को शान्ति मिले। उसके नेत्र रोएँ, उसका सारा शरीर रोया। बाप की मृत्यु का उसे बहुत ही दुःख था; किन्तु रोते-रोते उसे ख्याल आया कि मैं रो रहा हूँ। यह लोग जो आस-पास बैठे हैं, क्या मन में तो विचार नहीं करते कि ये सब ढोंग है। इस विचार ने मानो सैय्यद को किसी दूसरे संसार में फेंक दिया हो? उसके अश्रु शुष्क हो गये और देर तक वह अपने मृतक बाप के मुख की ओर देखता रहा, जिस पर उसके भ्रष्टाचार पर क्रोध और घृणा के मिले-जुले भाव प्रकट कर रहा था...!

बाप को जब क़ब्र में छोड़, अपने दोस्तों और सम्बन्धियों के साथ वापस आया था। रात के अकेले में उसे महसूस करके आश्चर्य हुआ कि वह बहुत हल्का हो गया है, मानो उसके शरीर पर मनों बोझा लदा हुआ हो। उसका अर्थ समझने की कोशिश की; किन्तु असमर्थ रहा।

बाप की मृत्यु के पश्चात्त, एक दिन उसने बहुत से विचारों को हृदय में इकट्ठा किया और फैसला किया कि अब वह नया रास्ता ढूँढेगा और चलेगा और अपने पुराने रास्ते पर भी डटा रहेगा; किन्तु ये नया रास्ता दो या तीन मोड़ों के पश्चात्त ही, पुराने रास्ते पर ले आया। जिस पर वह बहुत देर से चला आ रहा था। जब इस विषय में कुछ विचार आया, तो सोचा कि जिन्दगी खुद रास्ता बनाती है। रास्ते जिन्दगी नहीं बनाते, इसी कारण अधिक सोच-विचार के बिना ही चलता रहा और चलते-चलते उसकी राजो से मुठ-भेड़ हो गई। उस से छुट्टी पाने के हेतु लाहौर भाग आया, तो यहाँ मिस फरिया से भेंट हो गई। उसे ऐसा महसूस होने लगा कि इस लड़की के कारण

उसे अपनी यात्रा कुछ दिनों के लिए स्थगित करनी पड़ेगी।

मिस फरिया से प्यार करने का विचार फिजूल है; क्योंकि इसे उस दृष्टिकोण से देखना ही नहीं है। फरिया सुन्दर थी, इसमें वे सभी बातें थीं, जो मर्दों की तमन्ना पूरी कर सकती है। इसके अलावा वह एक ऐसे स्वभाव की मालिक थी, जो सैय्यद के दिमाग़ में बिल्कुल फिट बैठता हो। खुदा ने इन दोनों को एक दूसरे के समीप कर दिया। सैय्यद के दिल में यह इच्छा हो रही थी कि फरिया को छूकर देखे, इसको समझे, इसके जीवन की सीमा देखने का विचार उसके दिमाग़ में ही नहीं उठा था। वहाँ रहते-रहते जब दो दिन गुजर गये तो तीसरे दिन उसने साहस करके अपने हृदय की बात गोल-मटोल ढंग से कहते हुए कहा—"देखो, मिस फरिया ! देखो . !" किन्तु इससे अधिक वह कुछ न कह सका ..।

सैय्यद की इस अधूरी अभिव्यक्ति पर फरिया ने कहा—"कुछ कहते-कहते क्यों रुक जाते हो, कहो क्या कहना चाहते हो ? कहो, जो कुछ चाहते हो, कहो।"

"मैं नहीं कह सकता। अल्फाज़ मेरी ज़बान पर आते हैं और फिर न जाने क्यों वापस चले जाते हैं ? यह मेरी कमज़ोरी कभी दूर न होगी। मैं कुछ नहीं कहना चाहता।"

"यह और भी बुरा है। तुम कुछ कहना चाहते हो और कुछ कहना भी नहीं चाहते और और की यह क्या बीमारी है ?"

"मैं तुम से कई बार कह चुका हूँ कि मेरा लालन-पालन ऐसे वातावरण में हुआ, जहाँ आज़ादी का नाम लेना और आज़ादी विचार को बड़ा भारी कसूर माना जाता था। जहाँ सच्ची बात कहने वाला असभ्य और झूठी बात कहने वाले को सभ्य माना जाता है।"

"इसमें मेरा क्या कसूर है। मैं...मैं ! तुम से अधिक क्या कहूं ? तुम सुन्दर हो, तुम्हारी बातें भी मुझे अच्छी लगती हैं। मैं भी बुरा नहीं, लेकिन फिर लेकिन फिर ..और तुम्हारा वह प्यार। तुम्हारे प्यार भरे अधर मेरे अधरों पर अभी तक चल रहे हैं। क्या वह सदा चलते रहेंगे ?"

फरिया ने आश्चर्य-जनक दृष्टि से देखा और कहा—"एक और प्यार तुम्हारे अधरों पर चलाऊँ। दो हो जायेंगे, तो अच्छा रहेगा।"

यह सुन कर सैय्यद ने थोड़ी देर सोचा और कहा - "मिस फरिया, मैं तुम से एक बात पूछूं ..?"

"बड़े शौक से, एक की जगह दो पूछो, तीन पूछो; बल्कि जब तक जी चाहे, पूछते जाओ।"

"मैं पूछता हूँ, क्या तुम से प्रेम करना जरूरी है ? यानी बिना प्रेम के दोस्ती नहीं हो सकती।"

"तुम्हारा यह प्रेम अनोखे ढंग का है। प्यार के बिना दोस्ती कैसे हो सकती है और दोस्ती के बिना प्यार भी तो नहीं किया जा सकता ? तुम व्यर्थ की उलझनों में यों ही फंस रहे हो।" यह कहते-कहते उसके कपोल लाल हो गए। वह तेज स्वर में बोली—"मैंने तो कभी इस प्रकार की बातों पर कभी विचार ही नहीं किया और ऐसी बातों पर विचार ही कौन करता है ? सोच-विचार के लिये और थोड़ी बातें हैं।"

"फरिया, मैं एक नए संसार की सीमा पर खड़ा हूँ। जाने से पहले मैं बहुत कुछ सोचना चाहता हूँ; किन्तु यह अजीब उलझन है कि सोच ही नहीं सकता; किन्तु मुझे विचार जरूर ही करना है, इसके बिना काम न चलेगा ..?"

फरिया के कपोल और भी लाल हो गये। बोली—"तुम बिल्कुल बच्चे हो, इसके बिना ही अच्छी तरह निर्वाह हो सकेगा। तुम... तुम...तुम आखिर क्या चाहते हो तुम ?"

फरिया के इस सवाल ने सैय्यद को परेशान सा कर दिया।

"मैं...मैं...क्या चाहता ..मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे पास रहो।"

यह कह कर सैय्यद को ऐसा महसूस हुआ, मानो इसका हृदय खाली हो गया हो, जैसे मोटर के टायर से हवा निकल गई हो। वह घबड़ाया सा उठा और तेजी से कमरे के बाहर निकल गया। फरिया बैठी रही। उसका विचार था कि वह शीघ्र ही आजायेगा, किन्तु जब दस पन्द्रह मिनट व्यतीत हो गए, तो उसने उठकर बाहर बालकोनी में देखा, तो वहाँ कोई भी नहीं था ? जब नीचे बाज़ार की ओर देखा, वहाँ भी सैय्यद नहीं था। फरिया को बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसे अकेली छोड़ कर न मालूम कहाँ भाग गया ? इसलिए वापस कमरे में आकर वह सैय्यद की प्रतीक्षा करने लगी।...

दिन भर वह उसके इन्तजार में बैठी जाने क्या सोचती रही जब शाम होने को आई तो सैय्यद वापिस आया और कमरे में जाने लगा; पर कमरा अन्दर से बन्द था। उसने धीरे से दस्तक दी। थोड़ी देर के पश्चात्त दरवाजा खुला और ज्यों ही उसने कमरे में प्रवेश किया, तो फरिया ने तुरन्त ही दरवाजा बन्द कर दिया और कहा—"तुम्हें शर्म नहीं आती ! इतनी देर के बाद घर वापस आए हो। . लेकिन छोड़ो; इन बातों को। बताओ क्या खाओगे और कहाँ खाओगे ? मुझे बड़ी भूख लग रही है।"

वह उत्तर में फरिया से कुछ कहने ही वाला था कि उस की दृष्टि चारपाई पर गई। बिस्तर बिछा हुआ था, सिरहाने के समीप उसका

नोवल पड़ा था, वह अभी तक उसने आधे के लग-भग ही पढ़ा था। उसके चारों जूते बड़े अच्छे ढंग से रखे हुए थे। चमड़े के सूटकेस एक ओर रख दिए थे। सामने खिड़की की सिल पर टाईमपीस टक्-टक् कर के अपनी ओर बुला रही थी। इधर उधर जो गुसलखाना है उसका दरवाजा खुला है और उसने देखा स्टैण्ड पर तौलिया लटक रहा है। उसको ऐसा अनुभव हुआ कि वे बहुत दिनों से इस कमरे में रहा है और फरिया को बहुत देर से जानता पहचानता है यह सब कुछ देखकर उसकी प्रसन्नता की सीमा न रही। प्रसन्नचित्त सैय्यद ने कहा,—"फरिया !...कई एक बात की कमी रह गई है। इधर जंगले में तुम्हारे धुले हुए बनियान लटकने चाहिएँ और साथ वाला कमरा खाली पड़ा है, इसमें तुम्हारा सिंगार-मेज़ होना चाहिए और उस पर पाउडर और क्रीमों के डिब्बे बिखरने चाहिए और ..और। ..यदि एक झूलना भी आजाये, तो क्या ही अच्छा हो ? वाह अल्लाह पूरा परिवार ही इकट्ठा हो जाये और मैं...मैं ..लेकिन मैं जरूरत से ज्यादा तो नहीं कह गया।"

फरिया ने आगे बढ़ कर अपनी बाहें इसके गले में डाल दीं। बोली—"तुम फिजूल की बातों को दिमाग में स्थान न दिया करो। साथ वाला कमरा कल ही ले लेना चाहिए। सिंगार-मेज़ भी रहे, किन्तु यह झूलने की बात ठीक नहीं है। मैं इतनी जल्दी औरत बनने की इच्छा नहीं रखती। बिचार है कि तुम पति बनने योग्य भी नहीं हो। अच्छा बताओ खाना खाने के विषय में तुम्हारा क्या बिचार है ? मैं कहती हूँ कि-वहीं होटल में अन्तिम भोज उड़ाया जाए और किराया आदि चुका कर मैं अपना सारा सामान यहाँ ले आऊँ।"

यह सुनकर सैय्यद कुछ घबड़ाया। फरिया की बाहें उसने अपने

गले से हटाकर कह—"लेकिन ! लेकिन इस कमरे में दो व्यक्तियों के लिए स्थान ही कहाँ है ?"

"हटाओ जी !" फरिया ने अपने हैंडबेग को खोलकर कपोलों पर पाउडर लगाते हुए कहा—"देखा जायेगा। इस कमरे में तो आधी दर्जन बीमार समा सकते हैं और हम तो सिर्फ दो ही हैं। असल में तुम बिल्कुल बुद्धू हो। तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं कि घर-बार कैसे चलाया जाता है ? चलो ! अब बाहर चलें ?"

६

***

सैय्यद अब बहुत ही खुश था। फरिया के साथ रहते हुए, आज पूरे दस दिन हो गए थे उसे। साथ वाला कमरा भी उन्होंने किराये पर ले लिया था। सिंगार-मेज भी आ गई थी और इधर दूसरे कमरे में एक छोटी तिपाई और तीन कुर्सियाँ भी लाकर रख दी गई थीं। जिन्दगी बड़ी ही खुशी से गुजरने लगी।

फरिया भी खुश थी। उसे इतना अच्छा दोस्त मिल गया था, जिसका दिल धोखेबाज़ी से हमेशा ही खाली रहता है। सैय्यद खुश था। उसे औरत मिल गई। जिन्दगी में पहली बार उसे ऐसी औरत मिली थी; जिसे वह छू भी सकता था और जिससे वह बेधड़क बातें कर सकता था। उसे कई तरह का तजुर्बा था, और उसे खुश रखने के बहुत से तरीके आते थे।

फरिया खुश-दिल थी। सुन्दरता की देवी थी और सबसे बढ़कर उसमें यह खूबी थी कि उसका शारीरिक प्यार ही अनोखे ढंग का था। मानो ऐसा प्यार जो सर्दियों में दहकते हुए कोयलों के अन्दर से दिखाई देता है। पूरे दस दिन एक साथ रहते हुए उन्हें बीत गए थे; लेकिन दोनों महसूस करते थे कि दोनों हमेशा ही से इकट्ठे रहे हैं। फरिया अपनी जिन्दगी के बारे में फिक्र नहीं करना चाहती थी। सैय्यद के दिमाग में ये ख्याल कभी-कभी भिनभिनाती मक्खी की तरह दाखिल होता था कि अगर मेरे किसी दोस्त या रिश्तेदार ने मुझे इस तरह देख लिया, तो क्या होगा और इस ख्याल के आते ही इसका दिमाग चक्कर खाने लगता और एक अजीब तमन्ना उसके मन में उठती थी कि सारी दुनिया रुक जाए? वह खुद खामोश हो जाए और सब लोग पत्थरों की तरह बन जायें।

वह सोचता, आखिर यह क्या है? मैं जैसे भी चाहूँ अपनी जिन्दगी गुजारूँ। लोगों को इससे क्या मतलब? मैं अगर शराब पीता हूँ, तो दूसरों के बाबा का क्या बिगड़ता है, अगर मैं किसी औरत को अपने साथ रखना चाहता हूँ, तो इसमें दूसरों से इजाजत लेने का मतलब ही क्या है? क्या मुझे अपने अच्छे या बुरे का कुछ भी ख्याल नहीं?

लेकिन वे फिर उसके मस्तिष्क में इस तरह के उठने वाले सवालों पर यह ख्याल करना ही फिजूल समझता है। इसलिए कि वे समाज की खराबियों को दूर करने की बराबरी ही नहीं कर सकता था। वह एक छोटा सा आदमी था; जिसकी आवाज अकेले में भी नहीं उभर सकती थी।

फिर भी वह खुश था। बहुत खुश था; लेकिन इस खुशी के साथ-साथ यह ख्याल भी एक पहली लकीर की तरह उसके दिमाग में दौड़ रहा था कि एक दिन जरूर ही वह पकड़ा जायेगा और उसे एक दिन

दोस्तों और रिश्तेदारों के सामने लज्जित होना पड़ेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि उसे खुद ही लज्जित होना पड़ेगा। अपने ख्यालों के उल्ट में वह बिलकुल मजबूर होगा। वह सब बातें, जो सैय्यद के दिमाग में थी और वे क्रान्तिकारी ख्याल उसके दिल में जमा थे, वहीं के वहीं रखे रह जाएँगे और उसका सिर झुक जायेगा। उसको लज्जित होना पड़ेगा, बिना किसी बात के?

यों ही सोच विचार करते हुए दिन निकलते गए, पर एक दिन अचानक फरिया और सैय्यद दोनों शाम का शो चारली-चपलिन का फिल्म माडर्न-टाइमज देखने के लिए गए। जब खेल देखकर सिनेमा-हाल से बाहर निकले, तो एक आदमी ने तीखी निगाह से इन्हें देखा। फरिया ने उससे कहा—"यह आदमी तुम्हें बड़े ध्यान से देख रहा है। तुम्हारा दोस्त तो नहीं।"

सैय्यद ने उस आदमी की ओर देखा और मानो जमीन उसके पैर से निकल गई हो। यह उसका दूर का रिश्तेदार था, जो लाहौर में ही रहता था और किसी कालेज में अध्ययन करता था? उसने सिर के इशारे से ही सलाम का उत्तर दिया और फरिया को बिना साथ लिए भीड़ में घुस गया, जो बड़े फाटक पर लगी थी।

बाहर निकल कर जो पहला ताँगा मिला, सैय्यद उसी में बैठ गया, इतने में फरिया भी आ गई। जल्दी से उसको ताँगे में बिठाकर, घर की तरफ, ताँगे वाले से चलने के लिए कहा। रास्ते में कोई बात नहीं हुई; लेकिन जैसे ही दोनों ताँगे से उतरकर कमरे में आए, तो फरिया ने पूछा—"तुम्हें एकदम क्या हो गया है? वह आदमी कौन था, जिसके डर से तुम मुझे छोड़कर भाग गए?"

टोपी उतार कर सैय्यद ने चारपाई पर फेंक दी और कहा—"मैं

उसका नाम तो नहीं जानता; लेकिन वह मेरा दूर का रिश्तेदार है। अब बात फैलती-फैलती कहाँ से कहाँ तक फैल जायेगी, नहीं कह सकता ?"

फरिया जोर से हँसी। फिर उसने अपनी हँसी रोक कर कहा—"बस इतनी सी बात को नोवल बना डाला सरकार ने। अजी हटाओ, कौनसी बात कहाँ तक फैलेगी ? तुम बहुत वहमी हो। चलो, आओ, इधर मैं तुम्हारे गले पर मालिश कर दूँ।"

"क्यों ?" सैय्यद अधीर होकर बोला।

'इधर-उधर की बातें शुरू कर दोगे, तो मुझे वह भूल जायेगा। तुम्हारा कल से गला खराब है, बस अब मैं कुछ न सुनूँगी। इस कुर्सी पर बैठ जाओ, ठहरो, कोट मैं उतारे देती हूँ।"

कोट और टाई उतार कर फरिया ने सैय्यद के गले पर तेल की मालिश करनी शुरू कर दी और इसमें वह कुछ देर के लिए उस आदमी वाली घटना को भूल गया।

जब फरिया को उसके भाव के बारे में यह जान पड़ा कि अब वह पहले से कुछ ठीक है, तो मालिश करते-करते वह बोली—"अरे, डिनर खाना तो हम भूल ही गये। तुम अफरा-तफरी में यहाँ भाग आए और सारा प्रोग्राम बिगड़ गया। हमारा ख्याल यह था कि सिनेमा देखकर हम 'अस्टफल' में खाना खायेंगे और इस तरह रविवार का दिन आनन्द-मय दिन के रूप में व्यतीत करेंगे। अब क्या ख्याल है ? मेरा ख्याल क्या पूछती हो ? चलो; लेकिन मुझे तो भूख नहीं है और फिर मेरा गला भी तो ठीक नहीं है।"

"तो ऐसा करो, भाग कर नीचे से डबल-रोटी ले आओ। थोड़ा सा मक्खन और पनीर यहाँ पड़ा है, जाम भी है। दो टोस तुम और

बाकी मैं खा लूंगी, यह विचार भी बुरा नहीं। अस्टफल में खाना अगले इतवार को सही।"

सैय्यद डबल-रोटी ले आया। मिस फरिया ने चुटकियों में ही डिनर तैयार कर के तिपाई पर रख दिया, फिर दोनों खाने में व्यस्त हो गए।

एक टोस मक्खन लगाकर फरिया ने उसको दिया और कहा—"यदि इसी तरह खुशी में दिन कटने जायें तो कितना अच्छा हो ? मैं जिन्दगी में और कुछ भी नहीं माँगती, सिर्फ ऐसे दिन, जिस तरह इस टोस को मक्खन लगा है, माँगती हूँ।"

सैय्यद अपनी होने वाली बदनामी के बारे में सोच रहा था। फरिया के चिकने-चिकने गालों को देखा और उसके दिल के एक कोने में ख्याल उठा कि वह उठ कर चूम ले। सैय्यद अभी कुछ भी फैसला न कर पाया था कि फरिया मुस्कराती हुई उठी और अपने मोटे-मोटे त्रमित अधर सैय्यद के अधरों पर गिरा दिए।

एक क्षण के लिए सैय्यद को ऐसा तजुर्बा हुआ कि फरिया के अधरों ने झकझोर कर उसकी आत्मा को आजाद कर दिया हो, यानी उसने जोर से फरिया के कठोर हृदय को अपनी छाती के साथ भींच लिया।

सैय्यद पागलों के समान फरिया के सांवले कपोल और मोटे अधरों और ताज्जुब में फड़फड़ाती हुई काली आँखों को चूमने लगी। फरिया को सैय्यद की यह आदत पसन्द आई और उसने अपने आपको उसकी गोद में डाल लिया।

सहसा सैय्यद को फरिया के प्यार का पता चला और जिस तरह

थर्मामीटर को बर्फ दिखाने से उसका पारा नीचे गिर जाता है, इसी प्रकार सैय्यद की सारी गर्मी उसके डरपोक हृदय में सिमट आई और वह माथे का ठंडा पसीना पोंछता हुआ, जाने क्या सोच कर उठ खड़ा हुआ ?

जाने क्यों ? फरिया के उभरे हुए मन को बड़ी भारी चोट लगी। उसने भरी हुई आवाज में कहा—"क्या बात है सैय्यद ?"

"कुछ नहीं।" यह कह कर सैय्यद की गर्दन झुक गई, उसकी बात में कमजोरी थी।

"मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ।"

यह सुनकर फरिया के प्रेम में रंगे हुए अधर खुले, 'डार्लिंग' कह कर, वह उठी और अपनी दोनों बाहें उसके गले में डाल कर बोली—"पागल मत बनो।"

सैय्यद ने उसी हालत में उत्तर दिया—"मैं खुद नहीं बनता, पागल या बेवकूफ़! जो कुछ भी हूँ, मेरा इसमें कोई कसूर नहीं है। यह कह कर उसने फरिया की बाहें धीरे से हटाईं। उसकी आवाज में कुछ और भी दुःख मिल गया था। मुझ में और तुम में बहुत अन्तर है। तुम आजाद वातावरण की उपज हो; पर तुम अंग्रेज नहीं हो। तुम्हारा रंग शासन करने वालों से नहीं मिलता; किन्तु तुम फिर भी महसूस करती हो कि तुम्हारा पद हम भारतीयों से ऊँचा है; किन्तु छोड़ो, इसको। तुम मुझे डार्लिंग कह सकती हो; किन्तु अकेले में भी मेरी जबान तुम्हें डार्लिंग कहने में संकोच करेगी। तुम जानती हो कि तुम्हारा काम क्या है; किन्तु मुझे मेरा काम कुछ और ही बताया गया है। तुम्हारे ख्याल आजाद हैं; किन्तु मेरे ख्याल गन्दे पानी में फँसे

हुए हैं। तुम पूरी हो; किन्तु मुझे अधूरा ही समय ने छोड़ दिया—ऐसी जगह पर छोड़ दिया कि मेरे ख्याल कभी भी पूरे न हों।"

फरिया जिसके कानों में अभी तक उसकी हरारत भिनभिना रही थी। सैय्यद की समझने वाली बातों का अर्थ वह न समझ सकी, वह बोली—"जाने तुम क्या कह रहे हो ?"

सैय्यद पलंग पर बैठ गया। जेब से सिग्रेट निकाल उसने फरिया की ओर देखा, जिसके उत्सर्गमय प्यार की सीमा से वह अभी-अभी निकला था। इस विचार से कि अपनी और फरिया की कुशल भावनाओं को उसने बड़े ही गन्दे ढंग मे अधूरा छोड़ दिया था। सैय्यद को मानो ठेस लगी, यानी उसने फरिया से कहा—'तुम मेरी उलझी बातें न समझ सकोगी। इसलिए कि तुम्हारे जीवन के तार सीधे हैं; किन्तु यहाँ मेरे दिमाग़ में उलझन के सिवाय और कुछ है ही नहीं। मैंने एक बार पहले कहा था कि मैं तुम्हारे लायक नहीं, एक बार फिर कहता हूँ, फरिया ! मैं तुम्हारे लायक नहीं।"

फरिया ने चिढ़ कर पूछा—"क्यो ?"

"बताता हूँ; किन्तु तुम पहले मुझ से यह पूछो, सैय्यद ! क्या तुम अपनी औरत बनाकर मुझे घर ले जा सकते हो ?"

फरिया ने बड़ी लापरवाही से कहा—"लेकिन मैंने कब कहा है कि मुझसे शादी कर लो।"

सैय्यद ने सिग्रेट जलाया और सोच कर कहा—"तुमने मुझसे कहा नहीं, मगर मैंने हृदय में कई बार इस सवाल को झगड़ते हुए देखा और मुझे चोट खानी पड़ी कि सैय्यद तुम में इतनी क्षमता नहीं; जब मेरे सवालों का यह जवाब मिला तो फिर तुम ही बताओ कि मैं तुम्हारे लायक हूँ ?"

फरिया भावुकता के आवेश मे चीख उठी और बोली—"क्या हम शादी के बिना एक दूसरे से प्यार नही कर सकते ?"

यह सुन कर सैय्यद के दिल में सिकुड़ी हुई भावना थोड़ी सी फैल गई, लेकिन वह फरिया के पास से उठ खड़ा हुआ—"नहीं।"

"क्यों ?" फरिया ने पूछा।

"इसलिये कि मैं यहाँ चोरों के समान रहता हूँ, आज की ही घटना को ले लो। सिनेमा के बाहर एक सम्बन्धी को देख कर, जिसका नाम मैं खुद भी नहीं जानता। मेरे होश उड़ गए थे और मैंने तुम्हें अपनी निगाहों से दूर कर दिया था, मानो हम दोनों एक दूसरे को बिल्कुल ही नहीं जानते। ऐसे निकम्मे आदमी के साथ जीवन निर्वाह कैसे कट सकता है, जो अभी-अभी औरत के उत्सर्ग जैसे प्यार को ठुकरा कर एक ओर हट गया हो ?"

फरिया मुस्कराती हुई पलँग से उठी और फिर एक बार अपनी बाहें सैय्यद के गले में डाल दी—"तुम बड़े ही अच्छे हो, सैय्यद ! केवल मैं ही प्यार करना नहीं जानती।"

फरिया की सादगी ने सैय्यद की तड़पती आत्मा को एक और झटका दिया। उसने धीरे से फरिया के बिखरे हुए बालों को ठीक करते हुए कहा—"नहीं ! यह मेरा कसूर है और मैं इसकी सजा बड़ी देर से भुगत रहा हूँ, तुम से दूर हुआ तो यह सजा और भी सख्त हो जायेगी।"

फरिया चिल्ला उठी—"तुम मुझे छोड़ कर जा रहे हो ?"

सैय्यद ने जवाब में सिर्फ यही कहा—"मुझे अपने आपसे यही आशा है।"

फरिया बच्चों के समान बिलख-बिलख कर रोने लगी। सैय्यद कुछ क्षण चुप रहा; लेकिन इस थोड़े से समय में इसकी सिमटी हुई भावनायें उसके शरीर में फैल गई थी। उसने लाल-लाल आँखों से फरिया की ओर देखा और आगे बढ़ कर अपने जलते हुए अधर उसके अधरों मे लगा दिये।

खाली बोतल भरा दिल

एक अनोखी घटना घटी है। मंटो मर गया है, यों तो वह एक अरसे से मर रहा था। कभी सुना, कि वह पागल खाने में है, कभी सुना, कि वह ज्यादा शराब पीने मे हस्पताल में पड़ा है, कभी सुना, कि उसके यार दोस्तों ने भी उसका साथ छोड़ दिया है, कभी सुना, कि वह और उसके बीवी बच्चे फाकाकशी कर रहे हैं। बहुत सी बातें सुनीं, हमेशा बुरी बातें सुनीं; लेकिन विश्वास नहीं आया; क्योंकि इस समय भी उसकी कहानियाँ बराबर छपती रहीं; अच्छी कहानियाँ भी और बुरी कहानियाँ भी; जिन्हे पढ़कर मंटो का मुँह नोंचने को जी चाहता था, ऐसी कहानियाँ भी, जिन्हें पढ़कर उसका मुँह चूमने को जी चाहता था, ऐसी कहानियाँ भी, यह कहानियाँ मन्टो के खैरियत मे होने का सबूत थीं। मैं समझता था उसकी कहानियाँ छप रही हैं। मन्टो खुश है। क्या हुआ अगर वह शराब पी रहा है? क्या शराब पीना केवल बड़े लेखकों तक ही सीमित है? क्या हुआ अगर वह फाके कर रहा

है ? इस छोटे महाद्वीप की तीन चौथाई आबादी ने हमेशा ही फाके किये हैं। क्या हुआ अगर वह पागलखाने चला गया ? इस पागल और मजनू समाज में मन्टो जैसे होशबन्द का पागलखाने जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं, आश्चर्य तो इस बात का है, कि वह आज से बहुत पहले पागलखाने क्यों नहीं गया ? मुझे इन सब बातों से न तो कोई हैरत हुई, न कोई आश्चर्य ही हुआ। मन्टो कहानियाँ लिख रहा है—मन्टो कुशल है—ईश्वर उसकी कलम में और जहर भर दे।

मगर आज जब रेडियो पाकिस्तान ने यह खबर सुनाई, कि मन्टो धड़कन बन्द हो जाने से चल बसा तो, दिल और दिमाग़ चलते-चलते एक क्षण के लिए रुक गये। दूसरे क्षण यह विश्वास ही नहीं हुआ। दिल और दिमाग़ ने इसे नहीं माना, कि ऐसा हो सकता है—एक क्षण के लिए मन्टो का चेहरा मेरी निगाहों में घूम गया। उसका देदीप्यमान चौड़ा ललाट और बात-बात में उसकी तीखी मुस्कराहट और शोले की तरह भड़कता हुआ उसका दिल—कभी बुझ सकता है ? दूसरे क्षणों विश्वास करना पड़ा। रेडियो और पत्रकारों ने मिल कर इस बात की पुष्टि कर दी, कि मन्टो मर गया है। आज के बाद वह कोई नई कहानियाँ नहीं लिखेगा। आज के बाद उसकी कुशलता का कोई खत नहीं आयेगा !

आज सर्दी बहुत है और आसमान पर हल्के-हल्के बादल छाये हुए हैं मगर इस वातावरण में वर्षा की एक बूंद भी नहीं है। मेरी आँख में आँसू का एक कतरा भी नहीं है। मन्टो को रुलाने से अत्यन्त घृणा थी। आज मैं उसकी याद में आँसू बहाकर उसे परेशान नहीं करूंगा। आहिस्ते से मैं अपना कोट पहन लेता हूँ और घर से बाहर निकल जाता हूं।

अद्‌भुत संयोग है, जिस दिन मन्टो से मेरी पहली मुलाकात हुई,

उस दिन मैं दिल्ली में था। जिस दिन वह मरा है, उस दिन भी दिल्ली में उपस्थित हूँ। उसी घर में हूँ जिस में आज से चौदह साल पहले वह मेरे साथ पन्द्रह दिन रहा था। घर के बाहर वही बिजली का खंभा है, जिसके नीचे पहली बार हम गले मिले थे। यह वही अन्डर हिल रोड है, जहाँ आल इंडिया रेडियो का पुराना दफ्तर था, जहाँ हम दोनों काम किया करते थे। यह मेडन होटल का बार है। यह मोरी गेट के प्रधान का घर है। यह जामा मस्जिद की सीढ़ियाँ हैं; जिस पर हम कबाब खाया करते थे। यह उर्दू बाजार है। सब कुछ वही है, उसी तरह से है। सब जगह उसी तरह से काम हो रहा है। आल इंडिया रेडियो भी खुला है, मेडन होटल का बार भी और उर्दू बाजार भी; क्योंकि मन्टो एक बहुत मामूली आदमी था। वह एक गरीब कहानीकार था। वह कोई मंत्री नहीं था, जो उसकी शान में झंडे झुका दिये जाते। वह कोई सट्टेबाज और ब्लेक मार्केटर भी नहीं था, जो कोई बाजार उसके लिए बन्द होते ? वह कोई अभिनेता भी न था, जिसके लिए स्कूल और कालेज बन्द हो जाते। वह एक गरीब सताई हुई भाषा का, गरीब और सताया हुआ लेखक था। वह मोचियों, वैश्याओं और तांगे वालों का प्यारा लेखक था। ऐसे लेखक के लिए कौन रोयेगा ? कौन अपना काम बन्द करेगा ? इसीलिए आल इंडिया रेडियो खुला है; जिसने सैंकड़ों बार उसकी कहानियों के ध्वनि नाट्य ब्राडकास्ट किये हैं। उर्दू बाजार भी खुला है, जिसने उसकी हजारो किताबें बेची हैं और आज भी बेच रहे हैं। आज मैं उन लोगों को भी कहकहा लगाकर हँसते देख रहा हूँ; जिन्होंने मन्टो से हजारों रुपये की शराब पी है। मन्टो मर गया तो क्या हुआ ? व्यापार-व्यापार है ? एक क्षण के लिए भी काम नहीं रुकना चाहिये, जिसने हमें सारी जिन्दगी दे दी, उसे हम अपना एक क्षण भी नहीं दे सकते। सिर झुका के एक क्षण के लिए उसकी याद को हम अपने दिलों में ताजा नहीं कर सकते। धन्यवाद के साथ,

खुशामद के साथ, हमदर्दी के साथ उसकी तड़पती हुई आत्मा के लिए जिसने हत्तक, नया कानून, खोल दो, टोबाटेक सिंह ऐसी दर्जनों बेमिसाल और अमर कहानियाँ लिखी हैं। जिसने समाज की निचली तहों में घुसकर पिसे हुए, कुचले हुए समाज की ठोकरों से बिगड़े हुए चरित्रों को उठाकर इज्जत दी है। जो वास्तविकता और कलात्मकता के लिये गोर्की के *Lower Deptths* के चरित्रों की याद दिलाते हैं। अन्तर केवल इतना ही है, कि उन लोगों ने गोर्की के लिए अजायबघर बनाये, मूर्त्तियाँ बनाईं, शहर बनाये और हमने मन्टो पर मुकदमें चलाये, उसे भूखा मारा, उसे पागलखाने पहुँचाया, उसे हस्पतालों में सड़ाया और आखिर में उसे यहाँ तक मजबूर कर दिया, कि वह किसी इंसान को नहीं, शराब की बोतल को अपना दोस्त समझने को मजबूर हो जाए।

यह कोई नई बात नहीं है। हमने ग़ालिब के साथ यही किया था। प्रेमचन्द के साथ यही किया था, हसरत के साथ यही किया था। मन्टो के साथ भी यही व्यवहार करेंगे, क्योंकि मन्टो कोई इनसे बड़ा विद्वान् तो नहीं था, जिसके लिए हम अपनी पाँच हजार वर्ष की संस्कृति को तोड़ दें। हम इन्सानों के नहीं मकबरों के पुजारी हैं। दिल्ली में मिर्जा ग़ालिब की फिल्म चल रही है। इस फिल्म की कहानी इसी दिल्ली के मोरी-गेट में बैठकर मन्टो ने लिखी थी। एक दिन हम मन्टो की तस्वीर भी बनायेंगे और इससे लाखों रुपये कमायेंगे, जिस तरह आज हम मन्टो की किताबों के कई-कई नकली एडीशन हिन्दुस्तान में छाप-छाप कर हजारों रुपये कमा रहे हैं। वह रुपये जिस की मन्टो को अपनी जिन्दगी में अत्यन्त आवश्यकता थी। वह रुपये आज भी, जो उसकी बीवी और बच्चों को मुसीबत जिल्लत से बचा सकते हैं। मगर हम ऐसी गलती नहीं करेंगे। अगर हम अकाल के दिनों में चावल की दर बढ़ाकर इन्सानों के खून से अपना मुनाफा बढ़ा सकते हैं, तो क्या इस मुनाफे

के लिए गरीब लेखक की जेब नहीं कतर सकते। मन्टो ने जब 'जेबकतरा' लिखा था, उस वक्त उसे मालूम नहीं था, कि एक दिन जेब कतरों की पूरी की पूरी जमात से उसका वास्ता पड़ेगा।

मन्टो एक बहुत बड़ी गाली था। इसका कोई दोस्त ऐसा नहीं जिसे इसने कोई गाली न दी हो ? कोई उसका ऐसा प्रकाशक भी नहीं जिससे इसने लड़ाई मोल न ली हो। कोई मालिक ऐसा नहीं जिस की इसने बेइज्जती न की हो ? प्रकाशित तौर पर वह तरक्कीपसन्दों से खुश नहीं था, न गैर तरक्की पसन्दों से, न पाकिस्तान से, न हिन्दुस्तान से, न अंकलशाम से, न रूस से—जाने इसकी तड़पती हुई बेचैन आत्मा क्या चाहती थी ? इसकी जबान बेहद कड़वी थी—कहने का तरीका नुकीला और पैने तीर की तरह तेज और बेरहम, लेकिन आप इसकी गाली को, इसकी कड़वी बोल-चाल को, इसके तेज नुकीले काँटेदार शब्दों को जरा सा खुरच कर तो देखिये। अन्दर से जिन्दगी का मीठा-मीठा रस टपकने लगेगा। इसकी घृणा में प्यार था। नंगेपन पर आवरण वह इस तरह डाल देता था, कि अस्मतफरोशी करने वाली वैश्याओं के आंचल भी लज्जा की लाली से भर, चमक उठते थे—जो उसके साहित्य की पवित्रता के द्योतक हैं। मन्टो से जिन्दगी ने इन्साफ नहीं किया; लेकिन इतिहास अवश्य उससे न्याय करेगा।

'मन्टो बयालीस की उम्र में मर गया। अभी इसके कुछ कहने और सुनने के दिन थे। अभी जिन्दगी के कडुवे अनुभवों ने, वर्तमान समाज की निर्दयता ने, मुसीबतभरी जिन्दगी के क्षणों में, इसके हताश व्यक्तित्व के क्रोध और नातरफदारी को कम करके उससे 'टोबाटेक सिंह' ऐसी कहानी लिखवाई थी। दुःख मन्टो की मौत का नहीं है—मौत आने वाली है, मेरे लिए भी और तुम्हारे लिये भी—पर दुःख तो इस बात का है, कि वह साहित्य को और जो हीरे पन्ने जवाहारात देता, वह अब

उसे नहीं मिलेंगे, जो सिर्फ मन्टो ही दे सकता था उर्दू साहित्य में अच्छे-अच्छे कहानीकार पैदा हुए; लेकिन मन्टो दुबारा पैदा नहीं होगा और कोई उसकी जगह लेने नहीं आयेगा। यह बात मैं भी जानता हूँ और राजेन्द्रसिंह बेदी भी, अस्मत चुगताई भी, ख्वाजा अहमद अब्बास भी और उपेन्द्रनाथ अश्क भी। हम सब लोग उसके चाहनेवाले, उससे झगड़ा करने वाले, उसे प्यार करने वाले, उससे घृणा करने वाले, उससे मोहब्बत करने वाले साथी और हमसफर थे और आज जब वह हम में नहीं है। हम में से हर एक ने उसकी मौत के जनाजे को अपने कंधे पर महसूस किया है। आज हम में से हर एक की जिन्दगी का एक हिस्सा मर गया है। ऐसे समय में जो फिर कभी वापस न आ सकेगा। आज हम में से हर व्यक्ति मन्टो के करीब है और हैं एक दूसरे के निकटतर। ऐसे समय में अगर हम यह निर्णय करलें, कि हम मन्टो की जुम्मेदारियों को मिलकर पूरा करेंगे, तो उसकी आत्महत्या बेकार न होगी।

आज से चौदह साल पहले मैंने और मन्टो ने मिलकर एक कहानी लिखी थी "बनजारा"। मन्टो ने आज तक किसी दूसरे लेखक के साथ मिलकर कोई कहानी नहीं लिखी, न उससे पहले न उसके बाद। वे दिन तेज सर्दियों के थे। मेरा सूट बेकार हो लिपटा पड़ा था और मन्टो का सूट भी लिपटा हुआ था। मन्टो मेरे पास आया और बोला ऐ, कृशन! "नया सूट चाहता है?"

मैंने कहा—'हाँ'

'तो चल मेरे साथ'—

'कहाँ?'

'बस ज्यादा बकवास न कर, चल मेरे साथ'—

हम लोग एक फिल्मवितरक के यहाँ गये। मैं वहाँ अगर कुछ कहता तो सत्य ही बकवास होती, इसलिये मैं खामोश ही रहा। फिल्म

वितरक, फिल्म प्रौडक्शन के मैदान में आना चाहता था। मन्टो ने पन्द्रह-बीस-बीस मिनट की बातचीत में उसे कहानी बेच दी और उससे पाँच सौ रुपये नकदी ले लिये। बाहर आकर उसने ढाई सौ मुझे दिये और ढाई सौ स्वयं रख लिये—फिर हम लोगों ने अपने-अपने सूट के लिए बढ़िया कपड़ा खरीदा और अब्दुलगनी टेलर मास्टर की दूकान पर गये और उसे सूट जल्दी सी कर देने के लिए हिदायत दी। फिर सूट तैयार हो गये। पहन भी लिये गये। मगर सूट का कपड़ा दर्जी को देने और सिलाने के बीच, जो समय आया उसमें हम बाकी रुपये घोल कर पी गये। इसलिये अब्दुलगनी का उधार रहा फिर भी उसने हमें सूट पहिनने के लिए दे दिये। मगर कई माह तक हम लोग उसका उधार न चुका सके।

एक दिन मन्टो और मैं कश्मीरीगेट से गुजर रहे थे, कि मास्टर अब्दुलगनी ने हमें पकड़ लिया। मैंने सोचा आज साफ-साफ बेइज्जती होगी। मास्टर अब्दुलगनी ने मन्टो को गिरहबान से पकड़ कर कहा—'वह 'हत्तक' तुमने लिखी है ?'

मन्टो ने कहा—'लिखी है तो क्या हुआ ? अगर तुम से सूट उधार लिया है तो उसका यह मतलब नहीं है, कि तुम मेरी कहानी के अच्छे समालोचक भी हो सकते हो। यह गिरहबान छोड़ो'। अब्दुलगनी के चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कराहट आई। उसने मन्टो का गिरहबान छोड़ दिया और उसकी तरफ़ अजीब सी नजरों से देखकर कहने लगा, 'जा तेरे उधार के पैसे माफ किये।'

वह पलटकर चला गया। कुछ क्षणों के लिए मन्टो बिल्कुल खामोश खड़ा रहा। वह उस तारीफ से बिल्कुल खुश नहीं हुआ। बहुत दुःखी और गुस्से से भरा नजर आने लगा। साला क्या समझता है—मुझे परेशान करता है—मैं उसकी पाई-पाई चुका दूंगा। साला समझता है

हत्तक' मेरी अच्छी कहानी है। हत्तक—हत्तक तो मेरी सबसे अच्छी कहानी है।

लेकिन न मैंने, न मन्टो ने अब्दुलगनी को पैसे दिये। न उसने हमसे लिये। आज मुझे जब यह घटना याद आई, मैं उसी वक्त अब्दुलगनी की दूकान खोजता कश्मीरी गेट पहुँचा। मगर अब्दुलगनी कई वर्ष हुए वहाँ से पाकिस्तान चला गया था। काश आज अब्दुलगनी टेलर-मास्टर मिल जाता। उससे मन्टो के बारे में दो बातें कर लेता और किसी को तो इस बड़े शहर में इस व्यर्थ काम के लिए फुरसत ही नहीं है।

शाम के वक्त मै जो० ऐ० अन्सारी 'संपादक' 'शाहरा' के साथ जामा मज्जिद से तीस हजारी अपने घर को आ रहा था। रास्ते में हम दोनों आहिस्ते-आहिस्ते मन्टी के व्यक्तित्व और उसकी कला पर बहस करते रहे। सड़क पर गड्डे बहुत थे इसलिए बहस में बहुत से नाजुक मुकाम भी आये। एक बार पंजाबी कोचवान ने चौंककर पूछा—'क्या कहा जी मन्टो मर गया,?

अन्सारी ने आहिस्ते से कहा—हाँ भाई! और फिर अपनी बहस शुरू कर दी।

कोचवान धीमे-धीमे अपना तांगा चलता रहा लेकिन, मोरीगेट के पास उसने तांगे को रोक लिया और हमारी तरफ घूमकर बोला—'साहब आप लोग कोई दूसरा तांगा कर लीजिये। मैं आगे नहीं जाऊँगा।, उसकी आवाज में एक अजीब सा दर्द था। पहले इसके, कि हम कुछ कहें—वह हमारी तरफ देखे बिना ही अपने तांगे से उतरा और सीधा सामने की बार में चला गया।

कृष्ण चन्दर